स्वर्ण जयंती विशेषांक

रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन

राम सन्देश

परम संत डा० श्री कृष्णलाल जी महाराज

एक राम दशरथ घर डोले , एक राम घट घट में बोले ।

एक राम का सकल पसारा , एक राम तिरगुन से न्यारा ॥

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

ईश्वर का शुक्रिया

प्रभु की देन का शुक्रिया ये है कि उसका सही इस्तेमाल किया जाये और वो ये है कि उन कर्मों का त्याग कर दें जिनसे परमात्मा की देन या कृपा में गिरावट आती हो और ऐसे कर्म करते रहें जो उसे प्यारे हों ।

- दादागुरु महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

एक प्रेम का ही नाता

एक प्रेम के नाते को छोड़कर मैं और किसी नाते को नहीं जानता - केवल प्रेम और वह भी बेगरज़ (निस्वार्थ) प्रेम. जो लोग बिना स्वार्थ के मुझे प्रेम करते हैं - चाहे वो सज्जन हों या दुष्ट, मैं उन्हें प्रेम करता हूँ. वे मेरे हैं और मैं उनका. वे सदैव मुझ पर भरोसा रख सकते हैं ।

- गुरुदेव डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

दीनता तो अपनानी ही होगी

अहंकार से प्रभु नहीं मिलते. चाहे आप कोई सा भी साधन करें - दीनता को तो अपनाना ही होगा. जिसके भीतर में सच्ची दीनता होती है वह स्वयं भी मग्न रहता है, और दूसरों को भी आनंदित करता है. प्रभु दीनों में वास करते हैं, उन्हें दीनता बहुत प्यारी है.

- डॉ. करतार सिंह, अध्यक्ष आचार्य

****

समर्थ गुरु भगवान को नमन

सर्व शक्तिमते परमात्मने गुरुदेवाय नमः !
सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः !
सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री कृष्णाय नमः !
सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री करताराय नमः !!

राम ॐ सन्देश

भक्ति ज्ञान व् कर्म योग की अध्यात्मिक पत्रिका

संस्थापक

ब्रह्मलीन परम संत श्री कृष्णलाल जी महाराज

संरक्षक

डा० करतार सिंह, अध्यक्ष आचार्य

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

वर्ष 50 स्वर्ण जयंती विशेषांक जनवरी-फरवरी 2004 अंक 1

क्रमांक — विषय सूचि

1. राम सन्देश की ब्स्वर्ण जयंती ..... सम्पादकीय निवेदन
2. बधाई, शुभकामना एवं आभार ..... **अध्यक्ष आचार्य** जी
3. वसंत भंडारे का विशेष सन्देश ..... ,,
4. संतों की अमर वाणियाँ ..... प्रसिद्ध संत सूफी कवि
5. चार महान विभूतियों के सन्देश ..... राम कृष्ण परमहंस आदि
6. नूतन वर्ष की शुभकामना ..... सतीश वर्मा
7. युगदृष्टाओं का उद्बोधन ..... गणतन्त्र दिवस पर
8. संतमत और संतों का तरीका ..... गुरुदेव डा० श्री कृष्णलाल जी

9.	संतमत के प्रति भ्रम निवारण	गुरुदेव डा० श्री कृष्णलाल जी
10.	दादागुरु महात्मा रामचन्द्र जी महाराज	डा० हरनारायण सक्सेना
11.	हमारे गुरुदेव डा० श्री कृष्णलाल जी.....	डा० करतार सिंह
12.	गुरुदेव के समकालीन और परिवारी	.जय नारायण गौतम
13.	चच्चा जी : महात्मा रघुवर दयाल जी	.प्रकाश चन्द्र वर्मा
14.	चच्चा जी : महाराज के सदुपदेश	श्री के० बी० सक्सेना
15.	महात्मा श्री कृष्ण स्वरुप जी	पू० गुरुदेव (प्रस्तावना से)
16.	पू० डा० अक्षय कुमार बैनर्जी	.डा० महेश चन्द्र, श्री राम सागर लाल
17.	वसंत ऋतु के स्वागत में	श्रीमती वीणा सक्सेना
18.	इस्लाम का मुख्य त्यौहार : ईद	डा० रमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ
19.	रामाश्रम सत्संग : संक्षिप्त परिचय	.डा० दिनेश कुमार श्रीवास्तव
20.	हमारी प्रणाली : प्रवेश दीक्षा व् इजाजतें	श्री कैलाश ना० जौहरी
21.	फतेहगढ़ भंडारे की बरकत	श्री श्रीनिवास लाल
22.	जन्मशती भंडारे का संस्मरण	श्रीमती उर्मिला सक्सेना
23.	हमारे प्रकाशन.....	श्री ब्रजमोहन शर्मा

०००००००००००००००००

सम्पादकीय निवेदन

राम सन्देश की स्वर्ण जयंती

भगवान की दया एवं पूज्य गुरु महाराज की प्रेरणा सहित श्रद्धेय सरदार जी भाई साहब के वरदहस्त के संरक्षण में आख़िर वह बहुप्रतीक्षित घडी आ ही गयी जब कि पूज्य गुरुदेव महात्मा श्रीकृष्ण लाल जी महाराज द्वारा संस्थापित पत्रिका 'राम सन्देश' की स्वर्ण-जयंती का प्रथम विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

हमारा यह परम सौभाग्य रहा है कि आज से एक दशक पूर्व सन 1994 में पूज्य गुरु महाराज का जन्मशती समारोह बड़ी शान और भव्यता से मनाया गया. उस आनन्दोल्लासपूर्ण ऐतिहासिक समारोह की पुनरावृत्ति इस अंक में भी की जा रही है ।

पूज्य गुरुदेव की एक लाड़ली पुत्री समान इस पत्रिका को आज एक अनुभवी, सद्गुणी, शालीन 50 वर्षीय प्रौढ़ा के रूप में आत्मिक-आध्यात्मिक मार्गदर्शन कराती और सम्मान पाती देखकर बहुत प्रसन्नता होती है ।

इसके सार्थक माध्यम द्वारा हमारे रामाश्रम सत्संग के पूज्य संत बुज़ुर्गान के जीवन दर्शन, उनकी ऐतिहसिक परम्परा, प्रबुद्व चिंतन, सिद्धांत और व्यावाहरिक शिक्षा से साधकों की व्यक्तिगत और आध्यात्मिक उन्नति के वचनोपदेशों का सार प्रस्तुत करने का अकिंचन प्रयास - इस अंक की सामग्री है ।

राम सन्देश के इस स्वर्ण जयंती वर्ष में योजना यही बनी है कि पत्रिका में पूर्व प्रकाशित अनेक दुर्लभ अमूल्य लेख, प्रवचन, संस्मरण, प्रसंग और दिशाबोधक पत्रों को नए-पुराने पाठकों के लाभार्थ पुनः उपलब्ध कराया जा सके ।

इसी लक्ष्य के अनुरूप इस प्रथम विशेषांक में संतमत की व्याख्या, रामाश्रम सत्संग का परिचय तथा पूज्य गुरुदेव के कृतित्व और व्यक्तित्व के साथ उनके परमपूज्य सद्गुरु लालाजी महाराज एवं कुछ अन्य गुरुजनों की जीवनी तथा शिक्षा आदि का भी संक्षिप्त वर्णन है. साथ ही

साथ अपने सत्संग की कार्यप्रणाली तथा प्रमुख कार्यकर्ताओं व प्रकाशित साहित्य भंडार का उल्लेख आदि भी है.

इसके प्रस्तुतिकरण में जिन भाई-बहनों ने बड़े श्रमपूर्वक मनोयोग से विविध प्रकार से कोई भी सेवा या सहयोग दिया है उनके प्रति अत्यंत आभारी मन से धन्यवाद समर्पित है.

पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकम्पा

और पूज्य भाई साहब की कृपालु छत्रछाया

हेतु उनके श्री चरणों में सादर श्रद्धापूर्ण नमन !

*** सेवक : सतीश वर्मा ***

अध्यक्ष -आचार्य महोदय का

बधाई सन्देश

* नववर्ष सन 2004 के स्वागत में ! *

आप सभी को यह नववर्ष अति शुभ व मंगलमय हो। पूज्य गुरु महाराज जी के चरणों में प्रार्थना है कि वे आप सबको महान गुण प्रदान करें कि आप अपने पूर्वजों के जीवन का अनुसरण कर सकें. आपके जीवन के हर क्षेत्र में नई स्फूर्ति के साथ प्रगति हो, आपकी शांति और आनन्द बढ़ते रहें - **यही मेरी शुभकामना है.**

* 54-वे गणतंत्र दिवस का अभिनंदन *

देश की प्रगति- विकास और कई क्षेत्रों में मिली सफलता और विविध उपलब्धियो से विश्व भर में हमारी सराहना हुई है। सम्मान बढ़ा है. हम भी देश के प्रति अपने कर्तव्य पूर्ण करते हुए किसी न किसी रूप में अपना योगदान देते रहेंगे **- यही आशा है**।

* बसंत भंडारे पर गुरुजनों को नमन *

हमारे दादागुरु परमपूज्य लालाजी महाराज की वसंत पंचमी पर जन्म जयंती के उपलक्ष्यमें आयोजित भण्डारे में उनकी दुर्लभ कृपा-प्रसादी से सभी निष्ठावान नए -पुराने भाई-बहन लाभान्वित हों और मालामाल हों, **यही मेरी प्रार्थना है**।

* राम सन्देश की स्वर्णजयंती पर बधाई ! *

बड़ी प्रसन्नता और संतोष की बात है कि परमपूज्य गुरुदेव द्वारा संस्थापित पत्रिका के द्वारा देश-विदेश के अवतार-औलियाओं, संत-महात्माओं की अमृत सदवाणी और आदर्श जीवन की प्रेरक सामग्री विगत 50 वर्षों से प्रस्तुत कराई जाती रही है. गुरुदेव की वरदान रूपी यह अमृतधारा सतत प्रवाहित होती रहे, **यही मेरी अभिलाषा है.**

* .... और, हमारा आभार भी स्वीकार करें ! *

नए साल में आपके सुन्दर कार्डों, संदेशों, टेलीफोन और पत्रों द्वारा हमारे दीर्घ स्वस्थ जीवन की शुभकामनाओं और संदेशों तथा प्रार्थनाओं के प्रति हम अत्यंत आभारी हैं. गुरुदेव से यही प्रार्थना है कि आप उनके सद्गुणों को अपनायें तथा उनकी सुगन्ध को चारों ओर फैलायें, अपना जीवन

धन्य करें. **यही हार्दिक सदभावना है.**

**** करतार सिंह ****

राम सन्देश : स्वर्णजयंती विशेषांक - जनवरी-फ़रवरी, 2004.

वसंत भण्डारे पर आचार्य जी (ब्रह्मलीन परमसन्त डॉ. करतार सिंह जी) का विशेष सन्देश

पूज्य श्री लालाजी साहिब ने अपने एक पत्र (अमृत रस, पृष्ठ 22) में भण्डारे के विषय में लिखा है कि,***" सालाना भण्डारे की हक़ीक़त एक मुज़ाहिरा है जिसमें लोग एक दूसरे से ख्यालात (विचारों का) का तबादला करते हैं और आइन्दा तरक़्क़ी का ज़रिया सोच लेते हैं."***

आर्थिक तथा कुछ अन्य कठिनाईयों के कारण सत्संगी भाई-बहिन बहुधा भण्डारे के अवसर पर पहुँच नहीं पाते और सत्संग के लाभ से वंचित हो जाते हैं. इसलिए आने वाले भण्डारे के अवसर पर पहुँचने और उससे पूरा लाभ उठाने का पहले से ही प्रयत्न करना चाहिए.

प्रत्येक व्यक्ति के अन्तस् में कई प्रकार की दुविधायें होती हैं जिन्हें वह दूर करना चाहता है. वर्ष भर इन्हीं दुविधाओं के कारण चिन्तित रहता है. भण्डारे में सम्मिलित होने के लिए वह घर से यह सोचकर प्रस्थान करता है कि वहाँ जाकर वह अपनी सभी दुविधाओं को (पूज्य गुरुदेव के सम्मुख) प्रस्तुत करेगा. किन्तु समयाभाव के कारण वह ऐसा नहीं कर पाता है. इसके अतिरिक्त वह अपनी कमियों तथा त्रुटियों को बताने में संकोच करता है. दुविधा वैसी की वैसी पड़ी रह जाती है जिसके कारण इस अवसर का पूरा लाभ जो होना चाहिए नहीं होता है.

श्री गुरुदेव प्रायः यह कहा करते थे कि जिज्ञासुओं ने जिन बुराइयों से मुक्त होने के लिए श्री पूज्य लाला जी साहब से प्रार्थना की, वे समय पाकर छूट गयीं किन्तु जिन बुराइयों को उनके सम्मुख प्रस्तुत नहीं किया गया, वे अन्त समय तक जैसी की तैसी बनी रहीं.

कहने का भाव यह है कि जिन भाई-बहनों को कुछ पूछना हो वह भण्डारे से पहले उसे लिख दें. ऐसा करने से समागम के अवसर पर समय कम लगेगा और लाभ अधिक होगा.

पूज्य गुरुदेव ने अपने पंच भौतिक नश्वर शरीर का त्याग करने से कुछ दिन पूर्व सेवक को कई बार कहा कि हम लोगों का आचरण दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है. यह उनके दुःख का कारण बना रहता था. उनका हुक्म था कि निम्नलिखित बातों का सख़्ती से पालन करना चाहिए :

1. प्रत्येक सत्संगी को चाहिए कि वह पर-स्त्री का संग न करे. बहनों के लिए भी यह उचित है कि अन्य पुरुष के साथ बात चीत उस समय करें जब उसका पति साथ हो.
2. भोजन शाकाहारी एवं शुद्ध होना चाहिए. माँस एवं मदिरा का सेवन करने वाले सत्संगियों को इन बुरी आदतों का तुरन्त त्याग कर देना चाहिए.
3. अनुचित ढंग से यानी घूंस द्वारा रुपया नहीं कमाना चाहिए, इत्यादि.

गुरु महाराज फ़रमाया करते थे कि प्रत्येक साधक को अपना निरीक्षण करके यह देखना चाहिए कि मुझ अपने में क्या कमी या त्रुटियाँ है. एक-एक करके उनसे मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए. तीर्थ स्थानों में जाकर लोग कुछ वस्तुओं

का त्याग कर देते हैं. गुरु महाराज इसे उत्तम बताया करते थे. **इसी प्रकार प्रति वर्ष जब साधक भण्डारे में आयें तो अपनी एक कमी को दूर करें. पहले साधारण बुराइयों को छोड़ने का प्रयास करें, परन्तु पूरी दृढ़ता के साथ.**

सेवक का सभी भाई-बहनों से करबद्ध अनुरोध है कि भण्डारे के दिनों में ईश्वर-चिन्तन के अतिरिक्त सभी बातों से दूर रहें. जहाँ तक हो सके मौन रहें. कम से कम बात करें. यदि बात करें तो भगवत-चर्चा एवं आध्यात्म सम्बन्धी. राजनीतिक बातों को तीन चार दिन के लिए बिलकुल भूल जाएँ. किसी प्रकार की चंचलता समीप न आने पाये तथा परिवार से जितना अलग रह सकें, रहें.

प्रसाद लेते समय शोर न करें. जो महोदय प्रसाद वितरित करें वे गुरुदेव में लय होकर ऐसा करें. प्रसाद लेते एवं सेवन करते समय गुरुदेव के दिव्य रूप की स्मृति करें. जो भाई बहन ऐसा नहीं करते उन्हें प्रसाद के महत्व का सम्भवतः ज्ञान नहीं है. इसी कारण उनको उचित लाभ नहीं होता. यदि विश्वास और श्रद्धा हो तो इस प्रसाद को यथा योग्य विधि से सेवन करने से सभी प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक रोगों से निवृति प्राप्त हो सकती है.

प्रत्येक सत्संगी को भण्डारे के काम में उत्साहपूर्वक भाग लेना तथा सहयोग देना चाहिए.

गुरुदेव आप सबका कल्याण करें.

- डॉ. करतार सिंह

==========

राज़ी - ब - रज़ा

संतोष वही कर सकता है जिसके भीतर में सहनशीलता है, ज्ञान है. संतोष का मतलब प्रायः यह लिया जाता है कि जो कुछ भगवान ने दिया है, उसी में संतुष्ट रहें. कैसी भी स्थिति आ जाय, हम विचलित न हों.

राज़ी-ब-रज़ा का यही अर्थ है.

==========

संतों की अमरवाणियाँ

महात्मा कबीर

तोरी गठरी में लगे चोर, बटोहिया का सौवे ?

पाँच पचीस तीन हैं चुरवा, यह सब कीन्हा सोर !

जागु सवेरा बाट अनेरा, फिर नहिं लगे जोर !!

भवसागर इक नदी गहन है, बिन उतरे जाहु बोर !

कहे कबीर सुनो भई साधो, जागत कीजे भोर !!

गुरुनानक देव

हरि हरी जपहु पिउरिया गुरमति ले हरि बोल !

मन सच करवटी लाईये तुलिये तुलिये पूरै तोल !!

कीमत किनै न पाइये रिद माणक मोल अमोल !

भाई रे हरि हीरा गुरु माहिं !!

संतसंगत सतगुरु पाईए अहि निसि सबद सलाह !

सच वखरु धन रासि लै पाईयें गुर परगास !!

जिउ अगन मैं जल पाईए, तिउ त्रिसना दासनिदास !

जन जंदारु न लगई, मउजल तेरे तरास !!

गुरु मुख कूड़ न भावई सच रत्ते सच भाई !

सांकत सच न भावई कूड़े कुड़ी पाँई !!

सच रत्ते गुर मेलियें, सचे सच समाई !

मनमहि माणक लाल नामरतन पदारथ हीर !!

सच वखर धन नाम है, घट-घट गाहिर गंभीर !

'नानक' गुरुमुख पाईऐ, गुरु दया करे हरि हीर !!

संत दादू दयाल के पद

तू सांचा साहिब मेरा !

करम करीम कृपाल निहारौ, मैं जन बंदा तेरा !

तुम दीवान सबहिन की जानों, दीनानाथ दयाला !!

दें दीदारमौज बंदे कूँ, काइम करौ निहाला !

मालिक सबै मुलिक के साई, समरथ सिरजनहारा !!

खैर खुदाई खलकमें खेलत दे दीदार तुम्हारा !

मैं दरगाह सिकस्ता तेरी, हरि हज़ूर तूँ कहिये !

'दादू' द्वारे दीन पुकारै, काहे न दरसन लहिये !!

पलटू दास

यही समय गुरु पाँव में गोता लीजै खाय

गोता लोजै खाय नाम के सरवर माँही,

अवधि आय नगिचान दाँव फिर ऐसा नाहीं !

मानस तन संकरान्त महोदधि जात सिरानी,

ऐसी परवी पाय नहीं तुम महिमा जानो !

सतसंगत के घाट पैठ के करि असनाना,

तन मन दीजै दान बहुरि नहिं औना जाना !

'पलटू' विलम न कीजिये ऐसा औसर पाय,

यही समय गुरु पाँव में गोता लीजै खाय !

संत चरणदास

पीले प्याला, होजा मतवाला

प्याला प्रेम हरी रस का रे !

पाप पुण्य तू भोगन आया,

कौन तेरा है, तू किसका रे,

जो दम है बन्दे हरि भजले,

जीवन है सपना निशि का रे !

बालापन हँस खेल गँवायो,

तरुण भयो नारी फँसता रहे !

वृद्ध भयो कफ़ बाय ने घेरा,

खाट पड़ा नहिं कुछ बसका रे,

बिन सतगुरु ऐसे दुःख पावे,

जैसे मृग भटके बन का रे,

लख चौरासी उबरा चाहे,

छोड़े नारी का चसका रे,

चरनदास सुखदेव कहते हैं

क्यों नखसिख में जहर भरा रे.

मलूक दास

तेरा मैं दीदार दीवाना

घडी घडी तुझे देखा चाहूँ, सुन साहिब रहमाना !

हुआ अलमस्त खबर नहिं तन की, पीया प्रेम पियाला,

ठाढ़ होऊं तो गिर-गिर परता, तेरे रंग मतवाला !

खड़ा रहूँ दरबार तुम्हारे, ज्यों घर का बन्दाजादा !

नेकी की कुलाह सिर दिए गले पैरहन साजा !

तोजी और निमाज न जानू, न जानू धरि रोज़ा,

बांग जिकर तबही से बिसरी जबसे यह दिल खोजा !

कह 'मलूक' अब कजान करिहो दिल ही सो दिल लाया,

मक्का, हज्ज हियेमें देखा, पूरा मुरसिद पाया.

दरिया साहब

बाबुल कैसन बिसरो जाई ?

यदि मैं पति संग रल खेलूंगी, पापा धरम समाई !

सतगुरु मेरे किरपा कीनी, उत्तम बर परणाई,

अब मेरे साई को सरम पड़ैगी लेगा ह्रदय लगाई!

थे जनराय, मैं भोली-बाली, थे निमरल मैं मैली,

थे बतलाओ, मैं बोल न जानूँ, भेद न सकूँ पहेली !

थे ब्रह्मभाव, मैं आतप कन्या, समझ न जानूँ बानी,

'दरिया' कहैं पति पूरा पाया यह निश्चयी कर जानी !

तुलसी साहब

दिल का हुज़रा साफ़ कर, जाना के आने के लिए,

ध्यान गैरों से हटा, उसके बुलाने के लिए !

चश्मे-दिल से देख याँ जो जो तमाशे हो रहे,

दिलसतां ! क्या क्या ही तेरे दिल सताने के लिए !

एक दिल लाखों तमन्ना, उस पै और ज़्यादा हविस,

फिर ठिकाना है कहाँ, उसके बिठाने के लिए !

नक़ली मन्दिर मसजिदों में जाय सद अफ़सोस है.

कुदरती मसजिदों में जाय सद अफ़सोस है,

कुदरती मसजिद का साकिन, दुःख उठाने के लिए !

कुदरती काबे की तू महराब में सुन गौर से,

आ रही धुर से सदा, तेरे बुलाने के लिए.!

अमीर खुसरो

छाप तिलक सब कीनी मोसे नयना मिलाय के

बलि बलि जाऊँ मैं ता तोरे रंगरिज़वा,

अपनी सी रंग दीनी, मोसे नयना मिलाय के !

प्रेम भटी का मदवा पिलाय के,

मदमाती कर दीनी, मोसे नयना मिलाय के !

हरी हरी चूड़ियाँ, गोरी गोरी बहियाँ,

बाँह पकड़ हर लीनी, मोसे नयना मिलाय के !

ख़ुसरा निजाम के बलि-बलि जाये,

आज सुहागिन कीनी, मोसे नयना मिलाय के !

मुजिब साहब

आज मैं तो लैही गगरिया भराय

प्यारे सतगुरु तेरे पनघट पर

बैठी हूँ आस लगाय,

रीति गागर कब लौ लै डोलूँ

तुम सौं प्रीतम पाय,

भरदे ' मुजीब ' की गागर भरदे

काहे को बहुत खिजाय !

बाबा मिहीदास

हंसा जो पूछे हो राम

हंसा जो पूछे हो रामा, सुनु भाई काया

तोहरा हमारा कैसन रीत हो ?

तेहुँ जब चंचल हो हंसा, अमरपुर देश हो

हमहू जिरिये होइब राख हो !

चार जनाहो मिलि खटिया उठाव्इहो,

ऊपर से चदरि ओढ़ाई हो,

उत्तरे दखिनवाहो रामा खटिया लगाव्इहो

इहि बाते देसवा के रीत हो !

घुमिये -घुमिये हो रामा अगिया लगाव्इहो

हमहू जरिये होइब राख हो !

भइया बहनिवा हो रामा रोधना पसारइहो

हमहू जरिये होइब राख हो !

इहिरे मंदिरवा के राम, बड़ा रे सुख कईनिहो

सोहुओ जरिये भईलई राख हो

इतना जे बतिया हो रामा पूछै दास कबरिहो

राखिलेहुँ चितवा में आपन हो !

oooooooooooooooooooo

विश्व विख्यात विभूतियों के महान सन्देश

स्वामी विवेकानन्द

आत्म चिन्तन से शान्ति

विचारों के प्रबंधन के लिए दो अभ्यास बड़े प्रभावी हैं. प्रातः शान्त-चित्त होकर बैठना और रात्रि को सोने से पहले स्वयं का 'ऑडिट (लेखा-जोखा, परीक्षण) करना.

प्रातः खुले में शान्ति से बैठें, दौड़ते-भागते विचारों की लगाम को कसने या किसी प्रकार के हठ योग को करने की आवश्यकता नहीं है. बस बैठें और अपनी श्वांस पर ध्यान जमायें, उसका आना जाना महसूस करते रहें. मुश्किल से 10 मिनिट लगेंगे कि अपनी श्वांस गहरी होती जाएगी. आनन्द आने लगेगा. इस अभ्यास को एक घंटे प्रति दिन करें और फिर देखें उसका प्रभाव.

सोने से पहले, दिन में अपने कार्यों और व्यवहार का 'आडिट' करें. इसके लिए 15 मिनिट बहुत हैं. सोंचे कि जो काम किया है वह गलत है या सही, कैसा व्यवहार था हमारा दूसरों के प्रति., कैसी भाषा थी, उससे वातावरण या कोई इतना अशान्त हुआ, क्या वैसा करना ज़रूरी था ? यदि नहीं तो आगे वैसा नहीं हो - बस इसी से हो जायेगा 'ऑडिट '.

श्वांस को लयबद्ध बनाने में (Rhythmic Breathing Regulate) मन भावन संगीत सुनने, स्वयँ गाने, प्रार्थना या कीर्तन का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, सहायक हो सकते हैं, क्योंकि ये सब कार्य विचार श्रंखला को केन्द्रित करते हैं.

जीवन में समय प्रबंधन के लिए प्राथमिकता निर्धारण, समय का सदुपयोग, भौतिक आकर्षण से यथासम्भव दूरी, स्वाध्याय तथा अच्छे लोगों के साथ सहयोग और सदभाव के सम्बन्ध बनाये रखना उपयोगी होता है.

रामकृष्ण परमहंस

ईश्वर को जान लो

उस एक ईश्वर को जानो, उसे जानने से तुम सभी कुछ जान जाओगे. एक के बाद शून्य लगते हुए सैंकड़ों और हज़ारों की संख्या प्राप्त होती है. परन्तु एक को मिटा डालने पर शून्य का मूल्य नहीं होता. एक ही के कारण शून्य का मूल्य है. पहले एक के बाद में बहु, पहले ईश्वर फिर जीव जगत.

मुसाफ़िर को नये शहर में पहुँचकर पहले रात बिताने के लिए किसी सुरक्षित डेरे का बन्दोबस्त कर लेना चहिये. डेरे में अपना सामन रख कर निश्चिन्त होकर शहर देखते हुए घूम सकते हैं. परन्तु यदि रहने का बन्दोबस्त न हो तो रात के समय अँधेरे में विश्राम के लिए जगह खोजने में बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ती है.

उसी प्रकार इस संसार रूपी परदेश में आकर मनुष्य को पहले ईश्वर रूपी चिर विश्रामालय प्राप्त कर लेना चहिये, फिर निर्भय होकर अपने नित्य कर्त्वयों को करते हुए संसार में भ्रमण कर सकता है. किन्तु यदि ऐसा न हो तो जब मृत्यु की ओर अंधकार पूर्ण रात आएगी तब उसे अत्यंत क्लेश ओर दुःख भोगना पड़ेगा.

जब एक तराज़ू का पड़ला तराज़ू के दूसरे पलड़े से भारी होकर झुक जाता है तो उसका निचला काँटा ऊपरवाले कांटे से अलग हट जाता है. इसी प्रकार जब मनुष्य का मन कामिनी-कांचन के भार से संसार की ओर झुकता जाता है तो वह ईश्वर उसके प्रेम सम्बन्ध से दूर हट जाता है. तब उससे एकात्म नहीं हो पाता.

अरविन्दाश्रम पांडिचेरी की श्री माँ

अमृत वचन

* तुमने यदि भगवन को चुना है तो इसका कारण यह है कि भगवान ने तुम्हें चुन लिया है.

* जब तुम यह अनुभव करते हो कि तुम कुछ नहीं जानते, तो तुम सीखने के लिए तैयार हो.

* अपने जीवन की चिन्ता पूरी सच्चाई के साथ भगवान् पर छोड़ दो तो तुम्हारा ह्रदय सदा शान्त रहेगा ।

* सुख के लिए मत जियो, भगवान की सेवा के लिए जियो और इससे तुम्हें जो आनन्द मिलेगा वह आशातीत होगा.

* अपने ही सुख के लिए व्यस्त रहना, असुखी होने के अचूक उपाय है. जानना अच्छा है, उसे जीवन में उतारना बेहतर है, और वैसे ही हो जाना पूर्णता है ।

* सच्चे अन्तर्भाव से किया गया कर्म भी ध्यान है. ध्यान द्वारा प्रगति हो सकती है, किन्तु यदि सही अन्तर्भाव किया जाये तो कर्म द्वारा प्रगति दसगुणी हो सकती है ।

* कोई चीज़ कठिन है इस कारण उसे नहीं छोड़ देना है. विपरीत इसके, कोई चीज़ जितनी अधिक कठिन हो, उतना ही दृढ़ संकल्प उसमें सफल होने के लिए होना चहिये ।

* योग का वास्तविक उद्देश्य परोपकार करना नहीं है, बल्कि भगवान को प्राप्त करना है, भगवत चेतना में प्रवेश करना और भगवान के अन्दर अपनी सच्ची सत्ता को प्राप्त कर लेना है.

* लक्ष्यहीन जीवन सदा ही दयनीय जीवन होता है. जीवन का लक्ष्य सुख नहीं. साधारण जीवन का लक्ष्य है - अपना कर्तव्य सम्पादन,, पर आध्यत्मिक जीवन का लक्ष्य है - भगवान की उपलब्धि.

*यह कभी न भूलो कि कठिनाइयाँ जितनी बड़ी होती हैं, हमारी सम्भावनायें भी उतनी ही बड़ी

होती हैं. जिनमें बहुत क्षमताएं हैं, जिनके आगे बड़ा भविष्य है, उन्हें ही ज़्यादा बाधाओं का सामना करना इता है.

सुभाष चन्द्र बोस

स्मरण रहे त्याग व बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता है. इस सनातन सत्य से कोई विमुख नहीं हो सकता कि त्याग और बलिदान से ही आदर्शों की संस्थापना होती है.

निःसंदेह मृत्युलोक में प्रत्येक वस्तु क्षय को प्राप्त होती है. लेकिन विचार, आदर्श और स्वप्न कभी नष्ट नहीं होते. एक व्यक्ति की मृत्यु विचार के लिए होती है. लेकिन उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका विचार सहस्त्रों और लाखों के जीवन में प्रतिविम्बित होता है. विकास चक्र की गति का यही नियम है और इसी नियमान्तर्गत एक पीढ़ी के विचार,आदर्श और स्वप्न दूसरी पीढ़ी को विरासत में प्राप्त होते हैं. इस जगत में बिना त्याग व बलिदान की भट्टी में तपे कोई विचार प्रसार नहीं पाता है.

इससे बढ़कर किसी के लिए संतोष की बात और हो भी क्या सकती है कि वह सिद्धांत के लिए जिया या मरा ..... किसी आत्मा को इससे श्रेष्ठ पुरस्कार और क्या मिल सकता है ? उसका सन्देश उसकी पर्वत श्रंखलाओं, घाटियों तथा मैदानों में लहलहाता और समुन्द्र पार कर सुदूर विदेशों में चमकेगा. जीवन की इससे बड़ी सफलता और क्या हो सकती है कि कोई स्वयं के जीवन उद्दिष्ट के लिए आत्माहुति दे. मनुज को इसलिए मरना चाहिए जिससे उसका राष्ट्र जीवित रहे.

इसे कभी न विस्मृत करो कि मानव जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप गुलामी में जीवन बसर करना है. स्मरण रहे कि अन्याय तथा जो गलत है, उससे हाथ मिलाना सबसे बड़ा गुनाह है. स्मरण रहे कि अन्याय और अत्याचार के खिलाफ खड़े हो जाना सर्वोत्तम सद्गुण है. उसके लिए चाहे जो मूल्य चुकाना पड़े

(श्री राजेंद्र मोहन भटनागर की पुस्तक ' दिल्ली चलो' से साभार)

oooooooooooo

नववर्ष की शुभाकांक्षा

प्रभुजी करें कि नई शती का मंगलमय हो चौथा साल !

प्रेम शान्ति सदभाव प्रगति से यह धरती हो मालामाल !!

यह वास्तव में शुभ हो भगवान करें !

प्रेम-शान्ति-आनंद प्रगति की ओर जगत प्रस्थान करे !!

नए-से-नए अन्वेषण में विश्व सफल अभियान करे,

उन्नत-से-उन्नत जगजीवन-स्तर का नया विधान करे !

अधिक-से-अधिक औद्योगिक संस्थाएं नवनिर्माण करें,

बढ़िया-से-बढ़िया उत्पादन सब मज़दूर किसान करें !!

ऊँचे-से-ऊँचे अनुभव वैज्ञानिक अनुसन्धान करें,

सुन्दर-से-सुन्दर रचनायें कलाकार विद्वान करें !

बड़ी-से-बड़ी स्पर्धाओं में हम अर्जित सम्मान करें

कड़ी-से-कड़ी चुनौतियों में सफल विजय अभियान करे !

कठिन-से-कठिन आपदाओं से रक्षा वीर जवान करें,

दलित -से -दलित पिछड़ों का नेता सचमुच कल्याण करें !

निर्धन -से-निर्धन की सेवा तन-मन से धनवान करें,

निर्बल-से-निर्बल प्राणी की सहायता बलवान करें !!

उत्तम-से-उत्तम संतों के वचनामृत का पान करें,

मंगल-से -मंगल आदर्शों का निशदिन गुणगान करें

अन्तर-से-अन्तर में पैठी त्रुटियों से घमासान करें.

मन-से-मन को जीत, आत्मबल, कौशल की पहचान करें !!

पावन-से-पावन सतकर्मों को हरदम निष्काम करें,

शुभ-से-शुभ आदेश आचरण में ढालें क्रियमाण करें !

थोड़ा-से-थोड़ा कुछ भी यदि सब कोई बलिदान करे,

स्वर्ग धरा पर उतरेगा यदि कोशिश हर इंसान करे !!

- ***सतीश वर्मा***

.

भारतीय गणतंत्र दिवस की वर्षगांठ पर अभिनन्दन

" हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्राण है - धर्म "

एक युगद्रष्टा महापुरुष का उदबोधन !

" धर्म ही हमारे तेज, हमारे बल, यहीं नहीं हमारे जातिय जीवन की भी मूल भित्ति है. अभी और चिरकाल के लिए भी तुम्हें उसी का अवलम्बन ग्रहण करना होगा और तुम्हें उसी के आधार पर खड़ा होना होगा. तुम्हारे पूर्वजों ने धर्म-रक्षा के लिए सब कुछ साहसपूर्वक सहन किया. तुम इसी धर्म में बंधे हुए हो और अगर तुम इसे छोड़ दोगे तो चूर-चर हो जाओगे.

इस धर्म में ही हमारा राष्ट्रीय मन है, हमारा राष्ट्रीय जीवन प्रवाह है. इसका अनुसरण करोगे तो यह तुम्हें और गौरव की ओर ले जायेगा. वही हमारी जाति का जीवन है, हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्राण है और उसको अवश्य ही सशक्त बनाना होगा.

-- स्वामी विवेकानंद

000000

" भारत २१ वीं शती में अग्रणी देश होगा "

- एक प्रतिष्ठित प्रवासी की शुभ-आकाँक्षा.

" अभिनव भारत २१ वीं शताब्दी में विश्व में अग्रणी देश के नाते उभरेगा. भारत में वह सब कुछ है जो विश्व का समर्थ और सशक्त देश होने के लिए होना चाहिए. भारत के पास सर्वोत्कृष्ठ वैज्ञानिकों की सबसे बड़ी संख्या है, निपुण और कुशल श्रमिक/कर्मचारियों की सबसे बड़ी संख्या है - प्राकृतिक खनिजों का अपना भंडार है और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता व क्रय-शक्ति वाला बाज़ार है.

इस समय सबसे बड़ी आवश्यकता है देशभक्त, राष्ट्रवादी नेतृत्व की. यदि वर्तमान भारत को सच्चा नेतृत्व और अच्छी सरकार मिल जाये तो फिर उसे कोई रोक नहीं सकता. इसके बिना अच्छे से अच्छी प्रतिभा और योग्यता भी निष्फल हो रही है. मुझे विश्वास है कि जिस गति से युवाशक्ति में जागृति आ रही है, वह देखते हुए भारत का स्वर्णिम क्षण, जो नए भारत का सूर्योदय कहा जायेगा, वह बहुत दूर नहीं है. "

-- डॉ. मुकुन्द मोदी

(आप न्यूयार्क में सुप्रसिद्ध चिकित्स्क हैं और अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सम्मानित एवं सर्वप्रमुख पांच-छः जाने-माने धनी लोगों में से हैं.)

संतमत और संतों का तरीक़ा

पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी का उदबोधन

संतमत कोई मज़हब या धर्म नहीं है और न किसी मज़हब की वो शाखा है, न किसी का विरोधी है. सबके साथ उसका मेल है. यह सच्ची ख़ुशी, हमेशा का सुख और निर्वाण पद हासिल करने का तरीक़ा है. जितने भी संत दुनियाँ में आ चुके हैं और जो अब मौजूद हैं, सब का एक ही तरीक़ा रहा है, सबके जीवन का लक्ष्य भी एक ही रहा है. सबके सिद्धान्त भी एक ही रहे हैं और किसी एक खास (विशेष) भाषा में नहीं हैं. एक पढ़ा-लिखा और एक अनपढ़ - दोनों के लिए इसमें उन्नति का मार्ग खुला है, दोनों के लिए कोई अन्तर नहीं है. इसमें न कोई जाति-भेद और न लिंग भेद है. हर व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, बूढा हो या जवान, स्वस्थ हो या बीमार, अमीर हो या गरीब, सभी लोग इसका साधन कर सकते हैं.

आदमी की ज़िन्दगी का आदर्श है कि वह सांसारिक व्यवहारों को और कर्त्वयों को धर्मशास्त्र के अनुसार पूरा करते हुए ईश्वर को प्राप्त कर ले. इसका सबसे सरल साधन संत मत में है. इसमें फ़ायदा यह है कि पिछले संस्कार आसानी से कट जाते हैं, आगे के लिए उनका सिलसिला खत्म कर दिया जाता है और गुरु कृपा और उनके सत्संग से आत्मा शुद्ध और निर्लेप होकर अपने अंशी परमात्मा में लीन हो जाती है. जो तरीक़ा इस अभ्यास को बताता है उसी को संत मत कहते हैं और उसमें दूसरे तरीक़ों के मुक़ाबले में बहुत सी सुविधायें और विशेषताएं हैं.

संतों का तरीक़ा सारे संसार में ही है चाहे वह किसी भी धर्म के हों. युगों से एक ही साधन चला आ रहा है और वह यह है - **गुरु चरणों में सच्चा प्रेम और समर्पण.** फ़क़ीरों का तरीक़ा प्रेम का तरीक़ा है और यही रास्ता ईश्वर की प्राप्ति के लिए सबसे सरल और सबसे छोटा है. प्रत्येक जीव में आत्मा है, वह परमात्मा का अंश है. आत्मा को परमात्मा से कुदरती प्रेम है वह उनसे मिलकर एक हो जाना चाहती है. परन्तु जन्म-जन्मान्तर की इच्छाओं-वासनाओं और शुभाशुभ के कारण संस्कारों की गांठ बन गयी है, जिसे मन कहते हैं. यही पर्दा

है जो आत्मा और परमात्मा के बीच बाधक है और दोनों का योग होने नहीं देता. संत मत में उस गांठ को गुरु अपनी कृपा से खोल देता है. आत्मा और परमात्मा के बीच का पर्दा हट जाता है और दोनों मिल जाते हैं. यही मनुष्य की ज़िन्दगी का आदर्श है.

हमारे यहां संत मत में 'गुरु' शब्द दो तरह से प्रयोग होता है. गुरु नाम है उस आदि शक्ति का जो तमाम दुनियाँ का आधार है. एक है, जो न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है, हमेशा से है और हमेशा रहेगा. वही अमर आनन्द, अमर शांति और अमर जीवन का स्रोत है. जीवों के उद्धार के लिए वह संत रूप में अवतरित होता है और उन्हीं की सरल भाषा में समझाता है. रास्ता दिखाता है और उनके मन की गांठ खोलकर उन्हें परमात्मा की प्राप्ति करा देता है. दूसरे लोग वो हैं जो गुरु के जीवन काल में उसके प्रति समर्पित भाव से, सम्पूर्णतः शरणागत होकर अभ्यास करते-करते परमात्मा तक पहुँच जाते हैं. ये लोग भी संत और गुरु कहलाते हैं और जीवों के उद्धार का काम, जो संत मत का मिशन है, जारी रखते हैं.

जिस धर्म में तुम पैदा हुए हो उसके नियमों पर चलो. मनुष्य श्रष्टि का एक अंग है. और परमात्मा ने श्रष्टि के नियम बना दिए हैं, उन नियमों पर चलो. जिस समाज के तुम अंग हो और यहाँ यह तो सब बताया ही जाता है परन्तु यहाँ सच्ची शिक्षा इस बात की दी जाती है कि परमेश्वर से मिलकर अपनी हस्ती को मिटा दो. और मतों का ख़तम (अन्तिम चरण) यह है कि नेकी पर चलो लेकिन हमारे यहाँ यहीं से शुरू करते हैं.

संध्या -पूजा है - अपनी शक्ति को एकाग्र करना. हमारी इच्छा शक्ति जन्म-जन्मान्तर से कमज़ोर होती चली आ रही है. ऐसे बहुत से लोग हैं जो यह अच्छी तरह जानते हैं कि बुरा क्या है, भला क्या है, लेकिन फिर भी बुराई कर बैठते हैं. जब-जब मन दुनियाँ में फंसे उसे वहाँ से निकालकर परमात्मा के चरणों में लगाओ. असली अभ्यास यह है कि अपने विचारों पर निगाह रखो, उन्हें बुराई से खींच कर भलाई पर लाओ.

संत मत में गुरु कृपा परछाई की तरह सदा साथ रहती है. संत मत में एक यह भी विशेषता है कि दूसरे तरीक़ों में तो गुरु शिष्य को अभ्यास बताकर छोड़ देते हैं, मगर हमारे यहाँ ऐसा नहीं है. गुरु अपनी इच्छा शक्ति से शिष्य को अभ्यास में बराबर मदद देते रहते हैं.

संत मत में एक ख़ास चीज़ यह है कि केवल परमात्मा से मिलने का रास्ता ही नहीं बताते बल्कि गुरु अपनी शक्ति देकर, वह बातें जो रास्ते में बाधक हैं, आपसे छुड़ाते हैं.

गुरु हर वक्त ईश्वर में लीन है, हर वक्त ईश्वर से शक्ति लेता है और उस शक्ति को आपको (साधकों को) दान देता रहता है. आपने देखा होगा कि जब आप सत्संग में बैठते हैं तो मन में विचार कम उठते हैं और शान्ति मिलती है. क्यों ? वह शक्ति काम कर रही है. वह शक्ति पाकर आत्मा को अपने असली वतन की याद आती है. अभ्यासी को अपन गलतियाँ दीखने लगती हैं और वह सच्चे मन से प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! हमें इस दुनियाँ से निकालो, हमारा उद्धार करो.

हमारे यहाँ गुरु के कहे पर चलना भी सेवा है. जतन क्या है ? सत्संग करो, जहाँ कहीं संत मिलें उनकी सेवा करो. वे धन नहीं चाहते, अपने लिए कुछ नहीं चाहते. केवल उनके कहने पर चलो. संत मत में जितना जप और अभ्यास है सब मन और इन्द्रियों को वश में करने का है और सिद्धान्त यह है कि सेवा, वह भी निष्काम सेवा, करने से इस काम में मदद मिलती है. सच पर चलने से ईश्वर खुश हो जाता है. सच्चाई ही ईश्वर है. इसी रास्ते पर चलने से वह मिलता है आत्मा को गुरु के मुताबिक सत पर लाकर अपने असली प्रीतम परमात्मा में लय कर दिया जाय जो हमारा सच्चा पिता है.

संत मत के रास्ते में सिद्धियाँ नहीं मिलती. हमारे यहाँ दुनियाँ की वस्तएँ नहीं मिलती, यहाँ मान आदर नहीं मिलता, उसे तो कुचला जाता है, जिससे मन का मर्दन हो. दुनियाँ से लगाव छुड़ाया जाता है और ऐसी अनमोल वस्तु, यानी परमात्मा का प्रेम, दिया जाता है जो आत्मा को परमात्मा से मिलाकर दोनों को एक कर देता है.

आत्मा हमारे सिर की चोटी (Medulla Oblongata) पर उतरी और नीचे की ओर शरीर में स्थित चक्रों (Nervous Centres) में से उतरती हुई सब जगह फैल गयी. आत्मा की शक्ति से हमारा जिस्म दुनियाँ में काम करता है और शैतान की ख्वाहिश या काम हमें नीचे की तरफ़ ले जाती है. जो हमें नीचे की तरफ़ ले जाये वह शैतान है और जो हमें शैतान के चंगुल से बचाकर ऊपर ईश्वर की तरफ़ ले जाये वह संत है, गुरु है.

जब तक किसी संत की मदद नहीं मिलती तब तक यह रास्ता तय नहीं होता, जीव मन के चंगुल से नहीं छूटता और आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता. हमें जो फ़ायदा हुआ गुरु से हुआ. मन की पीठ पर माया सवार है. वह बड़ी शक्तिशाली है. ऐसी शक्तिशाली चीज़ से मनुष्य की क्या मज़ाल जो लड़ सके, जीतना तो दूर रहा. संत रास्ता चले होते हैं. उनमें इतनी शक्ति होती है कि वे माया से आसानी से निकाल ले जाते हैं.

हमारे यहाँ मन को मारते नहीं हैं. दूसरे तरीक़ों (साधन पद्धतियों) में मन को मारते हैं. **हमारे यहाँ मन को ऊँचा रस दे देते हैं जिसे पाकर वह घटिया आनन्द छोड़ देता है.** जब मन को आत्मा का आनन्द मिलने लगता है तब वह इन्द्रियों के आनन्द और दुनियाँ की वस्तुओं के आनन्द को खुद छोड़ देता है क्योंकि वह समझने लगता है कि दुनियावी आनन्द फ़ीका और झूँठा है. मन तो बेजान है, जड़ है. उसमें आत्मा शामिल है. आत्मा की धार जब उस पर पड़ती है तब उसमें आनन्द मिलता है. अगर मनुष्य का चित्त कहीं दूसरी जगह हो, तवज्जह (ध्यान) कही और हो तो आनन्द नहीं आता, जैसे बीमारी में खाने-पीने की चीज़ों में वह आनन्द नहीं आता जो तन्दुरुस्ती में आता है. इसलिए इस दुनियाँ में मिलौनी का रस है जो किसी बाहरी चीज़ पर निर्भर है. निर्मल रस वही है जो किसी पर निर्भर न हो.

हमारे यहाँ रूहानी कामयाबी हासिल करने के तीन विशेष साधन हैं - (1) शरीर के अन्दर अनहद शब्द हो रहे हैं. गुरु से इसका ज्ञान प्राप्त करके शब्द की धार को पकड़ो. (2) गुरु मूर्ति का ध्यान करो (केवल उन साधकों के लिए जिन्हें यह ध्यान बताया जाए) और (3) जो नाम गुरु ने दिया है उसका हर समय, हर परिस्थिति में सुमिरन करो.

oooooo

संत मत के बारे में कुछ भ्रमात्मक बातें और उनका निराकरण

संत मत में वाद-विवाद (बहस) करना मना है क्योंकि इसका सदा से यही सिद्धान्त रहा है कि **सच्चाई वह है जो स्वयं खुलकर आये न कि वह जिसकी घोषणा की जाये.** कहावत है, *"मुश्क़ आ अस्त कि खुद बिगोयद, न कि अत्तार गोयद* " (भावार्थ : कस्तूरी वही है जो स्वयं बोले.अपनी सुगंध से ही जता दे, न कि वह जिसे गंधी बताये) लेकिन फिर भी सत्संगियों को गुमराही से बचाने के लिए कि कहीं वे गलती में पड़कर अपना संयम न खो दें और रास्ते से हट न जावें, कुछ कहना ही पड़ता है और वह भी अपने ऐसे भाइयों से जिन्होंने सच्चे रास्ते को क़बूल किया है.

कुछ मतों का यह दावा है कि उनके गुरुओं ने ही इसको जारी किया है. यह उनकी अज्ञानता है. श्री शिवदयाल सिंह साहब ने इसकी शिक्षा दी, तो गुरु ग्रन्थ साहब में भी इसी की शिक्षा है, कबीर साहब भी बराबर इसी की शिक्षा देते रहे. हज़रत मुहम्मद साहिब ने भी अपने अनुयायिओं को इसी की शिक्षा दी थी. हमारे पुराने धर्मग्रंथों में भी इसका अनेकों जगह उल्लेख मिलता है. यह अवश्य है कि समय बदलने के साथ-साथ इसकी जगह और रूप में भी बदलाव या उन्नति-अवनति होती रही है, कभी यह गुप्त रहा और कभी प्रत्यक्ष..

कुछ मतों का यह दावा है कि यदि कोई विशेष नाम जो उनके मत में प्रचलित है, नहीं लिया जायेगा तो मोक्ष नहीं होगी. परमात्मा का नाम संतों ने 'अनामी' बतलाया है और यदि कोई नाम उसका हो सकता है तो 'सतनाम' ही हो सकता है. उसके हज़ारों नाम हैं और जो भी नाम प्रेमपूर्वक लिया जाय और जस नाम से निर्वाण पद या मोक्ष की प्राप्ति हो और जो नाम कमाया हुआ हो, वही असली नाम है. **इसलिए प्रत्येक अभ्यासी को जो नाम उनके गुरु ने दिया है और जिससे स्वयं उन्होंने आत्मा का साक्षात्कार किया है, वही सच्चा नाम है और उसी का अभ्यास करना चाहिए.**

कुछ मतों का यह मानना है कि उनके गुरु ईश्वर के अवतार थे. 'गुरु' नाम ईश्वर का है और संत सचखण्ड या दयाल देश से आये या वहाँ तक पहुँचे और ईश्वर से मिलकर एक हो गए. वे सभी ईश्वर के रूप में थे और ईश्वर का रूप हैं. जिसका सहारा लेकर अभ्यासी सचखण्ड तक पहुँचता है वही गुरु उसके लिए ईश्वर का अवतार हैं.

कुछ मत दूसरे मत वालों को बहुत हीन भाव या घृणा की दृष्टि से देखते हैं, जैसे मुसलमान हिन्दू संतों को और हिन्दू मुसलमान सूफियों को. यह उनकी कम-वाक़फ़ियत (जानकारी की कमी) का नतीज़ा है. उन्होंने पूरी जानकारी हासिल नहीं की है. कुछ प्रारम्भिक पुस्तकें पढ़कर ही उन्होंने यह सन्तोष कर लिया कि वे उस फ़िलॉसफ़ी को ख़ूब जानते हैं. अगर आदर की दृष्टि से ध्यानपूर्वक उनके साहित्य को देखें तो असलियत खुल जायेगी.

एक गलतफ़हमी (भ्रम) आमतौर पर यह फैली हुई है कि पहले गुरु के चोला छोड़ने पर दूसरे गुरु का ध्यान करना चाहिए और पिछले गुरु से कोई वास्ता न रखना चाहिए. जब गुरु उस पवित्र हस्ती का नाम है जो जीते जी ईश्वर में लय हो चुका है तो चोला छोड़ने पर यह कैसे समझ लिया जाये कि अब वह मौज़ूद नहीं है. चोला छोड़ने पर आज़ादी हासिल करके ईश्वर के रूप में उसकी हस्ती हर जगह मौज़ूद रहती है. इसलिए उसको मरा हुआ समझना ग़लती है. उसके चोला छोड़ने पर भी उसी का ध्यान करना चाहिए.

हाँ, अगर अभी तक तमोगुणी मन पर बैठक है, या सतोगुणी मन पर बैठक तो है किन्तु वह स्थायी नहीं है तो अपने किसी बड़े भाई के संरक्षण और आदेशों से सहायता लेते रहना चाहिए जिसको गुरु इस कार्य के लिए नियत कर गए हों. यदि ऐसा कोई भाई न हो तब किसी दूसरे गुरु से सत्संग करके फ़ायदा उठाया जा सकता है.

==========

अभ्यास में बैठने का तरीक़ा

एक निश्चित स्थान पूजा का रखें तथा सुबह और शाम का समय भी निश्चित कर लें और उस समय पर पूजा में नित्य बैठ जाएँ. जिनकी 'शिफ्ट' ड्यूटी हो वे उसी के अनुसार समय निश्चित कर लें. पूजा के स्थान पर अगरबत्ती जला दें. ईश्वर के ध्यान में वहाँ बैठ जायें. किसी एक सहज आसन में बैठ जायें. पद्मासन आदि आवश्यक नहीं है. प्रातः सूर्य निकलते समय एवं सांय संधि-बेला के समय बैठना अति सुन्दर है. सहज आसन में बैठकर कमर से गर्दन तक सीधी रेखा में कर लें अर्थात मेरुदण्ड को सीधा करके बैठें. गर्दन हलकी झुकी हुई रहे, स्नान करके ही बैठना आवश्यक नहीं है, समय निकलने न पावे, अतः कपड़े बदल कर ही बैठ जायें ।

इस प्रकार बैठ कर राम-धुन एवं गुरु-स्तुति पहले कर लें तब जो साधन गुरु ने दिया है उसमें अपने को लय कर दें. साधन नहीं लिया है तो गुरु से साधन ले लें. तब तक प्रभु के किसी एक स्वरुप पर अन्तर में ध्यान स्थित करें. चित्त को दूसरी और न जाने दें. पुनः वन्दना द्वारा ध्यान करें. थोड़ी देर ध्यान एवं गुरु वन्दना के बाद शान्ति-चित्त प्रभु के ध्यान में खुली आँख बैठें या लेते रहें. पुनः जलपानादि कर अपने कार्य में लग जायें ।

==========

साधन में निम्न ५ बातों से विघ्न पैदा होता है, साधक इन ५ बातों को त्यागें

(1) व्यर्थ चिन्तन

(2) व्यर्थ भाषण

(3) व्यर्थ दर्शन

(4) व्यर्थ श्रवण,और

(5) व्यर्थ भ्रमण

रामाश्रम सत्संग के संस्थापक का परिचय

महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (फतेहगढ़)

- डॉ. हरनारायण सक्सेना, जयपुर

परमसन्त सद्गुरु श्रीमान महात्मा रामचन्द्र जी के विषय में उनके वरिष्ठ शिष्यों ने बहुत कुछ लिखा ही. फिर भी इन महात्मा के विषय में जो कुछ भी लिखा जाये कम ही है. इनकी महानता का अनुभव हम तुच्छ बुद्धि लगा ही नहीं पाते.

कायस्थ परिवार में सन्तान साधारणतः पिता को 'लाला' व माता को 'जिज्जी' नाम से सम्बोधित करने की पुरानी परम्परा है. अतः इन्हें सन्तान ने लाला कहना प्रारम्भ किया और इस प्रकार आपको 'लालाजी' कहना आरम्भ हुआ - यहाँ तक कि इतने बड़े सत्संग में भी आप लालाजी के पवित्र नाम से आज तक सम्बोधित किये जाते हैं.

आपके परिवार के गुरुजन भूमिग्राम प्रान्त मैनपुरी उ.प्र. के प्रतिष्ठित रईस जागीरदार थे. परन्तु समय के फेर से सन १८५७ के गदर में पूरा ग्राम ही लूट लिया गया और बची हुई ज़मीन जायदाद भी बड़े मुक़दमें में हाथ से निकल गयी. श्रीमान लालाजी महाराज तथा उनके छोटे भ्राता परमसन्त महात्मा रघुवरदयाल (श्रीमान चाचा जी महाराज) के जन्म के समय इनके पूज्य पिताजी श्रीमान हरबख्श राय साहब फ़र्रूख़ाबाद में चुंगी के सुपरिटेंडेंट थे.

पुराना रईस घराना था, सब सुविधाएँ, नौकर चाकर, सवारी (घोडा बग्गी) आदि घर में थीं. परन्तु आपके पिता के पश्चात् किसी मुक़दमे में परिवार के हार जाने के कारण ये सब कुछ हाथ से निकल गया. माता-पिता का स्वर्गवास हो चुका था और अब घर में गरीबी आ गयी.

इसी समय में श्रीमान लालाजी महाराज ने अंग्रेजी में मिडिल (आंठवी क्लास) की परीक्षा पास की. पिता के मित्र उस समय प्रान्त के कलेक्टर थे और परिवार की स्थिति को जानते थे, अतः उन्होंने इन्हें अपने कार्यालय में नौकरी दे दी ।

दोनों भ्राताओं के विवाह उनके पिता जी ने सम्भ्रान्त कुलों में पहले ही कर दिए थे. अब दोनों परिवारों के जीवन-यापन का प्रबन्ध भी हो गया. रईसी ठाठबाट छोड़कर अब दोनों परिवारों को किसी प्रकार निर्वाह (गुज़ारा) करने की सुविधा हो गयी. फ़र्रूख़ाबाद नगर में एक छोटा सा मकान किराये पर लेकर उसी में दोनों परिवार रहने लगे.

आध्यात्मिक (रूहानी) गुरु से सम्पर्क

मकान छोटा होने के कारण श्रीमान लालाजी महाराज ने पड़ोस में मुफ़्ती साहब के मदरसे में एक कोठरी किराये पर ले ली जिसमें आप अपनी पढ़ाई आदि का काम किया करते और रहते थे.

सौभाग्य से इसी मदरसे में पढ़ाने वाले एक उस्ताद जिनका शुभ नाम श्रीमान परमसन्त सद्गुरु महात्मा जनाब फ़ज़ल अहमद खां साहब था, भी रहते थे. वे सूफी संत नक़्शबन्दिया सिलसिले के सर्वाधिकार प्राप्त परमसंत थे. श्रीमान लालाजी महाराज पर उनकी दृष्टि उधर से निकलते हुए पड़ती रही और श्रीमान लालाजी महाराज के संस्कारी पुरुष होने के कारण उनका आकर्षण इनकी ओर बढ़ता गया. उधर निकलते हुए जब भी लालाजी महाराज उन्हें अदब से सलाम करते, तो वे मन से आशीर्वाद देते. इस प्रकार प्रेमाकर्षण बढ़ता गया. एक संध्या को जब वर्षा हो रही थी और लालाजी महाराज उनके निवास के सामने बुरी तरह भीगे हुए निकले, तो आपको बड़ी दया आयी और बोले,

"बरखुरदार, कपडे बदल कर आओ, मैं अंगीठी गरम कर लेता हूँ. भीग गए हो थोड़ा शरीर को सेंक लो तो सर्दी निकल जायेगी." कपड़े बदल कर जब आप वहाँ पहुँचे तो उन्होंने बड़े प्यार से अपने पास बिठाया और आपको अंगीठी की गर्मी से आराम मिला. संत की कृपा हुई और उनके प्रभाव से लालाजी महाराज को नींद सी आने लगी. आपने उन्हें बिस्तर पर लिटाया और अपनी रज़ाई ओढ़ा दी ।

श्रीमान लालाजी महाराज बतलाया करते थे कि मुझे एक घंटा से अधिक समय तक होश ही नहीं रहा और आपने उसी समय न जाने कितनी मन्ज़िलें (आध्यात्म पथ की) तय करा दीं.

यह तो पहला बड़ा सम्पर्क था. फिर तो सम्पर्क बढ़ता ही गया. धीरे-धीरे हुज़ूर महाराज ने अपनी सारी दीनी (आध्यात्मिक) दौलत श्रीमान लालाजी महाराज को देकर मालामाल (धनाढ्य) कर दिया.

लालाजी की सन्तान व बन्धु बान्धव

परिवार में आपके चार पुत्रियाँ और एक पुत्र थे. पुत्र महात्मा श्री जगमोहन नारायण जी दो से छोटे और दो से बड़े थे. श्रीमान लालाजी महाराज का परिवार आरम्भ से ही हुज़ूर महाराज के सम्पर्क में आ गया और सब पर उनकी कृपायें हुईं. श्रीमान चाचाजी महाराज का परिवार भी आरम्भ से आपके साथ ही रहा करता था. अतः उनके साथ-साथ श्रीमान चाचाजी तथा उनका परिवार भी इन संत के सम्पर्क में आया और उनकी कृपा हुई. फिर परिवार गंगा पार अलीगढ तहसील में चला गया. चाचाजी के बड़े सुपुत्र श्रीमान महाराज ब्रजमोहन लाल जी आपने ताऊ (लालाजी महाराज) के पास ही रहे. परिवार में ये महात्मा जगमोहन लाल जी से बड़े थे और श्रीमान लालाजी महाराज के पास रहकर ही इनकी पढ़ाई हाई स्कूल तक वहीँ हुई.

हुज़ूर महाराज की कृपा-दृष्टि इन पर भी बहुत थी और इन्हें आध्यत्म विद्या भी खूब मिली. लालाजी महाराज के देहावसान के बाद आपने ही फतेहगढ़ में सत्संग पूजा का सारा कार्यभार संभाला. श्रीमान जगमोहन नारायण जी को लालाजी का आदेश (लिखित वसीयत) था कि ये महात्मा ब्रजमोहन लाल जी की आज्ञा में रहें, जो इन्होने जीवन-भर निभाया.

लालाजी महाराज के उत्तराधिकारी

सन 1942 से लगभग 1960 तक जबतक महात्मा अखिलेश कुमार कुमार बड़े होकर श्रीमान लालाजी महाराज के साहित्य की सम्भाल करते,यह साहित्य बाबू अयोध्या नाथ (जो और कुछ समय से वहीं फतेहगढ़ में परिवार के साथ रह रहे थे) की सम्भाल में रहा. श्रीमान लालाजी महाराज अपने जीवनकाल में जो भी संत-साहित्य की रचना करते उसे अपने किसी शिष्य को भेज देते थे. उनके आदेशानुसार वे शिष्य उसकी प्रतिलिपि रखकर अन्य शिष्य के

पास भेजते और अन्त में वह लेख लौटकर श्रीमान के पास आता और सम्भाल कर रख लिया जाता. यह लेख को भेजने का काम नियमित रूप से होता रहता.

दुर्भाग्य से इन्हें (महात्मा जगमोहन लाल जी को) अधिक आयु नहीं मिली और सन 1942 में ही इनका देहावसान हो गया. परन्तु इन ग्यारह वर्षों में आपने सत्संग का ठोस कार्य किया. श्रीमान लालाजी महाराज का लिखा सारा साहित्य एकत्रित किया और इसे नियमित रूप से धीरे-धीरे छपवाते रहने का भी आयोजन किया. कुछ उनके समय में छपा भी परन्तु उनके स्वास्थ्य की दशा के सामान्य न होने के कारण अधिक प्रगति न हो सकी. आपके देहावसान के समय उनके बड़े सुपुत्र महात्मा अखिलेश कुमार बहुत ही अबोध अवस्था में लगभग दो वर्ष के थे. महात्मा दिनेश कुमार का तो जन्म ही अपने पिता जी के देहावसान के पश्चात् हुआ.

ऐसा लगता है कि श्रीमान जी की बीमारी की अवस्था में कुछ लेख ऐसे भी रहे होंगे जो शिष्यों के पास ही रह गए हों और उन्होंने फिर उन लेखों को लौटा ही न पाया हो. यह मेरा अनुमान है और इसका कारण यह हो सकता है कि श्रीमान जो लिखने में ऊँची योग्यता रखते थे उनके लेखों में कहीं-कहीं समन्वय (सिलसिलेवार रचना क्रम का तारतम्य) नहीं मिलता. बीच के लेख जो लौटकर नहीं पहुँचे - उनके पहुँचने से सारे साहित्य में सम्भवतः क्रमबद्ध सम्पूर्णता अवश्य ही आ जानी चाहिए थी.

अन्य गुरु-पदाधिकारी महानुभाव

अपने परिवार की सन्तान को श्रीमान लालाजी महाराज ने परमसन्त सद्गुरु महात्मा जनाब अब्दुल ग़नी खां साहब से ही दीक्षित कराया. सर्वश्री परमसन्त श्रीमान ब्रजमोहन लालजी, श्रीमान जगमोहन नारायण जी, श्रीमान राधामोहन लालजी इत्यादि को उन्होंने (लालाजी महाराज ने) इन्ही परमसन्त से दीक्षित कराया. बाद में इन्हीं संत द्वारा महात्मा ज्योतींद्र मोहन, महात्मा नरेंद्रमोहन (सुपुत्र महात्मा डॉ. कृष्ण स्वरुप साहब) आदि की भी दीक्षा हुई.

इस प्रकार लालाजी महाराज की दीक्षा दिए हुए अन्य वरिष्ठ शिष्य और भी थे जो लालाजी के सम्पर्क में रहे. ये इनके पास बराबर आते रहे और वे स्वयं भी कभी-कभी उनके निवास स्थानों पर जाते रहे. इनमें कुछ कृपा पात्र हैं :-

1. महात्मा डॉ. चतुर्भुज सहाय जी (एटा-मथुरा)

2. महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लालजी (सिकन्दराबाद)

3. महात्मा श्याम बिहारी लालजी (फतेहगढ़)

4.महात्मा श्रीमान सेवती प्रसाद जी (कासगंज)

5.महात्मा डॉ. श्याम लालजी (ग़ज़ियाबाद)

6.महात्मा श्री ठाकुर राम सिंह जी (जयपुर)

7.महात्मा पंडित हीरा लाल जी जोशी (रावटी-रतलाम)

8.महात्मा प्रभु दयाल जी (कानपूर)

9.महात्मा भवानी शंकर जी (उरई)

10.महात्मा शिवनारायण दास उर्फ़ गाँधी जी (कानपूर), इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं.

उपरोक्त सभी महापुरुषों ने पूज्य लालाजी महाराज के आध्यत्म के प्रचार-प्रसार का कार्य बखूबी किया. इन्हीं शिष्यों में एक इस दास (लेखक) का नाम भी जोड़ लीजिये जो सबसे कनिष्ठ रहा है.

(सम्मानित लेखक की पुस्तक "रामाश्रम सत्संग की साधन पद्धति" से साभार)

==========

इन ईश्वर के दिव्य दूत संतों की एक विलक्षण सिद्ध या विशेषता यह होती है कि उनके शिष्य समाज में सभी को यह आनंदमयी अनुभूति होती है कि उनके गुरु उन्हें ही सबसे अधिक स्नेह करते हैं. शायद ऐसी ही प्रतीति सद्गुरु सानिध्य में रहे उनके प्रमुख कृपापात्र शिष्यों को भी उत्तराधिकारी होने की होती हो ताकि वे उनके मिशन को अपनी तन-मन-धन द्वारा सेवा करने का सौभाग्य पाकर अपना तथा औरों का उद्धार कर सकें. इसी सन्दर्भ में आदरणीय डॉ. महेश चंद्र की पुस्तक "सवाने उमरी " (पृष्ठ 22) का एक प्रसंग उद्धृत है :-

उनके प्रसंग के संकलन के बारे में शायद गुरु अपना परिचय हम मूढ़ बुद्धि के लोगों को इसी माध्यम से देना चाहते थे. मेरे निवेदन के उत्तर में उन्होंने तुरन्त कहा - " इस कताब का नाम 'संत वचन ' रखो.दूसरे शब्दों में यों समझ लें कि संत वचन का परिचय लिखा गया तो इस सेवा का सौभाग्य मुझे मिला और मैं परिचय लिखकर उसकी पुष्टि करने उनकी सेवा में गया.

जाड़ों के दिन थे. दिल्ली में श्री भजनशंकर जी के घर आप पधारे हुए थे. प्रातःकाल का समय था. वहीँ सरदारजी भाई साहब भी मौज़ूद थे. मुझसे गुरुदेव ने पूछा - " क्या कुछ लिखकर लाये हो ?" मैंने निवेदन किया -" जी हाँ, लिखकर तो लाया हूँ.", "अच्छा, सरदारजी को बुला लो. बाबू भजन शंकर आप भी आ जाइये" - उन्होंने कहा ।

फिर पढ़ना शुरू हुआ. पढ़ते-पढ़ते एक स्थान ऐसा आया जहाँ आपने मुझे रोक दिया और स्पष्ट कहा - ***" देखो, यहाँ पर यह लिखो कि जैसे भगवान राम के साथ लक्ष्मण जी आये, कबीरदास जी के साथ धनी धर्मदास जी आये, गुरु नानकदेव के साथ गुरु अंगददेव जी आये, स्वामी रामकृष्ण परमहंस के साथ स्वामी विवेकानन्द जी आये, श्री शिवदयाल सिंह साहब के साथ राय साहब सालिग राम साहब तथा सरदार जयमल सिंह साहब आये, इसी तरह महात्मा रामचन्द्र जी महाराज मुझको आपने साथ लाये. "***

इससे स्वयं उनके श्रीमुख से पुष्टि हो गयी के वे एक अवतारी संत थे.

==========

प्रभु का हर दशा में आभार

भक्त एकनाथ की पत्नी उनके लिए बहुत अनुकूल थी, इसीलिए भक्त प्रसन्न होकर प्रभु से कहता, " मेरे नाथ ! तूने खूब दया करके मुझे घर में ही सत्संग प्रदान किया, ताकि मेरा ह्रदय हमेशा प्रभु के मार्ग में लगा रहे."

संत तुकाराम की पत्नी कर्कशा एवं प्रतिकूल थी तो भी भक्त तो खुश होकर कहता, " हे प्रभु ! घर में ही मेरी आसक्ति पैदा न हो, इस दृष्टि से ऐसी पत्नी प्रदान करके अब मेरा मन घर में जाने का नाम ही नहीं लेता. मुझे तो अब हमेशा तुम्हारे सानिध्य में ही रहना अच्छा लगता है."

नरसी मेहता की पत्नी संसार से विदा हो गयीं और उनका इकलौता पुत्र शामलशाह भी वंशबेल को बाँझ बनाकर मर गया. फिर भी भक्त के ह्रदय से तो संतोष पूर्ण शब्द ही झलकते थे, "भलू थ्यू भाँगी, जंजाल सुख भाजीशु श्री गोपाल."

इस प्रकार प्रभु के भक्त प्रत्येक परिस्थिति में प्रभु का उपकार ही देखते हैं. उनके मन में पत्नी के अनुकूल होने, प्रतिकूल होने या संसार के उजड़ जाने पर भी प्रभु का उपकार ही होता है ।

पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी के

गुरुजन तथा वंश-परिवारी

- श्री जयनारायण गौतम, अहमदाबाद

पूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी

प्रातः स्मरणीय संत प्रवर 'श्रीकृष्ण' ने उत्तरप्रदेश के सिकन्दराबाद में जब एक सौ वर्ष पहले ,पिताश्री भगवददयाल व माता श्रीमती विशन देवी के यहाँ आश्विन शुक्ल नवमी, विक्रमी संवत 1951 तदुनसार 15 अक्टूबर सन 1894 ईस्वी के पुनीत दिवस जन्म पाया होगा, उस समय 'वैदिक' भावना का आशीर्वाद " शत जीवी भव" में निहित आंतरिक आकाँक्षा उन माता-पिता के मन में सक्रिय रही होगी कि बेटा प्रसिद्धी प्राप्त शतायुष बने. इस ही भावना के अनुरूप 'श्रीकृष्ण' नामकरण हुआ. ऐसे व्यक्ति दुनिया में इनेगिने ही मिलते हैं जो 'यथानाम तथा गुण' वाले सिद्ध हुए हों, पर हमारे महामना 'श्रीकृष्ण' ऐसे ही खरे उतरे थे ।

'शत' शब्द का प्रथमाक्षर 'श' और श्रीकृष्ण शब्द का प्रथमाक्षर भी 'श' इस अनुरूपता की पुष्टि करते हैं कि महामना परम संत के समारोह आयोजन में 'जन्म शताब्दी' भाव सार्थक हुआ, फलतः चंहुओर प्रकाश की राशिमयां बरस रहीं हैं ।

इन महामना का भौतिक शरीर तो 76 वर्ष में दिवंगत हो गया था, पर मानवी कल्याण की भावना की प्रसिद्धि आज भी छिपी नहीं है. एक ओर सन 1994 ई. के जन्माष्टमी पर्व में उन 'वासुदेव' की याद में समस्त भारत देश नतमस्तक है कि उन्होंने स्वयं को ज्ञान, विज्ञानं, कर्म, उपासना के रहस्य का प्रतीक बनकर दिखाया था, तो दूसरी और संत प्रवर डॉक्टर 'श्रीकृष्ण' ने आचरण, गृहस्थ धर्म, जीवन का समुच्चय स्वयं बनकर दिखाया कि जन साधारण उस व्यवहार को अपनाकर अपनी गिरी पड़ी वर्तमान स्थिति से उभर सके. इन्हीं कल्याणकारी महान विभूति की पृष्ठभूमि में रहे उनके गुरुजन तथा वंश-परिवार का संक्षिप्त सा परिचय, अपरिचित प्रेमी भाई-बहनों के लाभार्थ पुनः प्रस्तुत है.

गुरुदेव के गुरुजन

पूज्य गुरुदेव के परम पूज्य गुरु महाराज महात्मा रामचन्द्र जी अपने इलाक़े के एक प्रसिद्ध कायस्थ घराने चौधरी ख़ानदान के चौधरी हरबख़्श राय जी के सुपुत्र थे. चौ. हरबख़्श राय के दूसरे सगे भाई का नाम चौधरी उल्फ़त राय सक्सेना था. चौधरी हरबख़्श राय के दो पुत्र थे - (1) महात्मा रामचन्द्र, और (2) महात्मा रघुवर दयाल. उधर चौ. उल्फ़त राय के दो पुत्र - (1) श्री राम स्वरुप, (2) डॉ. कृष्णस्वरूप जी थे. रामचन्द्र जी का जन्म बसन्त पंचमी पर्व के दिन

02-02-1873 को हुआ था. पढ़े एवं आध्यात्मिक शिक्षा जनाब फ़ज़्ले अहमद खां साहब से पायी. आपको शिक्षक पदवी 23-01-1896 को मिली एवं आचार्य (ताअम्मा) पदवी के 11-10-1896 को पुष्टिकरण हुआ. सत्संग कार्य प्रसारण 1914 ई. से किया, कुल आयु 58 वर्ष में 15-08-1931 को 01.00 बजे (रात) को शरीर का निधन हुआ था. इनकी समाधि फ़तेहगढ़ में कन्नौज मार्ग पर है.

पूज्य महात्मा रामचन्द्र जी (लाला जी) महाराज ने सबसे पहला सत्संग इलाहबाद (प्रयाग) में 1929 में किया था. विचारों में 'सन्तमत' के अनुयायी थे. हिंदी, उर्दू, फ़ारसी व अंग्रेजी भाषाओँ में प्रवीण थे. दान-दक्षिणा नहीं लेते थे - यदि कभी किसी ने हठ पूर्वक श्रद्धा से कुछ दिया भी तो तुरन्त 'सत्संग' कार्य में लगा देते. मनुष्य का आध्यात्मिक, सामजिक उत्थान उनका ध्येय रहा. स्वामी ब्रह्मानन्द सन्यासी उनके मित्र थे एवं उनके न्योछावर शिष्य रहे. हमारे पूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी.

महात्मा रामचन्द्र जी के बाद कुछ काल उनके पुत्र मा. जगमोहन नारायण ने कार्य संचालन रखा - उनको दीक्षा मौ. अब्दुलग़नी खां साहब ने दी.थी. मा. डॉ. महेश्वरी सहाय ने उज्जैन में (शिष्य मा. रामचन्द्र - सहपाठी मित्र डॉ. श्रीकृष्ण तथा म.बा. श्यामबिहारी, पोस्टमॉस्टर, फ़तेहगढ़ ने लोकल कार्य देखा. और म.पं. हीरालाल जोशी रावटी (रतलाम) शिष्य लाला जी + डॉ. कृष्णस्वरूप जी - ने मध्य प्रदेश में सत्संग कार्य चलाया ।

महात्मा श्री रघुवर दयाल जी

महात्मा रघुवर दयाल जी म. रामचन्द्र जी के सगे छोटे भाई एवं म. रामचन्द्र जी की तरह गृहस्थी साधु थे - गुरु परम्परा में अटूट विश्वास था एवं मौलवी फ़ज़्ले अहमद खां के शिष्य थे. म. रामचन्द्र जी को उन्होंने मात्र बड़े भाई ही नहीं, अपितु गुरुवत श्रद्धा दी. इनका जन्म भी करवाचौथ के दिन 07-10-1875 को हुआ. 1911 ई. को होलिका पर्व पर श्री लाला जी से आचार्य पदवी मिली थी जिसकी 1913 ई. में जनाब मौ. अब्दुलग़नी खां. ने पुष्टि की थी ।

आपका स्वभाव अत्यन्त विनोद प्रिय था और शिक्षा की प्रणाली भी इसी रंग में रमी हुई थी. इनका आशीर्वाद सबको सहायक था. इनका कार्यक्षेत्र कानपुर रहा, और इन्होने काफ़ी प्रसद्धि पायी. इनकी समाधि भी कानपुर में है. वहीँ हर वर्ष भण्डारा आयोजित किया जाता है. आपने 07-06-1947 को कानपुर में शरीर त्याग किया था. इन्हीं के नाम पर कानपुर में 'रघुवर नगर ' है

पूज्य बैनर्जी साहब का सानिध्य

एक अन्य सन्त श्री अक्षय कुमार बैनर्जी से गोरखपुर में मिलन 1958 में हुआ. उनसे भी श्री गुरुदेव को प्रेमदान 1966 तक मिला. वे 'शिव सिद्धान्त प्रणाली' के सिद्ध पुरुष थे एवं समय-समय पर उपयुक्त मार्गदर्शन देते रहते थे. श्री गुरुदेव ने पुनः अपना 'गुरु' बैनर्जी साहब को नहीं बनाया था, पर आदर उनके प्रति वैसा ही था. सन्तों में दुइ नहीं होती. श्री बैनर्जी साहब अपनी आध्यात्म प्रसादी श्री गुरुदेव को दे गए थे - श्री बैनर्जी साहब के लिखित गूढ़

रहस्यों को स्पष्ट करने वाले विचार अंग्रेजी में लिखित - Discourses on Hindu Spiritual Culture नामक तीन पुस्तकों में पूज्य गुरुदेव ने वर्तमान अध्यक्ष डॉ. करतार सिंह जी के संरक्षण में दिल्ली में करवाया.

गुरुदेव के गुरुभाई

महात्मा . डॉ. कृष्णा स्वरुप जी

महात्मा. डॉ. कृष्ण स्वरुप जी, जयपुर, सुपुत्र चौ. उल्फ़तराय, म. रामचन्द्र जी के चचेरे भाई थे, एवं उन्हीं की आज्ञा से महात्मा फ़ज़्ले अहमद साहब से दीक्षा ली थी. परन्तु तरबियत म. रामचन्द्र से पायी थी. उनकी जन्मतिथि 22-12-1879 है. आगरा मेडिकल कॉलेज से 1905 में पास करके डॉक्टर बने थे.

म. रामचन्द्र से उन्हें 1931 के प्रारम्भ में आचार्य पदवी मिली थी. वे 1915 से 1920 तक रतलाम ज़िले के रावटी में सरकारी डॉक्टर थे एवं उनके ही यहाँ काम करने वाले प्रिय शिष्य थे पं. रेवाशंकर और श्री हीरा लाल जोशी (बाप्पा जी) फिर वे 1920 से 1934 तक अजमेर और 1934 से 1958 तक जयपुर रहे एवं 19-09-1958 को जयपुर में शरीरान्त हुआ. आपने सत्संग प्रसार राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में किया.

महात्मा. डॉ. चतुर्भुज सहाय जी

. डॉ. चतुर्भुज सहाय जी का कार्यक्षेत्र पहले एटा फिर मथुरा में ही मुख्यतः रहा. वे. भी म. रामचन्द्र के शिष्य थे. उनका जन्म कासगंज के ही समीप ग्राम चमकरी में 03-11-1883 ई. कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को हुआ था. पिताश्री का नाम था श्री रामप्रसाद कुलश्रेष्ठ. प्लेग की महामारी के दिनों में डॉ. चतुर्भुज सहाय जी ने सतत 'फ्री' सेवा दी थी.

विचारों में स्वतन्त्र दार्शनिक हिन्दुत्व प्रभाव के थे एवं दार्शनिक इतिहास की जानकारी का बाहुल्य उनमें था. अनेक पुस्तकें उन्होंने प्रकाशित करीं थीं. 'साधन' पत्रिका (मथुरा) उनकी संस्था का मुख्य प्रकाशन है. उनकी यौगिक प्रणाली में 'प्रकाश' का महत्त्व रहा है. ७४ वर्ष की आयु पर शरीरान्त मथुरा सत्संग भवन में हृदयगति रुकने से हुआ. डॉ. साहब के बाद उनकी

पत्नी 'जियामाता' के नाम से सत्संग चलाती रहीं. उनके पुत्र डॉ. विजेंद्र कुमार एवं श्री हेमेंद्र कुमार ने दीक्षा डॉ. श्रीकृष्ण जी से ली थी. साधन मासिक पत्रिका को अब उनके पुत्र प्रोफेसर (डॉ) नरेन्द्र कुमार मथुरा से चला रहे हैं.

महात्मा. श्री बृज मोहन लाल जी

आपका जन्म रामनवमी के पवित्र दिन 31-03-1898 को पूज्य लालाजी के गुरु महाराज पूज्य हुज़ूर जनाब रायपुरी साहब के आशीर्वाद से पूज्य चच्चा जी महाराज के सुपुत्र के रूप में हुआ. साँसारिक व आध्यात्मिक शिक्षण पूज्य लालाजी से पाकर भौगाँव वाले मौलवी साहब ने अपनी पगड़ी इनके सिर दशहरे पर सन 1928 में बाँधी और पूज्य लालाजी ने ही इन्हें सम्पूर्ण आज्ञाएँ दिनांक 31-01-1928 को प्रदान कर दीं.

पू. लालाजी के कहने पर थानेदारी छोड़कर क्लर्की करी व जीवनयापन पूरी निष्ठां और सादगी से किया. आप पूज्य लालाजी की भाँति भजन बहुत सुरीले ढंग और भाव से गाते थे. आप सिकन्दराबाद और मथुरा भण्डारों में भी जाते थे. इनके दो पुत्र हुए, श्री ओंकार नाथ जी तथा मुन्ने बाबू और शिष्यों में प्रमुख रहे सर्वश्री पेशकर मोहन लाल (बुलन्दशहर) , पेशकर कुंवर बहादुर (बरेली) और यशपाल जी (देहली) में सत्संग कार्य करते रहे.

अन्य सद्गुरूजन

संगत की सेवा जहाँ एक ओर उत्तराधिकारी करते हैं - तहाँ अपने आपको दबा या छुपाकर अन्य भाई लोग भी अपने आपको सेवा में व्यस्त रखते हैं. म. रामचन्द्र जी, म. रघुवरदयाल जी एवं डॉ. कृष्णा स्वरुप के बाद यशस्वी भक्तों में जयपुर के ठाकुर रामसिंह के बाद डॉ. हरिनारायण सक्सेना जी हैं. वे अब जीर्ण-शीर्ण परिपक्व आयु में भी फ़तेहगढ, कानपुर, लखनऊ, रावटी, सिकन्दराबाद, ग़ज़ियाबाद, भण्डारों में सम्मिलित होते रहते हैं. इन्होने भी अंग्रेजी, हिंदी में 'दर्शन' विषय पर कई पुस्तकें लिखीं हैं. डॉ. हरनारायण जी ने मार्च 1928 में म. रामचन्द्र से दीक्षा ली थी एवं तकमील म. रघुवर दयाल, म. डॉ. कृष्ण स्वरुप जी से पायी थी और अब

वे पूरी तरह से सत्संग समर्पित जीवन में रहते हैं. अपने पुत्रों को दीक्षा डॉ. सरदार करतार सिंह जी से दिलाई है ।

वंश परिवार - संस्कारी माता पिता

परम पूज्य महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी के पिता जी, श्री भगवत दयाल भटनागर, मुहल्ला कायस्थवाड़ा, सिकन्दराबाद (जिला बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश) के कौटुम्बिक निवासी थे, कि जो अपनी सर्विस की अवधि में पर्याप्त समय फ़तेहगढ़(फ़र्रुख़ाबाद, उ.प्र.) में सार्वजनिक निर्माण विभाग में 'ओवरसियर ' रहे. 'सर्विस' के बाद सिकन्दराबाद में आटे की बिजली की चक्की चला रखी थी. शरीर से लम्बोतरे, गौर वर्ण के थे. पिताश्री डेरा बाबा जयमल सिंह, व्यास, जिला अमृतसर (पंजाब) के 'राधास्वामी' सत्संग के अनुयायी थे, एवं स्वयं संत सावनसिंह जी महाराज के शिष्य थे और उनकी पत्नी स्वनाम धन्य 'श्रीमती कृष्णा जी इन्हीं महाराज सावन सिंह जी से दीक्षित थीं, जो आजन्म अंतिम सांस तक हुज़ूर सावन सिंह जी की पुस्तिका संतमत का नित्य पाठ करती रहीं. इस प्रकार घर में शुद्ध सात्विकी वातावरण था.

जन्म एवं शिक्षा-दीक्षा

महामना डॉक्टर श्रीकृष्ण लाल जी सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश) का जन्म आश्विन शुक्ला नवमी (श्राद्ध पक्ष) के बाद पवित्र नवरात्र पर्व की मंगलवार संवत 1951 विक्रमी, तदनुसार 15-10-1894 का है. सुन्दर छवि व हृष्ट-पुष्ट शरीर के पाँच फुट साढ़े सात इंच के थे. श्रीकृष्ण जी का विवाह 1916 ई. में हुआ था. आपने 76 वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला 12 संवत 2027 वि. सोमवार तदनुसार 12 रबी उलअव्वल बारे वफ़ात दिनांक 18-05-1970 को शरीर छोड़ा.

युवा श्रीकृष्ण लाल ने एस. एल. सी. एन्ट्रेंस पास करने के बाद कुछ समय 'क्लर्की', फिर 'टीचरी' करी पर असंतुष्ट से रहते थे. इस पर गुरुदेव की अद्भुत कृपा से डॉक्टरी करने की इच्छा पूर्ण हुई.

उनकी भेंट महात्मा रामचन्द्र से 1914 ई.में फ़तेहगढ़ में हुई थी एवं पूर्वजन्म के संस्कारों ने यकायक ज़ोर मारा, कि 1915 ई. में उनको म. रामचन्द्र ने आगे शिष्य वर्ग को उपदेश करने की अनुज्ञा दे दी. मई स. 1920 ई. में श्री लालाजी ने 'इज़ाज़त ता अम्मा ' मौखिक दी फिर उसको ही 1931 में लिखित प्रदान कर दी थी कि जिसकी तसदीक़ (पुष्टि) मौ. अब्दुलग़नी खां साहब ने करी थी ।

गुरुदेव के भाई-बन्धु

परमपूज्य म. श्रीकृष्ण ने भाइयों को पढ़ाया. दूसरे भाई श्री गिरवर कृष्ण जी भी श्री लालाजी महाराज से दीक्षित थे. वे पंजाब एवं दिल्ली में इनकम टैक्स अधिकारी रहे एवं हमारे वर्तमान अध्यक्ष आचार्य डॉ. करतारसिंह जी के साथी थे, तीसरे भाई 'बैनी' का शादी से पहले ही निधन हो गया था. चौथे भाई डॉ. महाराज कृष्ण भटनागर (अब 84 वर्ष) रिटायर्ड हेल्थ ऑफीसर, ग़ाज़ियाबाद में रहते हैं - जिन्हें पू. डॉ. श्रीकृष्ण जी ने दीक्षा परमपूज्य म.रघुवर दयाल (चच्चा जी) से दिलवाई थी एवं सत्संगी तरबियत स्वयं देते रहे. अब वे तन-मन-धन से सत्संगी सेवा में रत हैं. पाँचवे भाई जगदीश कृष्ण जी को पढ़ा-लिखा कर केन्द्रीय सार्वजनिक निर्माण विभाग में 'ओवरसियर' कराया था, वे श्री गुरुदेव से दीक्षित थे.

तीनो बहनोइयों में से बड़े बहनोई श्री बलबीर सहाय भटनागर महात्मा श्री बृजमोहन नारायण म. रघुवर दयाल, चच्चा जी महाराज के शिष्य थे.दूसरे बहनोई डी.ए.वी.कॉलेज बुलन्दशहर के प्रिन्सिपल थे एवं तीसरे बहनोई वेस्टर्न रेलवे में सीनियर पी.डव्लू.आई. इंजीनियर थे ।

सुयोग्य सुपुत्र

परम् पूज्य डॉक्टर साहब के बड़े सुपुत्र डॉक्टर हरिकृष्ण जी ने अपने पूज्य पिता जी की डाक्टरी दुकान सम्भाली थी कि जिस पर आज भी उन्हीं के पौत्र डॉ. नरेन्द्र बैठते हैं. माननीय डॉ. हरिकृष्ण तीनों भाइयों में आध्यात्मिक शिक्षा में सबसे अग्रणी रहे और आजीवन सत्संग कराते रहे. आपको पूज्य गुरुदेव ने 'इज़ाज़त ता अम्मा ' देकर पूर्णाचार्य भी बनाया.

पूज्य डॉ. साहब के दूसरे सुपुत्र श्री राधाकृष्ण हैं जो देहली में राजकीय लेक्चरर थे, अब निबृत आयु में ग़ाज़ियाबाद अपने फ्लैट में रहते हैं - एवं पर्याप्त पढ़ी-लिखी संतानों के पिता हैं. तीसरे सुपुत्र श्री गोपाल कृष्ण जनरल इंश्योरेन्स के सीनियर अधिकारी हैं एवं अपने मकान में ग़ाज़ियाबाद में रहते हैं. सभी की सत्संगी वृतियाँ हैं ।

oooooooooooo

पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

- डॉ. करतार सिंह

परम् पूज्य गुरुदेव की जन्म-शताब्दी के महत्वूर्ण सुअवसर पर कोई विशेष लेख, संस्मरण या श्रद्धांजलि के भाव व्यक्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है. आपके पावन सम्पर्क, सानिध्य में बिताये स्वर्णिम समय की साक्षात अनुभूतियों तथा जीवनोपरान्त भी परोक्ष कृपाओं की स्मृतियों का इतना बड़ा भण्डार है कि उसकी एक-एक बात हमारी - सभी कृपापात्रों की - अमूल्य निधि है. तो भी, कर्तव्य पालन की दृष्टि से अपनी मनोभावना को प्रकट करने वाले प्रभावशाली सुधियों के आनन्दमय कुछ संस्मरण उन्हीं को पुनः समर्पित हैं.

प्रथम भेंट का सौभाग्य

परम् पूज्य गुरु महाराज से मेरी पहली मुलाक़ात सन 1951 में हुई. मेरे मित्र बाबू श्री रामजी वकील, मुझे यह कहकर ' चलो एक परम् संत के दर्शन कर आयें' बाबू गिरवर कृष्ण जी के मकान पर ले गए. वहाँ सत्संग हो रहा था. कुछ विशेष आकर्षण का अनुभव हुआ. सत्संग की समाप्ति पर वकील साहब ने जाने की आज्ञा माँगी. गुरुदेव ने इज़ाज़त दे दी. मैने भी अनुमति चाही तो आपने कहा - " आप रुकिए." इन दो शब्दों में अद्भुत प्रेम था. कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात् गुरुदेव कहने लगे कि ' हम आपके घर चलेंगे'. आप मेरे साथ घर आये, भोजन किया. बड़े प्रसन्न हुए.

अनुपम कृपा की अनुभूति

इस मुलाकात के बाद, आप जहाँ भी जाते मुझे साथ ले जाते. 1952 में आपकी विशेष कृपा हुई. एक समय मैने अपने आपको प्रकाश के एक महान सागर में पाया. इस अवस्था को बर्दाश्त न कर सका और घबरा गया. होश आने पर मैने एक असीम आनन्द का आभास किया. आपके चरणों में पत्र डाला. आपने उत्तर दिया - ***" आपको पहले ही दिन जन-सेवा के लिए चुन लिया था. वह बड़ा ख़ुशक़िस्मत है जिसको वह (परमात्मा) इस काम के लिए चुन***

लेता है. सबसे बड़ी ख़िदमत यह है कि गिरे हुए और भटकते हुए इन्सान को राहेरास्त (सीधे रास्ते) पर लाया जाए."

मन में बार-बार चाह उठती थी कि ग्रह त्याग कर सन्यासी हो जाऊँ. गुरुदेव से आज्ञा माँगी तो उन्होंने लिखा

" आप दुकान पर मालिक की हैसियत से काम न करें, बल्कि एक मुलाज़िम की हैसियत से रहें - और हैं भी आप मुलाज़िम. ग़लती से अपने आपको मालिक समझे हुए हैं. अगर दुकान आपकी होती तो आपके साथ आयी होती, आपके साथ जाती, पर क्या ऐसा है ? नहीं. यही आपकी परेशानी का बायस (कारण) है." आप फ़रमाया करते थे कि तपस्या जंगलों में जाकर नहीं होती. हमारे यहाँ तप अपने मन को साधने में है. कुछ अमूल्य निर्देश लिखे जाते हैं, जैसे -

1. किसी को दोष दृष्टि से मत देखो.

2. जो आपसे बुरा सलूक करें उनसे क्रोधित न हों, अन्तर में टटोलो कि क्या आपकी गलती के कारण तो दूसरा आपसे दुर्व्यवहार नहीं करता ?

3. सहनशीलता बढ़ानी चाहिए. घृणा करने वाले को प्रेम से अपना बनाओ.

4. प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम करो. सदैव यह विचार करो कि अन्य व्यक्ति भी आपसे प्रेम करते हैं ।

5. अपना चरित्र पहाड़ की चट्टान की तरह बनाओ. तब परवाह मत करो कि लोग क्या कहते हैं ।

एक बार कुछ ख़ालीपन (शून्यता) का अनुभव हुआ. गुरुदेव ने कहा - *" ये अच्छी अवस्था थी. चिन्ता मत करो, अच्छा है थोड़ी देर रही., परन्तु आनन्द की अवस्था भी ममता है, फँसाने वाली होती है. उससे भी आगे चलना चाहिए. राज़ी-बा-रज़ा की स्थिति में आओ."*

गुरुदेव का निःस्वार्थ प्रेम व त्याग

आप ज़रूरतमन्दों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर व उत्सुक रहते थे. कभी-कभी तो बेचैन हो जाते थे. अगस्त 1956 में डॉ. श्यामलाल जी ने आपको लिखा, " मैं आज तक यह नहीं समझ सका कि वो कौन सी चीज़ मुझमें है कि आपकी इतनी दया और बुज़ुर्गों का हाथ मेरे ऊपर रहा. मैं अपने को टटोलता हूँ, तो किसी का न हमदर्द, न शुभ इच्छुक, और न मददगार पाता हूँ, फिर भी मुझ पर इस क़दर आपकी कृपा है. उस वक्त मैं भी घबरा गया था. शुक्र है, आपकी दुआ क़बूल हुई."

गुरुदेव किसी को दुखी नहीं देख सकते थे. 22-11-65 के पत्र में आपने लिखा - *" मुझको मालूम हुआ कि आपकी तबियत ठीक नहीं है, ये भी उसकी कृपा है. बुरे कर्म इसी तरह कटते हैं. इसलिए घबराना नहीं चाहिए. हर हालत में शुकराना वाज़िब है. हर हालत में पूरी श्रद्धा से उसका नाम लेते रहो और ध्यान रखो कि वो हर वक्त तुम्हारे साथ है, और दुनिया से पीछे हटते जाओ. बग़ैर तर्क़ (त्याग) के प्यार अधूरा है और जब सब छोड़ना ही है, तो क्यों न धीरे-धीरे छोड़ते चलो.?"*

सदा दुःख हरने को तत्पर

इन दिनों कुछ स्थिति ऐसी हो गयी थी कि मैं घबरा गया था. आपने लिखा - *" आपकी परीक्षा का यह समय है. देखना फ़ेल (असफल) न होना. उस ईश्वर पर भरोसा रखो, जो भी होगा आपके हित के लिए होगा. आप मत आइये. मैं आपके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ. " आपकी असीम कृपा हुई, स्थिति धीरे-धीरे सुधरती गयी.*

बाबू प्यारे मोहन जी को गुरुदेव अक्सर मिलने जाया करते थे. कहा करते थे, ' कान्ती के सन्तान नहीं है. सत्संग ही इन बेचारों का वंश है. इससे उनको (कान्ती बहन व प्यारे मोहन जी को) राहत मिलेगी" . डॉ. महेश चन्द्र जी की धर्मपत्नी अक्सर बीमार रहती थीं, इसलिए आप अक्सर आगरा जाया करते थे.

भाइयों को कष्ट में देखकर गुरुदेव दुःखी हो उठते थे. उनका दुःख अपना दुःख समझते थे. तन, मन, धन से, जैसी भी स्थिति हो, उनकी सहायता करते थे. कुर्बानी का अंश आपमें इतना था कि मैने अन्य किसी पुरुष में अब तक नहीं देखा. मेरी धर्मपत्नी मौत के पंजे में थी, गंगाराम हस्पताल में बैठे थे, आपने कहा - *" बहन को बचाने के लिए ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना की, अपनी शेष आयु भी अर्पण की है ताकि वो ठीक हो जाय, परन्तु ऊपर से निराशाजनक उत्तर मिलता है. अब वो कुछ घंटों की मेहमान है."*

सत्संगी जनों की सेवा

गुरुदेव सत्संगियों को अपने बच्चों से भी अधिक प्रेम करते थे. अपने गुरुदेव की सन्तान समझते थे. कभी -कभी तो कह देते थे कि ये हमारे गुरु हैं, उसी रूप में उनकी सेवा करते थे. प्रेमियों से कहा करते थे, " जो कुछ हमारे पास है सो आपका है, यदि इससे भी अधिक हो तो वो भी हम न्योछावर करने के लिए हमेशा तैयार हैं.".

अगस्त 1958 में, मैं आपकी सेवा में ग़ज़ियाबाद गया. पहुँचते ही सेवक को आराम करने के लिए कहा. कुछ देर बाद आपने कहा कि आप स्नान कर लीजिये. एक नई धोती मुझे दी. मैं ग़ुसलख़ाने में चला गया. वहाँ बर्तन व जल रखे हुए थे. मैं अपना जूता ग़ुसलख़ाने के बाहर छोड़ गया था. जब मैं स्नान करके निकला तो चकित रह गया, जूता कमरे में रखवा दिया गया था, बाहर मेरे लिए खड़ाऊं रखी मिलीं. सत्संगियों के स्नान के लिए स्वयं जल रख दिया करते थे - उनके लिए चाय भी स्वयं बना दिया करते थे. सत्संगियों को अपना परिवार समझते थे और कहा करते थे कि उनकी सेवा गुरु-सेवा है. और ऐसे ही प्रत्येक की सेवा करते थे.

आपकी क्षमाशीलता

पूज्य गुरुदेव क्षमा की सजीव मूर्ति थे. एक बार मुझसे कुछ गलती सी हो गयी. समझाते हुए आपने कहा -" शत्रु के मुँह पर थूकने पर भी हज़रत अली ने क्रोध नहीं किया था. क्रोध से अपना ही मन अशान्त होता है. इसलिए संयम में रहना चाहिए."

योग्य पात्रों को शिक्षा

सन १९५८ के भण्डारे पर कुछ व्यक्तियों को आपने शिक्षा देने की आज्ञा प्रदान की. उनसे कहा कि -

1. सेवा करना परन्तु अपनी सेवा न कराना.
2. पूजा का धन अपने ऊपर व्यय न करना - यदि भेंट कभी लेनी भी पड़े तो उसे किसी की सहायता में खर्च कर देना
3. अपना चरित्र ऊँचा रखना ताकि औरों पर प्रभाव पड़े.
4. भाइयों के दुःख में उनकी सहायता करना.
5. किसी का मन, वचन, कर्म से दिल न दुखाना.
6. भाइयों में परस्पर प्रेम उत्पन्न करना. हमारे यहाँ पहले ईश्वर या गुरु से प्रेम पैदा करते हैं.
7. साधन में - यानी सुरत-शब्द-योग में -उत्साह, सोज़ व प्रेम होना चाहिए. प्रत्येक सांस पर ध्यान रखना चाहिए कि अभ्यास हो रहा है.
8. मन तथा इन्द्रियों को वश में लाना है.

चमत्कार व तमाशे

आप एक बार मौज़ में बैठे थे, एक सत्संगी को पत्र लिखा कि उसका पुत्र पास हो जायेगा तथा दूसरा लड़का क्षय रोग से निरोग हो जायेगा. ऐसा ही हुआ, पहले लड़के ने प्रश्न -पत्र ठीक नहीं किये थे और दूसरा लड़का ठीक होने वाला नहीं था. जब सन्त आत्मा के स्थान पर होता है, तब वह जो कहता है वैसा ही हो जाता है. सन्त से करामात, कभी- कभी इच्छा न रखते हुए

भी, अनजाने में हो जाती है. आप फ़रमाया करते थे - " करामात दिखा कर अपनी प्रसिद्धि करवानी या धन बटोरना, ये सन्त के लिए वाज़िब नहीं है. करामात फ़क़ीरी नहीं है. यदि सेवक के पास रिद्धि-सिद्धि आती है तो गुरु उनसे वंचित करा देते हैं, ताकि परमार्थी में अहंकार न आ जाए."

पूज्य बनर्जी साहब का सन्सर्ग

सन 1960-62 में गोरखपुर पहुँचने पर गुरुदेव को शिव भगवान के दर्शन हुए. आदरणीय बनर्जी साहब से पहली बार मुलाक़ात हुई तो आपने कहा कि, " उनकी शक्ल भगवान शिव जैसी लगती है."

एक रोज़ हम पूज्य बनर्जी साहब के दर्शन करके लौट रहे थे, तो आपने कहा, " आज ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे तमाम श्रष्टि हमसे निकल रही हो." दूसरे दिन भी मौज़ में थे, फ़रमाया, " हमारे तथा परमात्मा में क्या अन्तर है ?" कुछ क्षण मौन धारण करने के पश्चात् प्रश्न किया - " श्रष्टि सुखरूप है या दुःखरूप ?" फिर स्वयं ही उत्तर दिया - "यदि हमारी सुरत आत्मा पर है तो श्रष्टि सुखरूप प्रतीत होती है और यदि यह मन तथा बाहर की ओर हो तो दुःखरूप."

पारमार्थिक लक्ष्य व अभ्यास

गुरु कौन है ? आप कहते थे, " *असली गुरु परमात्मा है. उसके चरणों से प्रकाश तथा शब्द जारी हुआ. यह निचले दर्ज़े के गुरु हैं. इसका भाव यह है कि शब्द 'शिष्य' है तथा ईश्वर प्रेम 'गुरु' है. इसका भाव यह है कि शब्द के पश्चात् शरीर बना. इसीलिए साधना के प्रारम्भ में गुरु के रूप का ध्यान किया जाता है, परन्तु यह सदैव ऐसा नहीं किया जाता. जिस समय प्रकाश या शब्द खुल जाये, तब इनका ध्यान करना चाहिए. जब प्रेम का उदय हो जाये तब उसमें लीन हो जाना चाहिए. प्रत्येक स्थान व स्थिति में गुरु का ख्याल अवश्य होना चाहिए. जैसे एक पिता अपनी कन्या को पढ़ा लिखाकर तैयार करता है और उसे उसके पति को अर्पण कर देता है, ऐसे*

ही गुरु अपने शिष्य की गढ़त करके ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देता है. असली गुरु ईश्वर है. परन्तु बिना सीढ़ी के छत पर नहीं चढ़ा जा सकता, इसीलिए गुरु की आवश्यकता होती है."

आपका कहना था - *" गुरु वह होना चाहिए जिसने आत्म-स्थिति प्राप्त कर ली हो, या उसकी नज़दीकी (सामीप्य) हासिल कर ली हो. ऐसे व्यक्ति का मन अपने वश में होना चाहिए. उसकी कथनी तथा करनी एक जैसी होनी चाहिए ताकि जैसी अपनी अवस्था है वैसी शिष्यों की भी कर सके. यह आवश्यक नहीं कि वह व्यक्ति अपने को 'गुरु' कहलाये, वह भाई, पुत्र, सेवक सखा आदि का सम्बन्ध रखकर भाइयों की सेवा कर सकता है. ऐसा करने से अहंकार नहीं* होता."

कुछ और अनमोल बातें

o. एक बार मैने आपसे पूछा कि मन को कैसे काबू किया जाये? अपने प्रेम से कहा , " पिछले संस्कारों के कारण मन की वृत्तियाँ काम करती हैं. तमाशबीन (दर्शक) बन कर मन की हरकतों को देखो - यह मत समझो कि वह कर्म आपके हैं. कर्म जिनके गहरे संस्कार बन चुके हैं, वह तो भुगतने ही हैं, परन्तु यदि द्रष्टा के रूप में देखो तो दुःख नहीं होगा. अपने आपको कर्ता मत समझो. जैसे एक लट्टू को छोड़ दिया जाय, जब तक उसमें चाल है, वह घूमता रहेगा. यही अवस्था संस्कारों की है, जिस समय इनका अन्त हो जायेगा, शान्ति हो जाएगी. द्रष्टा तथा अकर्ता बने रहो, इससे संस्कार नहीं बनेगे. यदि कोई ऐसा नहीं करता, तो संस्कार बनते रहते हैं और कभी शान्ति नहीं मिलती.

o " ग़लती करके पश्चाताप करो. ईश्वर से क्षमा के लिए प्रार्थना करो. ग़लती करके justify (उसे सही साबित) मत करो कि आप ठीक हैं, यानी उसे उचित मत कहते रहो. यह मूर्खता है."

o " स्थूल संस्कारों से बचने के लिए गुरु का ध्यान करना चाहिए, सूक्ष्म संस्कारों के लिए 'सुरत शब्द अभ्यास' तथा कारण रूप संस्कारों से मुक्त होने के लिए आत्मा में लय होना चाहिए."

∘ " एक बार एक प्रेमी भाई ने शिकायत की कि उसको ईश्वर दर्शन क्यों नहीं होते? गुरुदेव ने उससे पूछा - "क्या अपकी खुदी मिट गयी है?" साधक चुप हो गया. आपने फ़रमाया - " जबतक अन्तर में ख़ुदी तथा इच्छाएं हैं, आत्मा का साक्षात्कार होना नामुमकिन है. इसलिए अपने आपको मिटा दो तथा ईश्वर में पूर्णता से लय कर दो. अहंकार रहित होकर सब कर्म करो और उनके फल ईश्वर के चरणों में अर्पण कर दो. ऐसा करने से ही आत्मा का विकास होगा और ईश्वर के दर्शन करने के क़ाबिल (योग्य) हो सकोगे."

==========

अनुभव के मोती

1. मनुष्य इस संसार में दो दिन का अतिथि है .

- भक्त तुकाराम

2. दुनियाँ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो कि हमेशा रहता हो.

- लॉर्ड टेनिसन

3. रोगों के आगार शरीर में, प्राण एक किरायेदार की तरह होते हैं .

- संत तिरुवल्लुवर

4. जिसे ईश्वर ने उत्पन्न किया वो नाशवान है. यह ऐसी उलझन है जिसे कोई इंसान आज तक सुलझा नहीं पाया.

- हाफ़िज़ साहब

5. आना घड़ी भर, जाना घड़ी भर. बिछौना मिटटी और ओढ़ना मिटटी फिर, ऐ बन्दे ! मौत का विचार न करके ये जो तूने लम्बा चौड़ा भवन तैयार किया है वो किसके लिए ?

- शेख नूरुद्दीन

==========

परमपूज्य महात्मा मुंशी रघुवरदयाल जी उर्फ़ चच्चा जी महाराज

- श्री प्रकाशचन्द्र वर्मा, कानपुर.

भक्ति भक्त भगवन्त गुरु - चतुर्नामि बपु एक !

तिनके पद बंदन करौं, नाशहिं विघ्न अनेक !!

पूज्य महात्मा रघुवर दयाल जी उर्फ़ श्री चच्चा जी महाराज का जन्म 7 अक्टूबर सन 1875 ई. को भूमिग्राम (भू-ग्राम या भौगाँव) ज़िला मैनपुरी में कायस्थकुलभूषण चौधरी हरबख्श राय जी के यहाँ हुआ था. श्री चौधरी साहब के पूर्वजों की आर्यकुशल सेवाओं से प्रसन्न होकर बादशाह ने इनको चौधरी की उपाधि प्रदान की और अनेक गाँव पुरुस्कार में दिए गए थे. समय के हेर-फेर से चौधरी जी फ़रुखाबाद आ गए और यहाँ पर सुपरिन्टेन्डेन्ट चुंगी नियुक्त हुए.

पूज्य चच्चा जी के बड़े भाई श्री पूज्य लालाजी महाराज (हमारे दादा गुरुदेव महात्मा रामचन्द्र जी) थे जिनके पादपदमों में श्री चच्चा जी की अपूर्व भक्ति थी. श्री लालाजी महाराज एक उच्चकोटि के महात्मा थे. इन दोनों भाइयों ने आध्यात्म शिक्षा रायपुर निवासी हज़रत मौलाना फ़ज़ल अहमद खां साहब के द्वारा प्राप्त की जो एक पहुंचे हुए सूफ़ी संत थे. आप इस विद्या को हिन्दुओं की विद्या कहा करते थे. आपने वेदान्त तथा सूफ़ी साधनों को मिलाकर एक ऐसा अनुपम प्रेम मार्ग निकाला जिसके द्वारा साधक गृहस्थी में रहते हुए भी गुरु की सहायता से षष्टचक्रों को बेधता हुआ अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच जाता है.

पूज्य चच्चा जी के माता-पिता का निधन बाल्यकाल में ही हो गया था. यद्यपि चौधरी हरबख्श राय जी बहुत बड़े आदमी थे और उनकी आमदनी भी बहुत थी, परन्तु आमोद-प्रमोद के जल्से और भोजों के कारण खर्चे भी अधिक थे. उनकी असायमिक मृत्यु के पश्चात् दोनों लड़के बिलकुल निर्धन हो गए और इन दोनों भाइयों ने बड़ी ही कठिनाई के साथ बड़े-बड़े कष्ट झेलकर तपोमय जीवन व्यतीत किया. श्री लालाजी महाराज ने कलक्टरी फ़तेहगढ़ में नौकरी कर

ली जिससे इन लोगों का जीवन निर्वाह होने लगा. श्री चच्चा जी अपने बड़े भाई की सेवा और आज्ञा पालन में सदा तत्पर रहते थे.

श्री गुरु महाराज के निर्वाण के बाद आप पूज्य लालाजी महाराज से ही आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करते रहे. श्री चच्चाजी फतेहगढ़ में तथा अलीगढ में प्रायः पूज्य लालाजी के साथ रहते रहे और जब पूज्य लालाजी महाराज का तबादला अलीगढ़ तहसील से फतेहगढ़ को हो गया तो श्री चच्चाजी महाराज अलीगढ़ में ही आकर रहे. श्री चच्चाजी महाराज के सुपुत्र श्रीमान भाई साहब ब्रजमोहन लाल जी एवं श्रीमान भाई साहब राधेमोहन लालजी कानपुर में नियुक्त हो गए तब आप सन १९२४ में उनके पास कानपुर में आ गये और अन्त समय तक वहीं पर रहे.

आपका स्वभाव बहुत सरल, मृदुल और विनोद प्रिय था. सदा प्रफुल्लित और प्रसन्न वदन रहते थे. उनका रहन-सहन भी साधारण गृहस्थ की तरह आडम्बर रहित था. सर्व समर्थ होते हुए भी तथा सदा शिष्य मण्डली से घिरे रहतें हुए भी कीर्ति कामना से सदा पृथक रहते थे. अहंकार तो आपमें छू तक नहीं गया था.

श्री चच्चाजी महाराज की शिक्षा देने की शैली बड़ी ही निराली थी. सत्संग का मुख्य समय तो सुबह-शाम रहा करता था परन्तु वैसे आपका दरबार दिन भर खुला रहता था. कभी-कभी तो हास्य विनोद में ही आपका सत्संग हो जाता था. सदा ही प्रेमी भक्तों की भीड़ आपके चारों ओर बेसुध सी बैठी आध्यात्मिक अमृतपान किया करती थी.

सुबह ओर शाम के मुख्य सत्संग में साधकजन आँख बंद करके ध्यान करते थे. उसी समय कभी-कभी साधकों को विशेष अनुभव होते थे. आप अपने आत्मबल से शिष्यों को उच्च स्थानों पर ले जाते और योग्य साधक होने पर पहले ही दिन आनंदमय कोष की सैर करा देते थे. ये अनुभव की बातें हैं जिनका प्रकट करना कठिन है.

योगी और सन्यासी तो अनेक होते हैं, ऐसे भी कई होते हैं जिन्होंने सिद्धियाँ भी प्राप्त कर ली हैं परन्तु वे अपने आत्मबल द्वारा शिष्य को रूहानी स्थान पर चढ़ाकर स्थिर करा दें, ऐसे

महात्मा बिरले ही मिलेंगे. आपने स्वयं को सदा एक सेवारत भक्त के रूप में रखा तथा तन-मन-धन से जिज्ञासुओं की सेवा में तत्त्पर रहे.

आपके शिष्यों में डाक्टर, वकील, पंडित, शास्त्री आदि एवं सामान्य सभी वर्गों के व्यक्ति शामिल थे. आपके द्वारा स्थापित 'सदावर्त' आज भी वैसे ही जारी है. आपके आदेश प्राप्त सुयोग्य शिष्य-प्रशिष्य भारत के अनेक नगरों में आध्यात्मिक शिक्षा दे रहे हैं.

अपने 7 जून सन 1947 को कानपुर में महासमाधि ली. समाधि मन्दिर हमीरपुर रोड पर, कानपुर से सांतवे मील पर सड़क के किनारे ही बना हुआ है. प्रतिवर्ष बसंत पंचमी के दिन वहाँ भण्डारे का विशेष उत्सव भी मनाया जाता है.

आर्य नगर, कानपुर निवासी गुरु भ्राता श्री शिवनारायण दास जी गाँधी श्री चच्चाजी द्वारा दिए गये उपदेशों को प्रतिदिन लिखते जाते थे, वही उपदेशामृत पीयूष वाणी में लेखक ने समाहित किये हैं.

=========

'आह' ने ताज़ा किया दुःख दर्द की हर याद को !

'वाह' ने फिर से दिया हर रूप गुण के स्वाद को !

'आह' करना छोड़ कर. वह कहना सीख लो !

परम पूज्य चच्चाजी महाराज के सदुपदेश

- श्री के.बी.सक्सेना, लखनऊ

परम पूज्य दादागुरु श्रीमान रामचन्द्र जी महाराज और उनके अनुज पूज्य चच्चाजी महाराज स्वभाव में एकदम विपरीत थे. जहाँ लालाजी महाराज अत्यंत गम्भीर थे वहीं चच्चाजी साहब बड़े विनोदी स्वभाव के थे. हँसी-हँसी में आध्यात्म के भेद बताते रहते थे. किन्तु उनकी शिक्षा का गाम्भीर्य निम्नलिखित वचन-उपदेशों में झलकता है :

* आध्यात्म का समुद्र उमड़ा हो, केवल परमात्मा ही जाने, पर बाहर से किसी को कुछ पता न लगे.

* ये इल्म (विद्या) सीना-ब-सीना है. छिपाकर रखना चाहिए नहीं तो बाहर के चोर चुपके से उठा लेते हैं.

प्रकट न होने पाए.

* निष्काम कर्मयोग से ही भक्ति-मणि की उपलब्धि होती है. नित्य निष्कपट भाव से सत्संग करना ही उसका प्रवेश द्वार है.

* अपने गुरुदेव की सच्ची सेवा तभी होती है जब उनका दिव्य सन्देश मौन रूप में सब भक्तजनों को दिया जाये.

* प्रभु जी से विनय करते रहना चाहिए कि अहंकार उदय न हो. यही (अहंकार) इस मार्ग का घोर शत्रु है.

* जब तक ह्रदय सांसारिक वासनाओं से भरा है, प्रभु का प्रेम नहीं उमड़ता.

सत्संगी भाई-बहनों को दैनिक दिनचर्या के विषय में उनकी बताई गयी कुछ अनमोल हिदायतें इस प्रकार हैं :

(1) आँख खुलते ही सबसे पहले बैठकर दुआ करें - " ऐ मेरे पाक परवर दिगार तू मेरा मालिक है, मैं तेरा बन्दा हूँ. तूने मुझे पैदा किया है. तेरे सिवा कोई बन्दगी के क़ाबिल नहीं है. मेरे उन सारे गुनाहों को जिनको मैं जानता हूँ और नहीं जानता हूँ, माफ़ कर. तूने मुझे जिन्दा सुलाया है और जिन्दा जगाया है, तेरा लाख-लाख शुक्र है".

(2) दाहिना पैर बिस्तर से नीचे रखकर दुआ पढ़ें - " ऐ मेरे परवर दिगार, तू मुझे राहे-रास्त पर चला. ऐ मेरे मालिक, मेरे बुज़ुर्गों का मर्तवा बुलन्द हो - उनकी कुर्बत (सामीप्य) नसीब हो और उनकी मेहरवानी बनी रहे."

(3) इसके पश्चात् शौच के लिए जाते समय बायाँ पैर आगे बढ़ाओ और पढ़ो - "ऐ मेरे पाक परवरदिगार मुझे ग़लत रास्तों से बचा."

(4) चेहरा धोते समय - चेहरे पर हाथ फेरते हुए यह समझो कि यह मेरा चेहरा नहीं बल्कि बुज़ुर्गों का चेहरा है. उसे धोओ और ख़्याल करो - " ऐ मेरे पाक परवरदिगार मुझे बुज़ुर्गों का सा नूर या जलवा फ़रमा."

(5) ख़ाली समय में कुछ दुआयें पढ़ते रहो जैसे - " नहीं है कुछ सिवाय मालिक के " या "तू है तू ही ". अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए.

(6) नहाने के बाद थोड़ी देर परमात्मा के ध्यान में अवश्य बैठो. इसके लिए भी कुछ दुआयें बोध लो तथा एक ही स्थान पर पढ़ा करो.

(7) भोजन करने के पहले परमात्मा का ध्यान करो, बुज़ुर्गों का ख़्याल बराबर रखो और मन ही मन यह कहो कि, " ऐ पाक परवरदिगार, इस खाने के उपरान्त उसका शुक्रिया अदा ज़रूर करो. बेहतर यह कहो कि यह भोजन बुज़ुर्गों को पहुँचे.

(8) मकान जहाँ हो, उसे तवज्जोह से भर देना चाहिए. बुज़ुर्गों का ख़्याल करो और ह्रदय में दूधिया का सब्ज़ रंग का ख़्याल करो. इससे घर का माहौल बदलता है.

(9) काम पर जाते समय दुआ करो, " ऐ मेरे पाक परवरदिगार मेरी हिफाज़त कर. काम की जगह को भी अपने नूर से भर दे.".

(10) रास्ते में भी ध्यान अपने दिल की ओर रखो. हो सके तो जिक्र बांधलो जैसा कि ख़ाली समय के लिए बताया है.

(11) रात में सोने से पहले बिस्तर को जहाँ तक हो सके साफ़ ओर शुद्ध रखो. बिस्तर को ज़िक्र से भर दो और सोने से पहले दुआ पढ़ो - "ऐ मेरे पाक परवरदिगार, तू मेरा मालिक है. मेरे गुनाहों को माफ़ कर दो जो कि मुझसे दिन भर में हुए हों - जिनको मैं जानता हूँ या नहीं जानता हूँ. मुझे बुज़ुर्गों की आगशे-मोहब्बत (प्रेम की गोद) में जिन्दा सुलाना और ज़िन्दा उठाना. "

(12) सोते समय दाई करवट से लेट कर, सबसे बाद में एक छोटा सा ज़िक्र करते- करते. जैसे - तू है , राम-राम या जो चाहो उसे धीरे-धीरे कहते हुए सो जाना चाहिए.

==========

लय होना क्या है ?

रामायण में एक प्रसंग है कि जब श्रीरामजी, भैया लक्ष्मण और माता सीता जी के साथ 14 वर्ष के लिए वन की यात्रा के बाद अवधपुरी लौटे तो कुटुम्बियों से बहुत प्रेमपूर्वक मिलने लगे. जब श्री भरत जी की बारी आई तो वह दौड़ कर श्रीरामजी से लिपट गए.

उन दोनों को गदगद देखकर लक्ष्मण जी ने हनुमान जी से कहा - " हनुमान जी, क्या आप बता सकते हैं कि दोनों में से कौन ज़्यादा प्रसन्न है ?" हनुमान जी ने आँखें बन्द कीं और फिर तुरन्त खोल कर कहने लगे - " भैया, यहाँ तो यह भी मालूम नहीं हो रहा कि राम कौन हैं और भरत कौन हैं . यह तो दोनों एक दूसरे में ही समा गए हैं. "

महात्मा डॉ. कृष्णा स्वरुप जी व उनकी शिक्षा

- पूज्य गुरुदेव (आपकी पुस्तक की प्रस्तावना से)

आध्यात्मिकता के केंद्र हमारे संत रहे हैं. हमेशा से संतों के जीवन, सत्संग और उपदेशों से लोग आत्मिक शान्ति पाते रहे हैं. उनका जीवन सदा से सर्व-साधारण के कल्याण के लिए ही लगा रहा है. जब तक कि हम पूर्णतः उनकी तरफ झुक कर उनके जीवन से लाभ नहीं उठायेंगे, कोई भी सूरत शान्ति प्राप्त करने की नज़र नहीं आती.

भारत सदा से सर्वमान्य आध्यात्मिक गुरु रहा है. प्रत्येक युग में यहाँ पर संतों महात्माओं का होना पाया जाता है जिन्होंने सर्व साधारण के जीवन को मोड़ कर शान्ति का श्रोत बहाया है. यह कार्य कुछ हिन्दुओं पर ही निर्भर नहीं रहा है. मुसलमानों में भी बड़े-बड़े संत हुए हैं. परमसन्त कबीर साहब, दादू साहब, गुरु नानक देव, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, परमसन्त राय सालिग्राम साहब आदि से प्रेरणा लेकर लाखों ही मानव समाज को सत्पथ दिखाया है.

आज जबकि ऋषि मुनि पहाड़ों में जाकर अपने को छिपा बैठे और सैंकड़ों मत -मतान्तर जारी करते हुए भी आध्यात्मिकता की ओर मनुष्य जीवन को शांत बनाने में असफल से हो रहे हैं तब यह सिलसिला और संत परम्परा ही एक ऐसा आशा का श्रोत नज़र आता है जहाँ से प्रेरणा पाकर मानव अपने जीवन को सफल बना सकता है और शान्ति पथ ग्रहण कर सकता है.

ऐसे ही एक महापुरुष हुए हैं हमारे बुज़ुर्ग संत श्रीमान डॉ. कृष्ण स्वरुप साहब जो कि परमसन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज फतेहगढ़ी के छोटे गुरु भाई थे. आपने महात्मा जी की सेवा में रहकर ब्रह्मविद्या की पूर्ण दक्षता की प्राप्ति की और उनकी आज्ञानुसार जीवन भर राजस्थान में ब्रह्मविद्या का प्रचार करते रहे.

जनाब डॉ. कृष्णस्वरूप साहब एक सम्भ्रान्त कायस्थ घराने में फरुखाबाद में सन 1880 में पैदा हुए थे. आपके वालिद साहब का नाम चौधरी उल्फत राय था जो चौधरी हरबख्श राय

साहब के छोटे भाई थे. चौधरी हरबख्श राय साहब के कोई औलाद ज़िन्दा न रहती थी इसलिए उन्होंने डाक्टर साहब के बड़े भाई को गोद ले लिया था. गोद ले लेने का बाद उनके दो साहबज़ादे पैदा हुए - परमसन्त श्री रामचन्द्र जी महाराज और परमसन्त श्री रघुवर दयाल जी साहब. ये दोनों ख़ानदान चौधरी हरबख्श राय की ज़िन्दगी में एक ही जगह रहे.

जब परमसन्त महात्मा श्री रामचन्द्र जी ने हुज़ूर महाराज मुन्शी फ़ज़ल अहमद खां साहब की शरण ली तो डाक्टर साहब ने भी उनसे उपदेश लिया और कई साल तक आप उनकी ख़िदमत में हाज़िर होते रहे. मरते समय मौलाना साहब ने डाक्टर साहब को परमसन्त श्री रामचन्द्र जी के सुपुर्द किया और फ़रमाया कि, " ये मेरा बहुत ही प्यारा बेटा है, तुम भी इसी मौहब्बत से इसे अपने पास रखना." इसके बाद आप जनाब महात्मा जी की ख़िदमत में हाज़िर होकर फ़ैज़याब होते रहे.

महात्मा जी ने आपको फरवरी सन 1931 में सम्पूर्ण 'इज़ाज़त' देकर हुक्म फ़रमाया कि परमात्मा की याद में लगे रहो और जीवों का उद्धार करो. आपने डाक्टरी तालीम आगरा मेडिकल कॉलेज से हासिल की. शुरू में अजमेर, जयपुर, वगैरा में डाक्टरी करते रहे और बाद में डाक्टरी छोड़कर ब्रह्मविद्या का प्रचार आखिरी वख्त तक करते रहे. आप 78 साल की उम्र में 19 सितम्बर सन 1958 को इस जिस्म को छोड़कर अपने परम दयालु पिता परमात्मा की गोद में हमेशा के लिए आराम को चले गए ।

आप बहुत कम बोलते थे. खुद किसी विषय पर फ़रमाना पसन्द नहीं करते थे. दरियाफ़्त करने पर मुख्तसिर अल्फ़ाज़ में जबाब दे देते थे. एकान्त पसन्द थे. ज़्यादा वक़्त एकान्त और अभ्यास में गुज़ारते थे. लोगों की तरफ़ भी मुश्किल से रजू होते थे. मिज़ाज़ में गुस्सा बहुत कम था. अगर कोई बात नापसंद होती थी तो ख़ामोशी इख्तयार कर लेते थे. आपने कई किताबें ब्रह्मविद्या पर लिखीं हैं (संत-वाणी वगैरा) जो अभ्यासियों के लिए बहुत कारामद (उपयोगी) हैं. आपके द्वारा आध्यात्मिक प्रचार मध्यप्रदेश में सैलाना, रतलाम, रावटी, आदि तथा राजस्थान में अजमेर, जयपुर, अलवर, राजगढ़ आदि में खूब हुआ. आपकी ही लिखी

पुस्तक " फ़क़ीरों की सात मन्ज़िलें" सिकन्दराबाद रामाश्रम सत्संग द्वारा तथा " संत-वाणी संग्रह " रतलाम से श्री छगनलालजी आचार्य (रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज) द्वारा प्रकाशित हुई हैं.

श्रीमान जी की शिक्षा व विचार

अधिकार : " जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी"

क़ाबलियत (योग्यता) और क़बूलियत (पात्रता) अधिकार और संस्कार और इत्तिफ़ाक़ (संयोग) के समझे वग़ैर जो कोई काम करता है, उसको कामयाबी (सफलता) नहीं मिलती, बल्कि नाकामयाबी (असफलता) का ख़तरा क़दम-क़दम पर रहता है.

संत फ़रमाते हैं कि जगत की रचना सुरत शब्द का खेल है. सुरत कहते हैं तवज्जोह को. जैसी तवज्जोह है वैसी ही काम करने के लिए रचना में आया हुआ है और उसकी रूचि, उसका मिजाज़ (स्वभाव) और उसकी क़ाबिलियत (योग्यता) भी इसी तरह की है.

इन्सानी ज़िन्दगियों का ऐसा हाल है कि किसी के सुपुर्द कोई काम है, किसी के सुपुर्द कोई और. अगर अपने दिल के ज़ज़्बात (भाव) और महसूसात (समझ) को निरख परख करते हुए लोग काम करें तो मुमकिन नहीं कि कामयाबी उनके क़दम न चूमे. मगर अफ़सोस यह है कि ईर्ष्या, द्वेष, नकल या बराबरी की दौड़ में पड़ा इंसान अपना असल काम तो देखता नहीं और यूं ही दूसरों की रीस के दम भरने का उत्सुक रहता है. तेली का काम तमोली से नहीं हो सकता.

जिसका काज उसी को साजे, और करे तो डंडा बाजे

ज़िन्दगियाँ यों ही बरबाद हो रही हैं, गलती से. अक्सर लोग 70-80 साल की उम्र वाले मिलने आते हैं. भक्तिभाव की मन्ज़िल में क़दम रखे मुद्दत बीत गयी, मगर नतीज़ा कुछ नहीं - वही "ढाक के तीन पात ". सबब यह है कि अपनी पात्रता की जाँच न तो की और न यह मालूम हुआ कि वो कैसी तबियत लेकर आये हैं, उनका क्या काम और किस तरह से करना है. दूसरे किसी जानने वाले व तज़ुर्बेकार (अनुभवी) गुरु से भी मशवरा (सलाह) तक नहीं लिया जो इनके ज़ज़्बात (भावनाओं) को समझता, सीधे राह पर लगाता. अब पछताते हैं. मगर पछताने

से क्या होता है, ग़लती अगले जन्म में ठीक होगी. खेत में पड़ा बीज नष्ट नहीं होगा. कभी - न-कभी अंकुर फूटेगा और फल-फूल आएगा.

हर शख्स अपना ख़ास हक और अधिकार लेकर पैदा होता है. इसी में भलाई भी है कि अपने संस्कार और अधिकार के अलावा दिली, अकली और रूहानी उन्नति का मौक़ा तलाश करे. इसी कारण कहा गया है कि वगैर गुरु के आगे मार्ग में क़दम न रखो. तज़ुर्बेकार गुरु इन सभी के प्रेम के ज़ज़्बात को आसान बना देते हैं.

बिना गुरु घट में राह न चलना,

डर और विघ्न अनेकों मिलना !

गुरु रक्षा जाके संग जाहिं,

ताको काल कर्म भय नाहीं !

साई आगे साँच हो, साईं साँच सुहाय !

भाव घर में वासकर, भावै वन में जाय !!

oooooo

पूज्य संत डॉ. अक्षयकुमार बैनर्जी साहब

- डॉ. महेश चन्द्र एवं श्री रामसागर लाल

गुरुदेव (परमसन्त डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज) का जब गोरखपुर जाना शुरू हुआ तब वहाँ उनकी एक महान संत से भेंट हुई. इन महापुरुष का नाम परमसन्त अक्षय कुमार बन्दोपाध्याय था जिन्हें जन साधारण "बैनर्जी साहब " कहा करते थे. आप उस समय 80 वर्ष से भी अधिक आयु के थे. अविभाजित बंगाल में आप आनंद मोहन कॉलेज, मैमन सिंह, में दर्शन शास्त्र के प्रोफ़ेसर थे. संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे.

आध्यात्म के विषय पर आपके लेख बंगला तथा अंग्रेजी भाषाओँ में " वेदांत केसरी" , " द प्रवर्तक " "कल्याण कल्पतरु" तथा अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में छपा करते थे. वर्ण से वे बंगाली थे, परन्तु अत्यंत उच्च-कोटि के गोरखपन्थी संत थे. शरीर भारी था और व्यक्तित्व एकदम शान्त. हलकी मधुर मुस्कान के साथ धोती पहने, ऊपर से नंगे बदन (केवल एक जनेऊ धारण किये**) "संत निवास"** (जो गोरखनाथ मन्दिर के प्रांगण में स्थित है) की ऊपर की मन्ज़िल के एक कमरे में एक बड़े से पलंग पर विराजे रहते थे. प्रत्येक से नहीं बोलते थे. गुरुदेव को विशेष स्नेह देते थे और उसी नाते उनके प्रेमी सेवकों से बातें कर लेते थे.

जब गुरुदेव से उनकी प्रथम भेंट हुई तो उन्होंने कहा था - *"मैंने राम के दर्शन किये".* गुरुदेव ने कहा- *"मैंने शिव के दर्शन किये."* इस घटना को अपने जीवन-काल में गुरुदेव ने छापने से मना कर दिया था. अतः यह तब 'राम सन्देश' मासिक पत्रिका में नहीं छापी गयी थी.

गुरुदेव उन्हें 'महाराज जी' कह कर सम्बोधित करते थे. जब उनके दर्शनों को जाते तो कुछ फल आदि भेंट ले जाते और अपने प्रेमी-जनों को साथ ले जाते. उनके चरण स्पर्श करते और आदर-भाव से बैठ जाते. अपने साथ गए प्रेमियों के हितार्थ आप यदा-कदा उनसे कोई मार्मिक प्रश्न पूछ बैठते और वे बड़ी प्रसन्नता से उसका उत्तर देते.

पूज्य बैनर्जी साहब ने आध्यात्म विद्या पर बहुत कुछ लिखा है. अपने निर्वाण से पहले की लिखी हुई सारी पाण्डुलिपियाँ जो उनके जीवन-काल में छप नहीं पायी थीं, वे पूज्य गुरुदेव को सुपुर्द कर गए. आपके प्रेमियों ने जब आपसे इसके विषय में पूछा तब आपने उत्तर दिया था कि तुम लोगों में से कोई इस योग्य नहीं निकला जो मुझसे इसे लेता. दिल्ली से एक व्यक्ति (गुरुदेव) आया और बिना मांगें ही मुझसे सब कुछ ले गया. Discourses on Hindu Spiritual Culture के तीन भाग जो अब तक छप चुके हैं, बैनर्जी साहब द्वारा ही लिखे गए हैं. (जिनकी पाण्डुलिपि को बड़ी श्रद्धापूर्वक आपने सत्संगी भाई श्री रामसागर लाल ने टाइप किया था).

एक दिन गुरुदेव ने उनसे पूछा -" महाराज जी क्रोध पर किस तरह विजय प्राप्त की जाती है." उन्होंने स्वाभाविक मुस्कान के साथ उत्तर दिया था - "क्रोध से हमारा परिचय ही नहीं". उन्हें कभी क्रोध नहीं आता था. कॉलेज के अन्य प्रवक्ता उनके विषय में कहा करते थे - " Prof. Banerji has lost the capacity to be angry" (प्रो. बैनर्जी में क्रोधित होने की क्षमता ही नहीं रही.)

जब आप गम्भीर रूप से पक्षाघात से पीड़ित हुए तब अपने सेवकों द्वारा पूज्य गुरुदेव ने उन्हें गोरखपुर के रेलवे अस्पताल में भर्ती करा दिया. अपने ही कुछ सेवक उनकी अहर्निश सेवा के लिए छोड़ दिए. प्रातःकाल व साँयकाल उन्हें देखने वे स्वयं जाते थे. बैनर्जी साहब को विशेष तौर पर अत्यंत गम्भीर रोगियों के वार्ड में रखा गया था जहाँ प्रत्येक मनुष्य नहीं जा सकता था. दो सेवक तो वहाँ स्थायी तौर पर रहते थे. गुरुदेव के साथ एक सेवक और चला जाता था. गले में बलग़म अड़ जाने से श्वांस में घड़घड़ की आवाज़ होती थी, श्वांस लेने में बहुत कष्ट होता था. रुई लेकर अपने हाथ से गुरुदेव उनके गले में से बलग़म की सफाई किया करते थे. अन्ततः पूज्य संत श्री ने दिनांक 1-2-1966 को ब्रह्म बेला में पार्थिव शरीर छोड़ा.

शरीर छोड़ने से कुछ क्षण पहले बैनर्जी साहब होश में आ गए थे. दोनों सेवकों के सिर पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया और तभी उनकी आत्मा शरीर से निकल गयी. उन सेवकों ने

देखा कि अँगूठे के बराबर दीपक की लौ की तरह उनकी आत्मा धीरे-धीरे ऊपर उठती हुई रौशनदान से बाहर निकल गयी.

पूज्य बैनर्जी साहब के महानिर्वाण के उपरान्त गोरखनाथ मन्दिर के महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी (नेता जी तथा सदस्य लोक सभा) ने एक शोक सभा का आयोजन किया जिसका मुख्य अतिथि गुरुदेव को बनाया गया था और गीता प्रेस के प्रांगण में उपस्थित समुदाय के समक्ष गुरुदेव का परिचय एक महान संत कह कर कराया गया था. उस समय जो श्रद्धान्जली गुरुदेव ने अर्पित की उससे जन-समुदाय बहुत अधिक प्रभावित हुआ.

पूज्य गुरुदेव ने एक जगह लिखा है कि "अपने गुरुदेव के महानिर्वाण के बाद मैंने ऐसा महसूस किया कि अपनी मुश्किलें किसके सामने रखूँ? शास्त्रों के जानने की ख्वाहिश (इच्छा हुई लेकिन बताने वाला कोई नहीं मिला. एक महान विद्वान साहब मिले भी लेकिन उनका आचरण शुद्ध नहीं था. इत्तफ़ाक़ (संयोग) से एक संत लालाजी की तरह के ही मिल गए. उन्होंने शास्त्रों को पढ़ाया. मैंने देखा कि जो शिक्षा लालाजी की थी उसी को उन्होंने ऋषियों की भाषा में मुझे समझा दिया. मैंने देखा कि सब एक ही चीज़ है, फ़र्क़ सिर्फ शब्दों का है. " पूज्य बैनर्जी साहब ही थे वे संत जिनके विषय में पूज्य गुरुदेव ने ऊपर लिखा है.

परमसन्त बैनर्जी महाराज के वचनोपदेश

हमारा जीवन ऐसा हो जिससे हमारा ह्रदय शान्त हो. भीतर बाहर शान्त भाव हो. प्रशान्त भाव से सब को बोध करें. हमारे सब अंग-प्रत्यंग शान्त हों, शील हों, अचंचल हों, सबसे हमेशा भगवान का गुण प्रकट होना चाहिए. जैसे भगवान सत-चित-आनन्द हैं वैसा सबको देखें. जिसके साथ जो सम्बन्ध हों वह भगवान के हेतु हों. कर्म करने के समय ऐसा अनुभव हो कि हम भगवान् की स्तुति करते हैं. व्यवहार से सबके साथ ऐसा जाने कि सब भगवान की स्तुति है.

परमात्मा के साथ नित्य सम्बन्ध अनुभव करके सबके साथ व्यवहार करें. ऐसी विचारधारा रखकर दीर्घ जीवन की कामना नहीं करते हैं और अस्थायी की भी नहीं. यह तो भगवान की श्रष्टि है.जब तक भगवान इस श्रष्टि को रखेंगे समस्त जीवन के लिए हित हो. हमारे सब कर्मों

से, ज्ञान से, जीवन से, जो भी काम हों, जगत का कल्याण हो. ऐसा कल्याणकारी जीवन व्यतीत करें जिसमें भगवान की ही स्तुति हो. हमारे जीवन का आदर्श है कि इसमें भगवान की महिमा गावें, स्तुति करें. वह ऐसे जीवन से हो सकता है जो मधुर, शान्त एवं निष्कलंक है. ऐसे जीवन के लिए भगवान के पास प्रार्थना करनी चाहिए. सब इन्द्रियों को शान्त करके जो देखते हैं वह भगवान के विचित्र दर्शन हैं. ये साधन होना चाहिए कि हम जो खाते हैं वह भगवान का प्रसाद है, जो करते हैं उसका आदेश है, तब तो सदैव उसकी मधुर वाणी सुनने को मिलेगी. ऐसा शान्तिमय हमारा सम्पूर्ण जीवन हो.

सब इन्द्रियों को हमेशा शुद्ध रखना चाहिए ताकि प्रेमास्पद भगवान की प्राप्ति हो. सांसारिक कर्म को भगवत-कर्म बनाओ. जब तक वासना-कामना है ऐसा कैसे हो सकता है ? इसीलिए भजन में प्रार्थना करो. काम, क्रोध, लोभ, उत्तेजना रहित करो. भजनमय दिनचर्या हो. भजनमय जीवन हो. आनंदमय जीवन हो. कामना-वासना-मय जीवन तो जटिल कुटिल बन जाता है. योग शास्त्र में ऐसे जीवन को ही सहज जीवन कहते हैं.

परमात्मा की तरफ से हमें सहज जीवन मिला था. उसमें काम, क्रोध आदि कुछ विकार नहीं थे. वह प्रेममय था, पवित्र था, शान्त था. ऐसा जीवन फिर से बन जाये. ऐसा जीवन जब हमारा स्वभाव बन जाता है तो लगता है कि अन्दर परमात्मा है और बाहर संसार रूप में भगवान. यह जीवन भगवान से मिला है, कर्म भगवान से मिला है, सभी तो भगवान है, सभी मधुर है. ऐसे जीवन के लिए गुरु से प्रार्थना करो.

विषय वासना मन से त्याग करनी है. ऐसा सतगुरु की कृपा के बिना नहीं होता. उसके बिना सत्य दर्शन नहीं होता. तो करो विषय वासना का त्याग और परमात्मा के प्रति अनुराग. त्याग और भक्ति साथ-साथ हो - सद्गुरु के पास यह प्रार्थना होनी चाहिए. यह जब स्वाभाविक बन जाता है तो जीवन सहज बन जाता है. सांसारिक जीवन जटिल है. वह जो जीवन भगवत भावानुभाव में रत होकर है वही सहज जीवन, प्रेमपूर्ण जीवन, भगवत जीवन, शान्त-प्रशान्त जीवन है. उसी के लिए गुरु से प्रार्थना करनी चाहिए.

कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सहज प्रार्थना का भाव है - ***" दोनों नयन खोलकर जब देखेंगे तो जो कुछ देखेंगे उसमें आनंदित होते हैं. आँख मूँदकर देखेंगे. जगत आनंदमय है. सबको देखकर हमें आनन्द होगा, हमें देखकर सबको आनन्द होगा. तुम कोई दूर देश में हो यह नहीं, तुम हमारे आँख के, कान के सामने हो, जो कुछ भोग करते हैं, तुम्हारे द्वारा करते हैं. जो कुछ जीवन है - तुममय है."***

बैनर्जी साहब से प्रश्न और उत्तर

प्रश्न - है पूज्यवर, जो लोग व्यापारी काम धन्धा करते हैं उनका पूरी सच्चाई और पूरी ईमानदारी के प्रति क्या रवैया होना चाहिए ?

उत्तर - अपनी रोज़ी रोटी चलाते रहने के लिए सच्चाई के मार्ग से थोड़ा बहुत हटना तो सम्भव है किन्तु ध्यान और प्रयास प्रामाणिकता और नेकनीयती पर ही होना चाहिए. जिस रोज़गार में सच्चाई के सिद्धांतों की बलि देनी पड़े, उसका गुलाम नहीं बनना चाहिए. यदि आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति करने की अभिलाषा है तो जीवन की सम्पूर्ण अवधारणा और दृष्टिकोण (Concept and outlook) को बदलना होगा. अपनी बहिर्मुखी दृष्टि को अंतर्मुखी बनाना पड़ेगा.

oooooooooo

वसंत महोत्सव का सौन्दर्य

- श्रीमती वीणा सक्सेना, दिल्ली.

यह भारतवासियों का सौभाग्य है कि वे वर्ष भर बारी-बारी से आने वाली सभी छः ऋतुओं का आनन्द लेते हैं. यहाँ हेमन्त और वसंत. ग्रीष्म , वर्षा, शरद, शिशिर अपना बैभव लुटाती हैं, अपना-अपना करिश्मा दिखाती हैं. सबका अपना आनन्द व महत्व है. इन सब ऋतुओं में वसंत ऋतु का विशेष स्थान होता है. जिस तरह फलों में आम, फूलों में गुलाब को श्रेष्ठ माना जाता है उसी तरह वसंत को समस्त ऋतुओं में श्रेष्ठ माना जाता है. इस वसंत को ऋतुराज की संज्ञा दी गयी है. बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास से ऋतुराज वसंत का आगमन होता है.

वसंत के आगमन से शनैः शनैः समस्त वृक्षों की टहनिया नए निर्मल पत्तों से ढँक जाती हैं. इन्द्रधनुषी अनेक प्रकार के फूलों से वृक्षों व पौधों की टहनियाँ इस प्रकार झुक जाती हैं जैसे वे ऋतुराज को सदर नमन कर रही हों व् पुष्पों की माला अर्पण कर रही हों. वसंत ऋतु सम्पूर्ण श्रष्टि को प्राणयुक्त कर देती है. प्रकृति सरसों के सुन्दर पीले फूलों की चुनरिया ओढ़ नई दुल्हन की तरह सज-धज जाती है. गुलाब, गैंदा , गुलदाउदी, डहेलिया व गुलमोहर आदि प्रकृति के आभूषण बनते हैं. लाल फूलों का विशेष महत्व है जो वसंत में पुष्पित होकर प्रकृति को नया रंग प्रदान करते हैं. नीलकमल, लालकमल अति मोहक पुष्प हैं. इसीलिए वसंत को पुष्पमास भी कहा जाता है. दिशाएं रंगीन हो जाती हैं. प्राणियों में, पशु-पक्षियों में भी उन्माद भर देती हैं.

वसंत का आगमन मानव ह्रदय को हर्ष विषाद की अनुभूतियों को तीव्र करने में सहायक होता है. तभी तो श्रेष्ठ कवि कालीदास ने 'ऋतु संहार ' में लिखा है कि वसंत पुरुष है, वनस्थली नारी, पलाश के रक्त में पुष्प उस नारी के नर हैं. श्री कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि, " ऋतुहननाम कुसुमाकर" अर्थात ऋतुओं में मैं वसंत हूँ. वसंत सचमुच कृष्ण की तरह ही नटखट, सलौना व सबकी पीड़ा हरने वाला है.

महान तत्वज्ञानी शंकराचार्य जी ने संतों के दिव्य गुणों की व्याख्या करते हुए उन्होंने सुन्दर उपमा वसंत की ही दी है -

शान्ता महन्तों निवसन्ति संत !

वसंत वल्लोक हित चरन्त !!

इसी भाव को पुष्ट किया है निम्नलिखित श्लोक में -

के सन्ति सनअलीखा वीत रागा !

अपास्त मोहः शिवतत्व निष्ठाः !!

अर्थात संतजन सब प्रकार के मोहों से मुक्त सम्पूर्ण राग द्वेषों से पवित्र हो निज स्वरुप में आनंदपूर्वक नित्य स्थित होते हैं और सबका मंगल ही मंगल करते रहते हैं. मानो वही वसंत रूप है.

वसंती उत्सव और उत्तरायण से जुडी कथा भी रोचक है. कहते हैं दानवराज बलि जिसने अपने गुरु शंकराचार्य के मंत्र और अपनी शक्ति से तीनो लोकों को विजय कर लिया था, तब देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर ब्राह्मण रूप में बलि से दान में तीन कदमों में ही तीनों लोकों को माप दिया जिसमें बलि का शरीर भी शामिल था. बाद में भगवान विष्णु ने राजा बलि को पाताल का राजा बना दिया किन्तु उसकी दान वृति से खुश होकर बलि को एक बरदान मांगने को कहा. दानव राज ने कहा हर वर्ष छः महीने आप मेरे यहाँ द्वारपाल बन कर रहेंगे. भगवान् ने सूर्य रूप में छः माह तक वहीं द्वारपाल के रूप में रहना स्वीकार किया. वसंत पंचमी इस उत्तरायण सूर्य का पहला उत्सव है.

शास्त्रों में कैलाश पर वसंतोत्सव का ज़िक्र बार-बार आता है. एक बार जब सब सभी देवी-देवता कैलाश पर बैठे थे तो पार्वती जी कैलाश पर फूल ही फूल खिला देती हैं. तब नारद जी कहते हैं कि कैलाश पर वसंत ऋतू आ गयी है. माँ सरस्वती शारदा की जयन्ती के रूप में

वसंत पंचमी का पर्व मनाने की पृथक परम्परा है. माँ सरस्वती की कृपा से प्राप्त ज्ञान और कला के समावेश के द्वारा जीवन में सुख और सौभाग्य प्राप्त होता है.

माघ शुक्ल पंचमी को सबसे पहले श्रीकृष्ण ने माँ सरस्वती का पूजन किया था और कहा कि, " हे देवी ! ब्रह्माण्ड में प्रत्येक माघशुक्ल की पंचमी को ही गौरव और श्रद्धा के साथ तुम्हारी पूजा होगी. तब से सरस्वती पूजन का प्रचलन वसंत पंचमी के दिन से होने लगा है. कहा गया है कि संगीत, कला और विद्या की देवी सरस्वती वसंत पंचमी के दिन ब्रह्मा के मानस से अवतीर्ण हुईं थीं. पूर्ण चन्द्रमा और हिम तुषार जैसा उनका रंग बताया जाता है.

देश विभाजन से पूर्व वसंत का मेला हक़ीक़त राय की समाधि पर लाहौर में लगता था. इस दिन ही हक़ीक़त राय लाहौर में मुगल शासकों के जुल्म का शिकार हुए थे. 'मेरा रंग दे वसन्ती चोला ' गीत से शहीद भगत सिंह ने इस पर्व के महत्व को ताज़ा ही कर दिया.

शास्त्रीय मर्यादानुसार वसंत ऋतू के सही महीने तो चैत्र और वैशाख हैं. किन्तु वसंत ऋतू की करीब डेढ़ माह पूर्व माघ पंचमी से ही बाट जोहने लगते हैं और वसंत पंचमी को हर्षोउल्लास से मनाते हैं जैसे वसंत ऋतू आरम्भ हो गयी. वसंत की उन्मादकता से कवि की कलम भी अछूती नहीं रहती. ऋतुओं में श्रेष्ठ वसंत ऋतू के अनुपम सौन्दर्य का चित्रण किया है. चाहे रीतिकाल हो, भक्तिकाल हो या आधुनिक काल हो, हर काल के कवियों, चित्रकारों व साहित्यकारों ने वसंत का खुलकर चित्रण किया है.

वसंत पंचमी के उत्सव वाले दिन आमतौर पर प्रकृति के साथ घुलने-मिलने के उद्देश से मनुष्य भी अपने सूती वस्त्रों को पीले रंग में रंग कर पीले वस्त्र ही पहनते हैं व खाने में भी पीले व्यंजन बनाकर खाने की प्रथा है. पुराणों के अनुसार वसंत पंचमी का दिन अतिशुभ माना गया है.

oooooooooo

अमृत विचार : वाणी का संयम

बोलना एक कला है. यह कला अन्य सभी कलाओं से बढ़कर है. वाणी में अमृत भी है और ज़हर भी. वाणी से एक क्षण में मित्र बन सकता है और वाणी से ही एक क्षण में शत्रु भी बन सकता है. विश्व में जितने सघर्ष हुए, संहार हुए उनका प्रधान कारण वाणी का अनियंत्रण ही रहा है.

जब भी आप बोलें, इस अमृत विचार को ध्यान में रखकर बात करें - घर बाहर दोनों में इस व्यवहार से सुख-शांति की वृद्धि अवश्य होती है जो कि आप स्वयं शीघ्र अनुभव भी करने लगेंगे. तनिक प्रयास तो करके देख लें.

- जैनाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि, भीलवाड़ा

बक्र ईद - इस्लाम धर्म का प्रमुख त्यौहार

- श्रीमान जयनारायण गौतम, अहमदाबाद

मुस्लिम देशों से आये प्राचीन लेखक यात्री 'इब्ने बतूता ' ने अपने 'सफरनामा -ए-इब्न बतूता ' में लिखा है कि भारत की तत्कालीन संस्कृति में इस्लामी त्योहारों का भी पर्याप्त समावेश हो चुका है. वैसा प्रभाव या असर अरब के ही अपने मुल्कों में, या ईरान, तुर्की या अफगानी देशों में. जहाँ पर इस्लामीकरण की बहुतायत होनी चाहिए थी - वहाँ पर स्पष्टता से नहीं दीखता है. इस कथन की पुष्टि में 'बतूता ' ईद पर्व को भारत में बड़े परिमाण पर मनाये जाने का उदाहरण पेश करते हैं. ईद का पर्व प्रतिवर्ष दो बार मनता है. (1) ईदुलजुहा, और (2) ईदूलिफ़तर. पूरे एक मास शुचितापूर्ण दैनिक उपवास और धार्मिक अनुष्ठान के बाद समापन की ख़ुशी में ईदूलिफ़तर मनाया जाता है. सभी लोग छोटे-बड़े का भेद छोड़कर सप्रेम गले मिलते हैं, एक दूसरे को बधाई देते हैं.

ईदुलजुहा अथवा बकरीद पर बलि देने की प्रथा मुख्य है जिसका माँस गरीबों में बाटकर खाया जाता है. वैसे तो जब लाखों मुसलमान मक्का मदीना (सऊदी अरब) में हज़ करने जाते हैं तो उसमें तीन दिन तक 'मीना' नामक स्थान पर नमाज़ों इबादत करके चौथे दिन भर अराफ़ात में पूजा करते हैं. हज़ के आख़िरी दिन क़ुरबानी दी जाती है. हज़ के आदि और अंत में 'उमरा' (पवित्र काबा शरीफ) की सात परिक्रमाएँ करते हैं. इस मौके पर भी दुनियाँ की मस्जिदों में सामूहिक नमाज़ें पढ़ी जाती हैं.

'इस्लाम' में 'खैरात-ज़कात ' (दान-दक्षिणा) पर बहुत ज़ोर दिया गया है. जब विश्वास यह है कि कण-कण में ईश्वर व्याप्त है. तो दान की जाने वाली वस्तु में, दान देने वाले में, दान लेने वाले में भी ईश्वर व्यापक है. दान करते समय वह देख रहा है कि सबमें व्यापक ईश्वरी आदान-प्रदान हो गया है, दोनों - दाता और लेने वालों - के दिल को तसल्ली हो गयी है.

हज़रत मुहम्मद साहब महिलाओं का आदर करते थे एवं सामूहिक 'ख़ुतबा' (बातचीत) करते थे. एक बार कुछ लड़कियाँ गा रहीं थीं. हज़रत अबूबकर ने उन्हें डाँटकर उनका गाना बंद करा

दिया. तब आ हज़रत मुहम्मद ने अबूबकर को डाँटने से रोका क्योंकि हर्ष का अवसर था. कहा जाता है कि 'ईद के दिन गुनाहों की क्षमा माँगने पर जन्मभर के गुनाहों की क्षमा मिल जाती है और इनाम में ईश्वर 'सबाब' देता है.'

बलि तो इस बकरे की चढ़ानी है

एक छोटे से राज्य में एक बादशाह था. वह मस्ती और मनोरंजन करता रहता था. उसके यहाँ एक बकरा था. बादशाह ने यह मुनादी (घोषणा) करवाई कि उसके बकरे को चराकर जो तृप्त कर लाएगा उसको पुरस्कार देकर मालामाल कर दिया जायेगा.

यह भी कोई बड़ी बात है ? बकरे को पेट भरकर चराना तो साधारण काम है - ऐसा विचार करके एक मनुष्य उस बकरे को चराने के लिए जंगल में ले गया. पूरे दिन बकरे को हरी-भरी घास खिलाई. उस आदमी ने सोचा कि उसने सारे दिन इस बकरे को खूब खिलाया है, शाम हो गयी, अब तो इसका पेट भर ही गया होगा. वह उस बकरे को बादशाह के पास ले गया, किन्तु उसने जैसे ही थोड़ी घास सामने डलवाई वह बकरा उसे खाने लगा. बादशाह ने उस व्यक्ति से कहा, "तुमने इसे पेट भर कहाँ खिलाया है ? यदि इसका पेट भरा होता और यह तृप्त हो गया होता तो यह घास खाता ही नहीं."

इसी प्रकार कई आदमियों ने प्रयत्न किये, पर किसी को सफलता नहीं मिली. सभी ने बकरे को खूब खिलाया-पिलाया , किन्तु जैसे ही बादशाह उसके सामने हरी घास डलवाता, वह उसे खाने लगता. बकरे की आदत होती है कि घास देखते ही मुँह मारने लगता है.

एक दिन एक होशियार आदमी ने शासक की घोषणा के पीछे छिपे रहस्य को समझ लिया. उसने युक्ति से काम लेने का निश्चय किया. वह बकरे को चराने के लिए जंगल ले गया, किन्तु जैसे ही बकरा घास खाने की कोशिश करता, आदमी ज़ोर से उसके मुँह पर लकड़ी मारता. जितनी बार बकरे ने घास खाने की कोशिश की, उतनी ही बार उसके मुँह पर लकड़ी से पिटाई की गयी. आखिर बकरे को निश्चय हो गया कि घास खाने के लिए मुँह खोलूंगा तो मार पड़ेगी. पूरे दिन भर मार पड़ने से बेचारा घास में मुँह डालने की आदत ही भूल गया.

शाम हुई. वही व्यक्ति उस बकरे को लेकर दरबार में गया और बोला "सरकार, मैंने बकरे को पेट भर खिलाया है. अब यह घास नहीं खायेगा. आप आज़मा करके देख लीजिये" बादशाह ने बकरे के सामने घास रखवाई किन्तु उसने मुँह फेर लिया, घास की तरफ नज़र भी न की. वह समझ चुका था कि घास में मुँह डाला नहीं कि मार पड़ेगी. बकरे ने घास न खाई. खाई तो क्या, छुई भी नहीं. उस व्यक्ति को मुँह माँगा इनाम मिला.

दुनियाँ भर में बकरीद पर लाखों बकरे ज़िबह (क़त्ल) किये जाते हैं पर इस 'मन' रूपी बकरे को कौन-कौन मार पाता है. *इस लघु-कथा का गूढ़ रहस्य यही है कि यह बकरा और कोई नहीं हमारा मन है. यह मन बकरे के समान है. इसे घास खिलाने के लिए ले जाने वाला व्यक्ति जीवात्मा है और राजा परमात्मा है. इस मन रूपी बकरे को पेट भर कोई खिला नहीं सकता, विषय-वासनाओं से तृप्त कर ही नहीं सकता. मार पड़ती है तभी यह समझता है. जब भी वासना कामना रूपी घास की ओर मुँह करे - तभी इस मन के बकरे को विवेक और सयंम की छड़ी से मारो. इसको लाढ़-प्यार मत करो. इस पर सदा अंकुश रखो. यह तभी वश में आयेगा.*

बकरे की तरह मन भी मैं-मैं किया करता है. यह मेरा वह मेरा कहते -कहते ही इसका जीवन बीतता है.

" कान्ता इमे में तनया इमे में ,

गृहा इमे में, यशवास्तित्व में !!"

अर्थात मेरी स्त्री, मेरी संतति, मेरा घर, मेरी संपति - बस यही मेरा-मेरा सबके जीवन का स्वर है. इस पर भी कभी तृप्ति नहीं होती. मन को भोग से कभी संतोष नहीं होता. और न ही हो सकता है. इस मन रूपी बकरे को चाहे जितना खिलाया जाये, यह कभी तृप्त नहीं होता. मन को भी बकरे की भाँति मार-मार के सुधारने पर ही जीवन सुधरेगा. वास्तव में बलि तो इस बकरे की देना चाहिए.

- डॉ. रमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ

रामाश्रम सत्संग - सक्षिप्त परिचय

-- डॉ. दिनेश कुमार श्रीवास्तव, भभुआ

रामाश्रम सत्संग की स्थापना

रामाश्रम सत्संग की स्थापना फ़तेहगढ निवासी निर्वाण-प्राप्त महात्मा रामचन्द्र जी उर्फ़ लालाजी साहब ने की थी. उसी की एक प्रमुख शाखा सिकन्दराबाद (उत्तर प्रदेश) में पूज्य लालाजी की प्रेरणा से उनके परम् प्रिय शिष्य डॉ. श्री कृष्ण लाल जी महाराज ने स्थापित की. वर्तमान अध्यक्ष एवं प्रधान आचार्य दिल्ली (अब ग़ज़ियाबाद) निवासी डॉ. करतार सिंह जी हैं.

संस्था का प्रमुख उद्देश्य

मानव जीवन के चरम लक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए किसी सिद्ध पुरुष अर्थात समर्थ गुरु के माध्यम व मार्ग दर्शन से प्रयास करना और सफलता पाना. साधना का आधार संतमत या सहजमार्ग की मूलभूत प्रणाली है : धारणा, ध्यान एवं समाधि - जिनके लिए सहायक होते हैं सतगुरु, सत्संग एवं सतनाम (ओम आदि).

सर्वधर्म समभाव

इस संस्था में सभी धर्मों के महापुरुषों व धर्मग्रंथों, उपदेशों व सिद्धांतों का समान आदर-सम्मान किया जाता है. देश, काल व समाज के नियमों तथा मर्यादाओं को निभाते हुए जीवन को सुधारना और गृहस्थ, परिवार, समाज व देश के प्रति कर्तव्य-पालन करना, साधकों के कर्मक्षेत्र की सार्थकता है.

ईमानदारी की कमाई

जीवन में सात्विकता एवं व्यवहार में सरलता और दीनता को दिनोदिन बढ़ाते हुए ईमानदारी की कमाई की आवश्यकता है. रोज़ी-रोटी के लिए कोई काम छोटा नहीं होता, महत्व

उसको करने की भावना का है. ईश्वर ने हमें जो भी काम करने को दिया है उसे हमको पूर्ण प्रमाणिकता से प्रभु की पूजा मानकर करना चाहिए.

संस्था की पत्रिका

हमारा मुखपत्र 'राम सन्देश' मासिक है जो लगभग 50 वर्ष से बिना किसी विज्ञापन के निकलता आ रहा है. इसके साथ ही लगभग 35 पुस्तकें भी प्रकाशित की जा चुकी हैं जो कि भण्डारे की बुकस्टॉल पर तथा मैनेजर, राम सन्देश, 9-10 रामकृष्णा कॉलोनी, जी.टी.रोड, ग़ाज़ियाबाद - 201009 तथा सम्पादक जी के पास 2-B, नीलगिरि 3, सैक्टर 34 नौएड़ा में भी उपलब्ध हैं.

सत्संग के प्रमुख समारोह

हमारे सत्संग के प्रमुख समारोहों में दो त्रिदिवसीय भण्डारा समागम हैं. प्रथम - बसंत पंचमी के सुअवसर पर पूज्य लालाजी, श्रीमान रामचन्द्र जी महाराज, की जयन्ती पर पूर्वी क्षेत्र में बिहार के किसी प्रमुख नगर - पटना, भभुआ, टाटानगर, मुज़्ज़फ़्फ़रपुर या देवघर में आयोजित होता है. इधर कुछ समय से ग़ाज़ियाबाद में होता रहा है. दूसरा महत्वपूर्ण वार्षिक भण्डारा पूज्य गुरुदेव, डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी की जयंती पर दुर्गाष्टमी-दशहरा के दिनों में ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश) में संपन्न किया जाता है. दोनों की झलक इस अंक में आगे दी जा रही है.

अन्य आयोजन

इन भण्डारों के अतिरिक्त गुरु पूर्णिमा पर्व दिल्ली में और क्षेत्रीय सम्मेलन विविध स्थानों पर ग्वालियर, रतलाम (म.प्र.) झुंझनू, जयपुर, अलवर, (राज.) वाराणसी, प्रयाग, गोरखपुर, आगरा, मथुरा ,लखनऊ (उ.प्र.) एवं मुंगेर, गया, मोतिहारी, सासाराम, हाजीपुर (बिहार) आदि में होते रहते हैं. सभी ५०-६० नगर-केंद्रों में रविवार एवं गुरुवार को नियमित रूप से स्थानीय सामूहिक सत्संग हुआ करते हैं. श्रद्धेय अध्यक्ष महोदय का बाहर से आने वाले भाइयों के लिए द्वार तो हरदम खुला रहता है ।

फतेहगढ़ के सालाना जलसे की बरकत

- श्री श्रीनिवास लाल, मुम्बई

साक़ी ने करम करके खोला दरे- मयख़ाना !

रिन्दानै-जहाँ ! दौड़ो, भर-भर पियो पैमाना !!

देता है सदा घर-घर, यह इश्क़ का दीवाना !

दिलवालों, ज़रा सुन लो, आवाज़े फ़क़ीराना !!

सरशार हर एक दिल हो, पीरो के तबर्रुक से !

लाता है अजब बरकत, ये जल्स-ए- सालाना !!

यह रास्ता मज़हब फुक्रा (संतमत) है. यह मार्ग व मत प्रेम मार्ग है यांने इश्क़ का दीन (प्रेम का मज़हब) है. यहाँ बातिनी शगल (आन्तरिक अभ्यास) का तरीक़ा जो कराया जाता है उसमें शुरू से ध्यान दिलाया जाना ज़रूरी होता है कि किस तरह तालिब की तज़्कए नफ़्स (अभ्यासी के मन की शुद्धता) और तस्किये क़ल्ब (हृदय की निर्मलता) होती रहना चाहिए.

यह मज़हब फ़ुक्रा अदब-व्-तहज़ीब का तरीक़ा है. प्रेम में देना ही देना है और कुछ नहीं. "लेने को हरिनाम है या गुरुनाम " यह मुराक़बा (सत्संग गोष्ठी) सबसे बेहतर है. अपने पीरो-मुर्शिद (गुरुदेव) की याद में डूब कर उनकी क़ुर्बत (नज़दीकी) हासिल कर समय और काल की बाधाओं को पार करते हुए हम उसी माहौल में पहुँचकर उन्ही मुक़ाम (स्थितियों) को प्राप्त कर सकते हैं जो हमें उनकी सौहबत में कभी नसीब हुआ करती थी और हुई थी. हम बरसों की ज़ियारत व रियाज़त (तीर्थाटन एवं तपस्या) से भी उस आत्मिक धार और ब्रह्मज्ञान की करामत के आत्मिक प्रकाश को नहीं पा सकते जो केवल उनकी सौहबत से, उनके साथ बैठने मात्र से, उनकी अब्रू (भृकुटि) के एक इशारे से, एक भंगिमा, एक अदा, एक शब्द, एक वाक्य, एक शेर या चुटकुले से हमको हासिल हो जाया करती थी.

यह हमारी मन्ज़िल है और यही रूहानी सफ़र है. यही हमारा मुराक़बा व मुराबक़ा (आध्यात्मिक सत्संग और ध्यान) है और यही मेराज़ व मक़सद (अभीष्ट तथा साध्य) है.

' तुझी को देखना तेरा ही सुनना, तुझमें गु म होना,

हक़ीक़त माफ़त, अहले-तरीक़त इसको कहते हैं !

ज़िराक़त नाम है तेरी गली में आने-जाने का,

तसब्बुर में तेरे रहना इबादत इसको कहते हैं. "

कहने का भाव है कि साक़ी की गली का हर फेरा हज़ के बराबर होता है.

वे 'कृपा सिन्धु नर रूप हरि' ही महा-मोह को दूर करने वाले प्रकाशपुंज हैं. अंधकार से प्रकाश की ओर, असत से सत्य की ओर, मौत से ज़िन्दगी की ओर ले जाने वाले हैं, ब्रह्मा, विष्णु व परब्रह्म हैं. ब्रह्म के रूप में वे भक्ति के बीज का रोपन करते हैं, विष्णुरूप में उस प्रेमबेलि का पालन करते हैं तथा शिवरूप में रूहानियत की डगर पर मुसीबतों का विनाश करते हैं और यह सब करते हुए भी खुद आज़ाद मुतलक़ (निर्लेप) अलग-थलग रहते हैं

फ़नाफ़िल शेख (पीर यानी गुरु में लय) होकर भी फ़नाफ़िल्लाह (ईश्वर में लय) की मन्ज़िल पायी जा सकती है. तालिब (जिज्ञासु) साधक को परमात्मा से मिलाने का सेतु (कड़ी) गुरु ही है. "सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य और सांरूप्य हमशक्ली ये चार दर्ज़े हैं. गुरु के सानिध्य में बार-बार उनके लोक (सत्संग में जाते-जाते परस्पर निस्ब व अक़ीदत (सम्बन्ध व प्रेम) का रिश्ता क़ायम होकर निकटता, अपनत्व या सामीप्य मयस्सर हो जाता है. यह बढ़ते-बढ़ते अंतरंग हो जाती है और प्रगाढ व अटूट सम्बन्ध बन जाने पर साधक पीर से अविच्छिन्न (एकाकार) या inseperable रूप से संयुक्त हो जाता है,जुड़ा रहता है और उनके इर्शाद, नसीहत, हिदायत व खुश अख़लाक़ (सदाचरण) को अपने जीवन में उतारने हेतु पुरकोशिश (प्रयत्नशील) रहता है. कालान्तर में मुरीद पीर का ही रूप बन जाता है ।

" फ़ना इतना तो हो जाऊँ मैं तेरी ज़ाते-आली में,

जो मुझको देख ले उसको तेरा दीदार हो जाये !

मेरे अहसास में बस गयी है एक ऐसी महक ,

कोई खुशबू मैं लगाऊँ, तेरी ख़ुशबू आये."

oooooooooo

हमारे दादागुरु महाराज का फतेहगढ़ भण्डारा.

- श्री भजन शंकर, गुड़गावां

हमारे दादागुरु महाराज का फतेहगढ़ भण्डारा.आजकल ईस्टर के मुबारक दिन मनाया जाता है. हज़रत ईसा मसीह के पुनर्जन्म का दिन है, जब वह सारे संसार की सेवा के हेतु दुबारा से जी उठे. वह मालिक सब कुछ कर सकते हैं.

आज ही के शुभ दिन लगभग 50 वर्ष पहले परम पूज्य दादागुरु महाराज हुज़ूर रामचन्द्र जी साहब, फतेहगढ़ी ने अपने सत्संग का पहला भण्डारा किया था. आज भी समाधि मन्दिर, फतेहगढ़ में नियमित रूप से ईस्टर पर भण्डारा होता है. यदि आप वहाँ हों या उनकी याद आज के रोज़ उस तरफ ताज़ा हो जाये, तो आपको प्रभु कृपा का आभास अवश्य मिल सकेगा. मन एकाग्रता ग्रहण कर लेगा, यकसूई होने पर प्रभु के चरणों में लोट-पोट हो जायेगा और विश्वास के साथ परमात्मा का क्षणिक एकाकार हो जायेगा. .

दादा गुरु महाराज ने जहाँ अपने गुरु महाराज हुज़ूर फज़ल अहमद खां साहब से सब कुछ पाया, वहाँ वह क्रिश्चियन नर्सो की सेवा से बहुत प्रभावित थे और यही कारण है कि हज़रत ईसा मसीह के अनुयायियों को दिल से, इज़्ज़त और प्रेम से याद करते थे. ताअस्सुब (धार्मिक भेद भाव) उनमें ज़रा भी न था. सबके पूज्यनीय इष्टों (पीर पैग़म्बर, आदि) में वही नूर देखते थे. उन्होंने हमेशा इस सिलसिले के बुज़ुर्गों की कृपा का हर जगह उल्लेख किया है क्योंकि यह सिलसिला ख़ामोशी पसन्द है और जन-सेवा मानसिक रूप से करता रहता है.

आइये, हम सब भी उन सब बुजुर्गों की छत्रसाया में अपने आपको हमेशा पायें और विश्वास रखें कि वे ही परमात्मा परमपिता के काम में हम सबके मार्गदर्शक, रहनुमा और सहायक हैं. हम सब उसी फ़ैज़ के समुन्दर में गोते लगाते हुए लय होने जा रहे हैं.

oooooooooooo

परम पूज्य गुरुदेव का जन्मशती समारोह - एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक भंडारा

- श्रीमती उर्मिला सक्सेना, झाँसी (उ.प्र.)

(यों तो हमारे रामाश्रम सत्संग के सारे सत्संगी भाई-बहनों का परिवार बहुत बड़भागी है जिसने परमपूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के जन्म-शताब्दी समारोह में भाग लिया. किन्तु वे सब तो और भी धन्य हो गए जिन्होंने उनके पार्थिव शरीर का साक्षात् दर्शन और सत्संगति की छत्रछाया का आनन्द-लाभ उठाया हुआ था और इस अवसर पर पुनः अपने आराध्य देव के सिकन्दराबाद स्थित साधना मन्दिर में इस सुअवसर पर अपने श्रद्धा-सुमन चढाने गये.

परमपूज्य गुरुदेव की १०१ वी जन्मतिथि पर यह मार्मिक संस्मरण उन समर्थ संत सद्गुरु की एक अति प्रिय नन्ही और सत्संग की बहुत पुरानी आदरणीया बहन जी ने बड़ी श्रद्धा, परिश्रम और विनीत भाव से प्रस्तुत किया है. आशा है यह लेख गत वर्ष भव्य समारोह में उपस्थित - तथा किसी कारणवश अनुपस्थित - सभी भाई -बहनों को उन अभूर्तपूर्व घड़ियों के प्रेरक एवं पावन पुनरावलोकन के आनंद से सरोबार कर सकेगा - सम्पादक)

समारोह का शुभारम्भ - 12/10/94

इस महोत्सव का शुभारम्भ दिनांक 12/10/94 को हुआ था तथा यह आयोजन 15/10/94 तक चला था. यह आयोजन भी सदैव के वार्षिक भण्डारे के भव्य स्थान "**चौधरी भवन** " कविनगर, ग़ाज़ियाबाद में संपन्न हुआ. किन्तु रामाश्रम सत्संग के प्रत्येक सदस्य के अंतःकरण में महीनों पहले से ही, अनगिनत कल्पनायें, भावनायें और आशाएं उमड़ रहीं थीं जो आतुर प्रतीक्षा में ही समय काट रहीं थीं. आख़िर प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हुईं और 10 अक्टूबर से ही भक्तों का शुभागमन शरू हो गया. भक्ति, श्रद्धा और प्रेम से आकंठ परिपूर्ण, दूर-दूर से सत्संगी जन अपने श्रद्धासुमन लिए आते जा रहे थे.

यद्यपि भण्डारे के आयोजन के कार्यकर्ता. मुख्यतः दिल्ली और ग़ज़ियाबाद के महानुभाव वर्षों से इस आयोजन के प्रबन्ध में तन,मन, धन समर्पित करते आये हैं, किन्तु इस बार तो

समारोह के संयोजन में कला, भावना और प्रबन्ध व्यवस्था की पराकाष्ठा लगती थी, मंच की सौंदर्य-सज्जा बहुत आकर्षक किन्तु शालीन थी. ऐसा प्रतीत होता था कि अभी यहाँ किसी महान विभूति का पदार्पण होगा. मंच के नीलवर्ण पृष्ठ भाग में गोलाकार ॐ के नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में चार बैनर्स पर लिखा था -

" श्री गुरवे नमः जन्मशती 10/94 समारोह परमसन्त पूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज, रामाश्रम सत्संग, ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)."

जिन रेशमी वस्त्रों पर यह लिखा था वे पीले और लाल रंग के थे, मानो गुरुदेव के आध्यात्मिक तेज और प्रेम की लालिमा बिखेर रहे थे. बैनर के समीप ही दोनों ओर गुरुदेव के फोटो लगाए गये थे. एक कुर्सी पर भी गुरुदेव को एक भक्त द्वारा स्व-निर्मित चित्र रूप में पीठासीन किया गया था. हॉल की दीवारों पर चारों ओर रंग-बिरंगे रेशमी वस्त्रों पर उनके अनमोल वाक्य अंकित थे जो भक्तों को प्रेरणा देते थे. पूरा माहौल ही 'कृष्णमय', अवर्णनीय, मनमोहक ओर उल्लासपूर्ण था.

प्रातः सभा में पूज्य सरदार जी भाई साहब ज्योंही मंच पर पधारे कि मंच पर उपस्थित महानुभावों तथा खचाखच भरे हॉल में अत्यंत शान्ति एवं अनुशासन से बैठे सभी उत्सुक भाई-बहनों ने खड़े होकर उनका स्वागत किया.

श्रद्धापूर्वक 'रामधुन ' के समवेत गायन से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ. ओउम जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश - तीनों देवों का समावेश है, राम जो सभी में रमा है, और जय जय राम - उस सर्वान्तरयामी की स्तुति है. इसके उपरान्त मंगलाचरण, गुरूवंदना और कुछ भक्ति-भाव से ओत-प्रोत भजन बहन शोभा शंकर व सरदारनी जी आदि ने पढ़े. फिर आन्तरिक अभ्यास - मौन साधन हुआ.

वैसे तो भण्डारों का कार्यक्रम प्रायः ऐसा ही होता है किन्तु इस बार बहुत कुछ विशेष था जिनमें मेरी तुच्छ सीमित दृष्टि में यह बातें नई सी थीं. (1) गुरुदेव की अदृश्य उपस्थिति काअहसास पहली ख़ास बात थी. (2) प्रत्येक भक्त के मन का यह भाव था कि हम उस

महापुरुष का जन्मोत्सव मना रहे हैं जो अजर, अमर, की एक स्थूल मूर्ति हम जैसों के जनोद्धार के लिए आये थे. (3) बुज़ुर्गान गुरुदेव की उन प्रिय आत्माओं की उपस्थिति का आभास जो देह बन्धन तोड़ गए थे. (4) बहन शान्ती के भक्तिपूर्ण आर्त्तस्वर वाली प्रार्थनाएं, अजस्र बरसते नेत्र, जो अब कभी देखने सुनने को नहीं मिलेंगे. (5) प्रायः सभी सत्रों में पूज्य गुरुदेव के सामने पढ़ी जाने वाली नज़्में, प्रार्थनाएं पुनः पेश की गयीं और मुख्य सभा में उज्जैन के अतिथि बंधु डॉ. रवीन्द्र भारती और भाई सतीश वर्मा ने उनकी शान में लिखी दो विशेष रचनायें पेश कीं.

मौन साधना के उपरान्त पूज्य भाई साहब के प्रवचन की अमृत वर्षा हुई. इस विषय में कुछ कहना मेरे बस की बात नहीं क्योंकि मुझे तो उस आनंद की घडी में अपनी सुधबुध ही नहीं थी. इसके बाद जलपान हेतु अन्तराल हुआ और फिर ओम शांति का जाप, रामायण का पाठ और अंत में पुनः भाई साहब की प्रेरक प्रवचन प्रसादी प्राप्त हुई.

भण्डारे का पहला दिन दादागुरु, पूज्य लाला जी महाराज को समर्पित था. अतएव, सरदार जी साहब ने पूज्य लालाजी और उनकी महानता का परिचय, उनके जीवन चरित्र और शिक्षा पद्धति पर प्रकाश डालते हुए दिया. सभा के अंत में पूज्य भाई साहब के कर-कमलों द्वारा 'भावांजलि' नामक जन्मशती के उपलक्ष्य में प्रकाशित स्मारिका का विमोचन हुआ. इसके उपरान्त प्रसाद का अर्पण तथा वितरण हुआ और प्रातः कालीन सभा समाप्त हुई. भोजन और विश्राम के बाद अपरान्ह में कार्यकारिणी की मीटिंग और सामान्य सभा की कार्यवाही सोत्साह सम्पन्न हुई.

सांध्यकालीन पूजा के लिए 6.30 बजे सब हॉल में एकत्रित हुए. पूजा की समाप्ति से पूर्व पूज्य डॉ. श्यामलाल जी के दोनों बड़े सुपुत्र डॉ. वी.के.सक्सेना एवं डॉ. डी.के.सक्सेना (दिन्ना जी और सेठ जी) बड़ी पुत्री और सत्संगी परिवार के अन्य सदस्यों सहित पधारे,जिनका मंच पर स्वागत किया गया. तुरन्त सारा माहौल हर्षतिरेक से भर उठा. यह मिलन एक लम्बे अंतराल के बाद हुआ था, दोनों ओर प्रेम, विनम्रता, आत्मीयता और रोमांचित शरीर तथा छलकते नेत्र थे. नए भाई-बहिनों ने भी देखा कि **" रामस्नेही "** कैसे मिलते हैं. सत्संग सभा में सदैव की भाँति गुरुवदना सम्पन्न हुई और फिर आगुन्तकों को सम्मानपूर्वक विदा किया गया.

जन्मशती का मुख्य दिवस - 13/10/1994

हमारे यहाँ इस महोत्स्व का सबसे महत्वपूर्ण दिन 13 अक्टूबर 1994 था. यही दिन, आश्विन शुक्ल नवमी पूज्य गुरुदेव की शुभ जन्मतिथि होने के नाते 'जन्मशती' के रूप में मनाया गया था और परम पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजलि, दरिद्रनारायण के सार्वजनिक भोज की सेवा द्वारा भी दी गयी.

आज तो पूज्य सरदार जी भाई साहब की शान्त,सौम्य, विनम्र और तेजस्वी छवि विशेष रूप में आकृष्ट कर रही थी. ऐसा लगता था कि त्रेतायुग के कोई महर्षि जन-जन को कृतार्थ करने पधारे हैं. मुझे लगा पूज्य गुरुदेव का परम तेज, इस स्थूल देह-मन्दिर में आविभूर्त हो गया है. अपने कृपापात्र बच्चों को कृतार्थ करने के लिए वे इस रूप में पधारे हैं. मैं तो अपनी बात ही जानती हूँ, वही साहस जुटा कर कह दी है - औरों के मन की भावनायें मैं क्या जानूँ ? पूज्य सरदारजी भाई साहब ने इस शुभ अवसर पर बड़े मार्मिक शब्दों में पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला.

एक महत्वपूर्ण घटना

गुरु वंदना आदि के उपरान्त एक अभूतपूर्व दृश्य देखने का सौभाग्य समस्त सत्संग परिवार को मिला. पूज्य भाई साहब ने एक थाली में रोली-चावल, पुष्पहार व मिष्ठान मंगवाया और डॉ. शक्ति कुमार को भंडारा-किचिन से बुलवाया. किसी को कुछ भी भान न था कि यह क्या हो रहा है.तभी मंच पर शक्ति भाई साहब के बैठने के पश्चात् पूज्य सरदारजी भाई साहब ने स्वयं उठकर डॉ. शक्ति कुमार को तिलक लगाया, गले में माला पहनाई, प्रसाद दिया और नमन किया. फिर गुरुदेव के चित्र का चरणस्पर्श करके उपस्थित सत्संग समुदाय के सामने घोषणा कर दी कि - "मेरे बाद डॉ. शक्ति मेरे काम को संपन्न करेंगे."

यह दृश्य अत्यंत हृदय-स्पर्शी और करुण था. सभी उपस्थित भाई-बहन रो उठे थे. सभी के हृदय में यही आकाँक्षा थी कि हमारे पराम् पूज्य और परम प्रिय भाई साहब सदा ही गुरुपद को

सुशोभित करते हुए आध्यात्म की पीयूष वर्षा करते रहें. डॉ. शक्ति जी तो अत्यंत विह्वल थे. आदरणीय सरदारनी भाभी जी ने भी शक्ति जी को प्रसाद खिलाया. एक आशीर्वचन भी गाया - **" पूता माता की आसीस ....."/** तत्पश्चात प्रसाद वितरण के साथ यह सभा विसर्जित हुई. इस ऐतिहासिक अवसर पर पूज्य भाई साहब के साथ डॉ. शक्ति जी, सर्वश्री गौतम जी, कृष्ण मुरारी जी, भजन शंकर जी, कैलाश जौहरी जी, दोनों सतीश भाई आदि. मंच पर बैठे शिक्षक-वर्ग के सभी भाइयों ने खूब सारे फ़ोटो भी खेंचे.

वंश-परम्परा के उत्तरदायित्व सौंपने के इस दिव्य कार्यक्रम के कुछ देर बाद भाई साहब के स्नेह-निमंत्रण पर दो और विशेष महानुभाव अपने सत्संगी परिवारों सहित हमारे यहाँ पधारे. पहले मान्यवर श्री हेमराज चतुर्वेदी (चौबे जी) का - जो कुछ समय से काफ़ी बीमार थे - अपने 15-20 शिष्यों सहित शुभागमन हुआ. पूर्व परिचितों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी. चौबे जी पुराने स्नेहियों से गले मिल रहे थे या पीठ थपथपा कर कुशलक्षेम पूछ रहे थे एवं अन्य अतिथि भाई-बहन भी हर्षातिरेक से गदगद थे.

भाई साहब के कमरे में अभी यह स्नेहिल मिलन चल ही रहा था कि उसी समय सिकन्दराबाद से पूज्य श्री बसंत कुमार सक्सेना, राजस्थान से श्री जुगल किशोर जी, गुरुदेव के पौत्र डॉ. नरेंद्र, कासगंज से भाई साहब श्री सुरेंद्र कुमार आदि 25-30 भाई-बहन पधारे. यह लोग एक मेटाडोर और एक कार से आये थे. चौधरी भवन के प्रवेश-द्वार पर हमारे पुराने भाइयों ने उनका जो गुरुदेव के परम कृपा पात्र थे, सादर स्वागत किया. सभी लोग पहले सरदारजी भाई साहब से मिलने ऊपर कमरे में गए. इस मिलन के आनन्द को देखने से मेरी आँखें वंचित रहीं क्योंकि ऊपर स्थान की कमी थी. अनुमानतः यह मिलन वैसा ही रहा होगा जैसा -

" कोउ कछु कहहि न कोऊ कछु पूँछा !

प्रेम भरा अति निज गति छूंछा !"

वर्षों के बिछड़े स्नेही एक दूसरे का कुशल समाचार पूछ रहे थे. फिर सब हॉल में भोजन करने गए.आज दोपहर का भोजन भी उत्सवों के अनुरूप विशेष व्यंजनों का बना था, खीर भी

बनवाई गयी थी. और ..... कितना प्रेम रस भरा था उस भोज में. भोजन के उपरान्त सबको परम पूज्य गुरुदेव की महान हस्ती को समर्पित स्मारिका - "भावांजलि" की एक-एक प्रति भेंट की गयी. पूज्य सरदार जी को सिकन्दराबाद आने का आमंत्रण देकर आगुन्तक महानुभाव वापिस सिकन्दराबाद चले गए.

सांयकालीन सभा में सूचना दी गयी कि रात्रि में 10 बजे से *"गीतों भरी शाम - गुरुदेव के नाम"* इस मंच पर ही आयोजित होगी. इस भजन-संध्या में बहुत सारे प्रेमी भाई-बहनों ने अपनी श्रद्धांजलि पढ़ने के लिए उत्साहपूर्वक भाग लिया और लगभग एक बजे कैप्टेन खन्ना जी की प्रेरणा से मंगाई गयी रवडी का प्रसाद और चाय बाँटी गयी. ऐसा 'रतजगा' गुरुदेव के समय में हमेशा हुआ करता था, यद्यपि इस बार सारी रात्रि की बजाय केवल ३ घंटे तक ही चला.

अन्तिम दिवस - दिनांक 14/10/94

दशहरा के दिन भण्डारे के अन्तिम दिवस दिनांक 14.10.94 को सभी पूर्ववत निश्चित मंगलाचरण, स्तुति, मौन साधन, गुरुवंदना, आदि कार्यक्रमों के साथ हमारे सिलसिले के सारे बुज़ुर्गों और महान गुरुजनों के चरणों में प्रसाद-भोग अर्पित किया गया और पूज्य भाई साहब के कल्याणमय सदुपदेशों, आशीर्वचन और आभार व्यक्त करने के साथ सदा की भांति भाव-पूर्ण समापन समारोह सम्पन्न हुआ. बाहर लौटने वाले भाई लोग तो आशीर्वाद और प्रसाद प्राप्त करके लौटने लगे किन्तु अभी भी लगभग आधे लोग सांयकाल की सभा का अमृत रस पान करने को ठहरे हुए थे - विशेषतः इसलिए कि पूज्य भाई साहब सभी से मिलने के लिए यहाँ सभा-स्थल में ही रुक गए थे ।

सिकन्दराबाद यात्रा - 15/10/94

दिनांक 15-10-94 को प्रातःकालीन सत्संग समाप्त करके भाई-साहब अपने सहयोगियों और कुछ शिष्यों के साथ

5-6 कारों और एक बस में सिकन्दराबाद गए. उसी दिन वापिसी में दोपहर को पूज्य डॉ. श्यामलाल जी के घर भी भाई साहब अपने साथियों सहित पूजा में गए और सबने लंच ग्रहण

किया और फिर वहीं पूज्य सरदारजी ने डॉ. महेश भाई साहब के निवास पर बने परम पूज्य गुरुदेव के सुपरिचित पूजा-स्थान पर भाभीजी (श्रीमती महेश) आदि के साथ बैठ कर पूजा की. कुछ कारणों वश मैं इस यात्रा से वंचित रही. तो भी वहाँ जाने वाले भाई-बहनों का आँखों देखा हाल, जैसा कुछ सुनने को मिला, उसका संक्षिप सा वर्णन करे बिना यह वृतान्त अधूरा सा रह जायेगा. इसमें जो भी त्रुटि रह गयी हो, उसे पाठक कृपा कर क्षमा करें.

पूज्य गुरुदेव के जन्म की अंग्रेजी तारीख़ 15 अक्टूबर 1894 थी, इस नाते सिकन्दराबाद में भी उसी दिन जन्मशती का मुख्य उत्सव रखा गया था. इसीलिए पूज्य भाई साहब के साथ लगभग 60-70 पुराने भाई-बहन जब वहाँ पहुँचे तो पूज्य बसंत बाबू अपने वरिष्ठ साथियों तथा प्रमुख व्यक्तियों के साथ पूज्य भाई साहब का स्कूल-द्वार पर स्वागत करके, उनको गुरुदेव के निवास-स्थान पर सत्संग-भवन में ले आये. आते ही पूज्य सरदारजी, डॉ. शक्ति जी, सर्वश्री गौतम जी, कृष्णमुरारी जी, भजन शंकर जी, कैलाश जौहरी जी, सतीश बाबू, उमाकांत जी, पाठक जी, कुलश्रेष्ठ जी, सक्सेना जी आदि सभी भाई-बहन समाधि वाले कमरे में भीतर गए जहाँ उन्होंने क्रमशः पूज्य गुरुदेव और डॉ. बैनर्जी साहब की समाधियों के सन्मुख दण्डवत प्रणामादि करके श्रद्धा सुमन चढ़ाये. फिर सब पूजा वाले आंगन में लौट आये, जहाँ आज पूज्य गुरुदेव का एक सुन्दर रंगीन चित्र लगा था. उपस्थित सत्संग समाज ने कृतज्ञ भाव से नतमस्तक, खड़े होकर माननीय अतिथियों का अभिनंदन नमन किया.

पूजा-स्थल पर माननीय बसंत भाई साहब ने सविनय पूज्य सरदार जी साहब को मुख्य आसन ग्रहण करने और प्रवचन उपदेश करने का अनुरोध किया. ज्योंही पूज्य भाई साहब ने गुरुदेव की शान में अपने बहुमूल्य श्रद्धाभाव व्यक्त किये उनकी महती कृपा की करुणा के कुछ ह्रदय विदारक संस्मरण सुनाये और बसंत भाई साहब के गुणों की प्रशंसा की, तो सारी संगत प्रेम विह्वल होकर लगातार रोती रही. कैसी रही होंगी वे अनमोल घड़ियाँ जबकि इस आनंद मिलन की स्थिति में पूज्य गुरुदेव के आलौकिक प्रेम की वर्षा ने सबको सराबोर कर दिया था. काश ! मैं भी उस पवन घडी में वहाँ उपस्थित होती.

इसके उपरान्त बहन शोभा, सरदारनी जी और श्री भजन शंकर आदि ने अपने श्रद्धापूर्ण भजन पढ़े तथा गुरु वन्दना, 'दुआ और सलाम' आदि के साथ पूज्य गुरुदेव के चरणों में प्रसाद अर्पण करके सत्संग समाप्त हुआ.

जलपान के समय जहाँ ग़ाज़ियाबाद में नए भाई-बहन पूर्व परिचितों से घिरे हुए परस्पर हालचाल पूछने में मस्त रहे, वहीं स्थानीय लोगों ने - जिनमें डॉ. नरेंद्र, सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार, बंशीधर जी, रामचन्द्र लालजी,ओ.पी.जौहरी, हरी मोहन सिन्हा, बाबू इन्द्रसेन, गोपाल बक्षपाल, तोषनिधि आदि प्रमुख थे - उन्होने खिलाने-पिलाने में कोई कसर नहीं रखी.

और फिर प्रेमपूर्वक विदाई लेकर गुरुदेव के प्यारों का यह कारवां पूज्य डॉ. श्याम लालजी के निवास पर ग़ाज़ियाबाद पहुँचा. वहाँ भी पूज्य गुरुदेव की जन्मशती उत्साह से मनाई जा रही थी. डॉ. साहब के दोनों बड़े पुत्रों ने, जोकि गुरुदेव से ही दीक्षित थे, सरदारजी साहब की पार्टी की सप्रेम आवभगत की और सबको सानुरोध प्रसाद और भोजन खिलाया. यहाँ भी गुरुदेव के प्रेम की मिठास भरी थी.

कुछ नए प्रकाशन भी इस महोत्सव के महत्वपूर्ण 'स्मारक' बने. पूज्य गुरुदेव की स्मृति में प्रकाशित पूर्व उल्लिखित एक सुन्दर स्मारिका '**भावांजलि**' वास्तव में संग्रहणीय और दुर्लभ प्रकाशन है. इसके मुख्य पृष्ठ पर गुरुदेव का प्रसन्न मुद्रा में पूर्ण रंगीन चित्र अति सुन्दर है, साथ ही छपाई-सफाई भी सुरुचिपूर्ण है. अन्दर पहले खण्ड में गुरुजनों के अनेक दुर्लभ फोटो छपे हैं. 'गुरुवंदना' के उपरान्त अन्य सम्प्रदायों के कुछ महानुभावों के विचार हमारे गुरुदेव के विषय में दिए गए हैं. इन महापुरुषों में गोरखपुर के डॉ. अक्षय कुमार बैनर्जी महाराज, पूज्य देवराहा बाबा, स्वामी चिन्मयानंद पुरी जी और डॉ. हरनारायण सक्सेना तथा श्री पालसिंह जी के नाम प्रमुख हैं.

फिर श्रद्धेय सरदारजी, डॉ. हरीकृष्ण डॉ. बसंत बाबू, श्री चौबे जी तथा गोपालजी आदि वरिष्ठ शिष्यों के विचार तथा अनेक सत्संगियों के प्रेरणा भरे संस्मरण चयन करके दिए गए हैं. बीच-बीच में पूज्य गुरुदेव के समय गाये जाने वाली कुछ ख़ास नज़्मों, ग़ज़लों और कुछ कविताओं का संयोजन भी सुन्दर है.. सम्पादक, सतीश वर्मा जी का यह प्रयास एक तरह से

सफल और सराहनीय उपलब्धि है क्योंकि 'भावांजलि' के विविध खण्डों में उन पूज्य महापुरुष के विषय में - उनकी रहनी-सहनी, कथनी-करनी आदि सभी पहलुओं का - भरपूर परिचय, उस एक ही प्रकाशन में संकलित कर दिया गया है.

दूसरा प्रकाशन था **'प्रेम का सूर्य'** नामक पुस्तक. यह पुस्तक बहन शान्ता श्रीवास्तव के अथक परिश्रम का परिचायक है. मुख्य पृष्ठ पर गुरुदेव का शान्त, सौम्य, तेजस्वी चित्र है. इस पुस्तक में इस्लाम, हिन्दू, बौद्ध और ईसाई धर्मों का गहन अध्ययन करके उनके मुख्य सिद्धांत देकर गुरुदेव की शिक्षाओं से उन साम्य दिखाया गया है. यह पुस्तक भी उपयोगी व संग्रहणीय है.

तीसरा प्रकाशन **'राम सन्देश ' का 'विशेषांक** भी इस बार विशेष सुन्दर और ठोस सामग्री, विशेषतः पूज्य भाई साहब द्वारा दी गयी 'इज़ाज़तों की घोषणा' सहित छपा है. इसी अवसर पर बहन शोभा के मधुर कंठ से गाये गए 'भजनों का कैसेट' भी निकाला गया जो सबको बहुत अच्छा लगा. (पाठकों को ज्ञात हो कि अब तो सरदारनी बहिन जी का 'शबदों का कैसेट' भी बन चुका है और सत्संगियों के लिए उपलब्ध है. जन्मशती के उपलक्ष्य में ही गुरुदेव के चित्र वाले स्मृति-चिन्ह (मैटल बैजेस) भी बनवाये गए.

वे सभी सत्संगी भाई-बहन धन्य हैं जो इस भव्य आयोजन में सम्मिलित थे. मैं तो अपने को परम कृतार्थ मानती हूँ. आँखों से देखा, ह्रदय ने अनुभव किया, किन्तु दोनों ही इस मधुर-स्मृति में मूक हैं. और वाणी इस महान आनन्द के वर्णन में असमर्थ है. बस यही कह कर अपनी लेखनी चला पाई हूँ कि ऐतिहासिक एवं महान आध्यात्मिक स्नेह-सम्मेलन में सभी कुछ अविस्मरणीय और अकथनीय था. सो उसी घटना-क्रम को दोहराने का - सत्संगी परिवार को फिर से वही अमित आनन्द अनुभूति कराने का - विनीत भाव से सेवा में प्रस्तुत है.

रामाश्रम सत्संग, ग़ाज़ियाबाद की कार्य प्रणाली

सत्संग में प्रवेश, दीक्षा तथा इज़ाज़तें

- श्री कैलाश नारायण जौहरी, ग्वालियर.

हमारे **ख़ानदाने नक़्शबन्दिया** की गुरु-शिष्य परम्परा में यदि कोई व्यक्ति वास्तव में आत्म साक्षात्कार करने का इच्छुक है तो संतमत के आचार्य (विशेषकर रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद के) सर्वप्रथम उसे आन्तरिक अभ्यास सिखाते हैं. संतमत (सूफ़ीमत) की चक्रबेधन विद्या सीखने की प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता है - धर्म, आयु, अमीरी-गरीबी, स्त्री-पुरुष, की इसमें कोई बन्दिश नहीं है. यह पहली सीढ़ी है. सच्ची जिज्ञासा लिए हुए साधक परमार्थ की राह में सर्वप्रथम गुरुकृपा द्वारा यह उन्नति करता हुआ, रास्ते की मन्ज़िलें पार करता हुआ एक दिन आत्मानुभव कर लेता है.

इसके बाद साधक दूसरी सीढ़ी पर पग रखता है. सत्संग में आते-आते ज्यों-ज्यों उसका अधिकार बढ़ता जाता है, सांसारिक बंधन ढीले होने लगते हैं और मालिक के चरणों में सच्चा लगाव पैदा होने लगता है, तब वह चाहता है कि कोई सहारा मिले, कोई सच्चा मार्गदर्शन करे.

ऐसी सूरत में उसकी प्रार्थना पर सत्संग के आचार्य उसे उपदेश देकर अपनी शरण में ले लेते हैं, इसे गुरु दीक्षा या मंत्र लेना कहते हैं. सूफ़ियों की भाषा में इसे "बैत " कर लेना कहते हैं. यह बैत बिकना शब्द से बना है - बैत यानी बिका हुआ.

वास्तव में यह बैत शब्द सर्वथा उपयुक्त शब्द है. शिष्य गुरुमंत्र लेने से गुरु के हाथों बिक जाता है. पहली अवस्था में, यानी जब तक गुरु धारण नहीं किया हो, साधक स्वतंत्र होता है कि किसी भी सत्संग में, किसी भी संत महात्मा के पास जाये, कहीं भी गुरु की खोज करे. परन्तु इस अवस्था में एक बार गुरु धारण करने पर वह बिक जाता है और उसकी यह स्वतंत्रता जाती रहती है.

गुरु धारण कर लेने पर साधक की स्वतंत्रता एक पतिव्रता स्त्री की तरह अपने गुरु तक मर्यादित हो जाती है. ऐसी स्थिति में गुरु की आज्ञा का पालन करना और उनकी रहनी-सहनी और सदाचार का अनुसरण करना शिष्य-साधक का परम कर्तव्य हो जाता है. यह ही गुरु धारण करना है.

अब जितना नितान्त अंतरंग एवं समर्पण शिष्य का बढ़ता जाता है उतना ही उसका रास्ता आसान होता जाता है. शिष्य का गुरु में समर्पण भी उसकी आंतरिक अवस्था के अनुसार अलग-अलग स्तर का होता है.

इज़ाज़तें

हमारे सिलसिले में जब किसी संत सद्गुरु (महात्मा) के निर्वाण का समय निकट आता है, तब वंश के पूर्वजों के आन्तरिक संकेत पर अपने एक या दो (कभी-कभी अधिक भी) मुरीदों (शिष्यों) को सम्पूर्ण आचार्य पदवी (मुकम्मिल इज़ाज़त ताअम्मा) देकर अपने जीवनोपरान्त आध्यात्मिक विद्या के प्रसार-प्रचार हेतु नियुक्त कर देते हैं. एक तो उनकी संतान में से, अगर वह सिलसिले में हो तो और दूसरा जो शिष्य उनकी मुराद या गुरुमुख होता है. इसके अतिरिक्त अपने गुरुभाइयों में से भी जिसको योग्य समझते हैं विभिन्न श्रेणी की इज़ाज़तें दे देते हैं. यह इज़ाज़तें चार प्रकार की होती हैं :-

(1) इज़ाज़त शर्तिया : मॉनीटर

यह एक इज़ाज़त शर्तिया है. साधक अभ्यास करते-करते गुरु कृपा द्वारा आन्तरिक चक्रों को बेधता हुआ जब ह्रदय चक्र से ऊपर उठकर छठें चक्र पर जिसे विलायत सुगरा या पिण्डीमन का स्थान कहते हैं, पहुँच जाता है तो आचार्य उसे प्रतिबन्धित आज्ञा - इज़ाज़त शर्तिया दे देते हैं. यह एक प्रकार से मॉनीटर बनाना है. जैसे विद्यालय की एक कक्षा में सब विद्यार्थियों में से किसी एक को मॉनीटर नियुक्त कर देते हैं, इसी तरह से सत्संग के आचार्य केन्द्रवार या क्षेत्रवार जिस सत्संगी को उचित समझते हैं, इज़ाज़त शर्तिया (मानीटर) पदवी दे देते हैं. ऐसे

मॉनीटरों का यह दायित्व है कि गुरु की आज्ञानुसार सत्संगियों को अनुशासन में रखें, सत्संग करें और करायें.

(2) इज़ाज़त तालीम : शिक्षक

यह इज़ाज़त साधक की है. यानी जब साधक त्रिकुटी के स्थान पर (जिसे विलायत कुबरा या ब्रह्माण्डी मन का स्थान कहते हैं) पहुँचता है तो उसे इज़ाज़त तालीम दे दी जाती है. अब उसका दायित्व है कि वह आचार्य के संरक्षण में पुरानों के साथ-साथ नए जिज्ञासुओं को भी एकत्र करे, उन्हें आध्यात्मिक शिक्षा देने का कार्य करे, सत्संग के उद्देश्यों से अवगत कराये, सत्संग की किताबें पढ़े, पढ़ाये.

वह उतनी तालीम (शिक्षा) दे सकता है,जहाँ तक वह स्वयं पहुँच (रसाई) हासिल कर चुका है. उसे उपदेश देने, प्रवचन देने, दीक्षा देने या बैत करने का अधिकार नहीं होता.

(3) इज़ाज़त बैत : आचार्य पदवी

त्रिकुटी के स्थान पर ऊपर की चढ़ाई करके जो अभ्यासी आत्मा के स्थान पर पहुँच चुके होते हैं उन्हें सत्संग के अधिष्ठाता (सर्वोच्च आचार्य) गुरु पदवी दे देते हैं. सत्संगियों की शिक्षा (आध्यात्मिक) के अलावा इन्हें यह भी अधिकार प्राप्त होता ही कि वे जिज्ञासुओं को " उपदेश" (दीक्षा) दें जिसे सूफ़ियों में बैत करना कहते हैं. ये लोग दूसरे अभ्यासियों को इज़ाज़त नहीं दे सकते.(बल्कि अनुशासन व अदब के लिहाज़ से इज़ाज़तदाता आचार्य (सतगुरु) के जीवन में बैत भी नहीं करते हैं.

(4) इज़ाज़त ताअम्मा (मुक़्क़मिल इज़ाज़त) यानी सम्पूर्ण आचार्य पदवी.

यह सिलसिले की आख़िरी इज़ाज़त है. इसका मतलब है कि " जो तुम हो सो मैं हूँ " और इज़ाज़त देकर अपने से अलहदा (स्वतंत्र) कर देते हैं. जिन सज्जनों को यह इज़ाज़त प्रदान की जाती है वे एक या दो (कभी-कभी इससे अधिक व्यक्ति भी) होते हैं और अपने आध्यात्मिक गुरु का काम करने के लिए उनके साथ आते हैं और पिछली कमाई किये होते हैं. वर्तमान जन्म पिछली किसी कमी को पूरा करने और शेष जीवन अपने गुरु के मिशन को फैलाने में व्यतीत

करते हैं. ये ही गुरुमुख या मुराद कहलाते हैं. ये हज़ारों में से कोई एक या दो गुरु के फ़िदायी यानी आशिक (प्रेमी) होते हैं.

इज़ाज़त ताअम्मा या सम्पूर्ण इज़ाज़त (इज़ाज़त कुल्ली) वर्तमान सर्वोच्च आचार्य/आचार्य अधिष्ठाता द्वारा लिखित रूप में दी जाती है. इस पर मौज़ूदा वक़्त के किसी पूरे संत की तस्दीक़ (पुष्टि) होती है. जिनको यह इज़ाज़त होती है वे आचार्य के सच्चे उत्तराधिकारी या खलीफा होते हैं. वे पूर्ण गुरु होते हैं. उन्हें सर्वाधिकार प्राप्त होते हैं, वे दूसरे अभ्यासियों को भी पात्रतानुसार इज़ाज़त दे सकते हैं और अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर सकते हैं. ऐसे व्यक्ति को इज़ाज़त देने के बाद आचार्य अपने से दूर कर देते हैं, जिसे ख़िलाफ़त प्रदान करना भी कहते हैं.

हमारे यहाँ इस आख़िरी इज़ाज़त को देते वक़्त अगर यह देखते हैं कि अभ्यासी की पूर्णता (तकमील) गुरु की खैंच शक्ति द्वारा (कश्फी तौर पर) तो हो चुकी है परन्तु शिष्य के अभ्यास द्वारा (कशवी तौर पर) नहीं हुई है तो कभी-कभी बेरास्तें न हो जाये, इस सावधानी (एतिहात) के लिए पुष्टि (तस्दीक़) करने हेतु किसी समकालीन पूर्ण संत के सुपुर्द कर देते हैं. अन्यथा यह पुष्टि (तस्दीक़) सबके लिए ज़रूरी नहीं है.

वैसे तो उपरोक्त सभी इज़ाज़तें ही सम्बंधित अभ्यासी की स्थिति (रसाई - यानी पहुँच जहाँ तक हो) का उल्लेख करते हुए लिखित रूप में दे देते हैं, परन्तु अन्तिम दोनों इज़ाज़तें (इज़ाज़त बैत तथा इज़ाज़त ता-अम्मा) लिखित रूप में होना अनिवार्य है ताकि कोई अनाधिकृत व्यक्ति इस काम को न करने लगे और सिलसिला बिगड़ जाए, अनुशासन बना रहे).

(ह.) डॉ. करतार सिंह

अध्यक्ष आचार्य, रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद

(जीवन चरित्र के पृष्ठ ११५-११७ तथा ४८-४९ तथा संत वचन के पृष्ठ १११, ११२ पर आधारित तथा राम सन्देश में भी आदेशानुसार प्रकाशित)

हमारे रामाश्रम सत्संग के विविध प्रकाशन तथा राम सन्देश पत्रिका का इतिहास

-- श्री बृज मोहन शर्मा, नोएडा

हमारे सिलसिले के बुज़ुर्गों ने इस 'सीना-ब-सीना' रूहानी विद्या के बारे में हर प्रकार के प्रचार की मुमानियत कर रखी थी. तो भी जब इस आध्यात्मिक मार्ग में जिज्ञासु साधकों की संख्या काफी बढ़ गयी तो एक अनिवार्य सी आवश्यकता महसूस की गयी कि उन्हें सहज ज्ञान कराने के लिए लिखित साहित्य को भी प्रकाशित किया जाये.

इसी आशय से परम् संत प्रवर डॉ. श्रीकृष्ण लाल साहब ने अपनी प्रवृति के अनुसार एक मासिक पत्रिका 'राम सन्देश' के प्रकाशन को बहुत ही सुनियोजित ढंग से उच्च स्तर पर प्रारम्भ किया था. इसी उद्देश्य को राम सन्देश की प्रारम्भिक भूमिका में परम् पूज्य डॉ. साहब ने अपनी भाषा में स्पष्ट किया था जोकि पुनः उद्घृत है :

राम सन्देश की भूमिका से

' मुद्दत से बहुत से सत्संगी भाई इस बात पर ज़ोर दे रहे थे कि एक रिसाला इस किस्म का निकाला जाए जिसके ज़रिये हिदायत वक्तन-फवक्तन (समय-समय पर शिक्षायें) सत्संगी भाइयों को मिलती रहें और गुरुदेव के हालात ज़िन्दगी (जीवनी) जो मुझको मालूम है, छप जाये और उनकी तालीम को यकजाई (एकत्रित करके) किताब की शक्ल दे दी जाये.

मैं अपनी नाक़ाबलियत अदीमउल्फुर्सती (समयाभाव) और मायावी झंझटों से बचने के लिए यह हिम्मत न कर सका, लेकिन अब मुझको कुछ फुरसत है और यह देखकर कि अभी तक कोई हालात ज़िन्दगी गुरुदेव की मुकम्मिल सूरत में शाये नहीं हुई, जो वाक़यात मुझे मालूम हैं, जिनको मैं परमसन्त जनाब चाचाजी साहब (महात्मा मुन्शी रघुबर दयाल साहब) से

सुनता रहा और खुद सोहबत में रह कर देखता रहा, गुम हो जायेंगे. और यह देखकर कि आपकी तालीम अगर उसको कलमबन्द न किया गया तो आहिस्ता-आहिस्ता महब (लुप्त) हो जाएगी. हर क़िस्म की कमी महसूस करते हुए भी, उसके सहारे पर भरोसा करते हुए,जो सबको सहारा देता है, इस काम को शुरू करता हूँ."

(यह ज्ञातव्य रहे कि पूज्य डाक्टर साहब अंग्रेजी, उर्दू-फ़ारसी के अच्छे विद्वान थे और आपने लगभग चालीस वर्ष की आयु में हिंदी भाषा सीखी)

सत्संग का अपना प्रेस था और उस दौर में पं. काशीनाथ जी का इस कार्य सम्पादन में काफ़ी सहयोग रहा. परमपूज्य डाक्टर साहब स्वयं इसके सम्पादक थे. डॉ. महेश चन्द्र पत्रिका के प्रकाशक एवं मुद्रक सदैव रहे.

सन 1970 से 1984 तक इसका सम्पादन वर्तमान आचार्य डॉ. करतार सिंह जी ने भले ही किया हो, परन्तु डॉ. महेश चन्द्र जी सह-सम्पादक के रूप में कार्य बराबर करते रहे. उन्होंने वैधानिक रूप से सम्पादन सन 1985 से 1991 तक किया. वास्तव में जीवन-पर्यन्त डॉ. महेश भाई साहब इस पत्रिका के सम्पादन, प्रकाशन और मुद्रण के मेरुदण्ड बने रहे. वे इस कार्य को सपरिवार गुरु-पूजा के रूप में ही करते थे. परमात्मा ने उन्हें इस काम के लिए अवश्य नवाज़ा होगा.

आदरणीय महेश भाई साहब के स्वर्गवास के उपरान्त सन 1991 से पत्रिका का सम्पादन श्री सतीश वर्मा जी बड़ी निष्ठां के साथ कर रहे हैं. उन्होंने पत्रिका के आकार में विस्तार-सुधार करके उसे दिनोदिन अधिक साहित्यिक और सुन्दर रूप दिया है. हमारी शुभकामनायें हैं कि यह विधा दिनोदिन परिष्कृत होगी और आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों को छूती हुई पत्रिका का बहुमुखी विकास करेगी.

इस मासिक पत्रिका के अतिरिक्त परमपूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज ने उच्चकोटि के आध्यात्मिक साहित्य के प्रकाशन को यथोचित महत्व दिया. अपने गुरुतुल्य परमसन्त डॉ. अक्षय कुमार बनर्जी साहब की रचनाओं को प्रकाशित साहित्य का रूप दिया, जिसे देश-विदेश में

उचित सम्मान और सराहना मिली है. इस समय हमारे सत्संग के तीस प्रकाशन हैं, जिनसे हम सब आध्यात्मिक लाभ उठा रहे हैं. इन्हीं प्रकाशनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है.

(1) **फ़क़ीरों की सात मन्ज़िलें** - महात्मा रामचन्द्र जी के चचेरे और गुरु भाई, संतवर डॉ. कृष्ण स्वरुप जी जयपुरी, ने इस पुस्तक की रचना की है. आपने ब्रह्मविद्या के सोपानों को बहुत ही सरल, सहज और स्पष्ट ढंग से समझाया है. इस पुस्तक में उस मार्ग को सात सोपान या सीढ़ियों में विभक्त कर, प्रत्येक में पड़ने वाले विघ्न के प्रति जिज्ञासुओं को सतर्क किया है. पुस्तक की भाषा फ़ारसी मिश्रित सरल उर्दू है. परमसन्त डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी ने पुस्तक का प्रकाशन और मुद्रण करते समय इसका संशोधन और परिवर्धन किया और क्लिष्ट शब्दों के अर्थ सरल हिन्दी में लिखवाये हैं. पुस्तक स्व-अनुभव पर रचित है, इस कारण पाठक पर अपनी अमिट छाप डालती है. हर श्रेणी के साधक के लिए बहुत ही उपयोगी है और इस मार्ग पर चलने वालों के लिए कवच का काम करती है.

(2) **जीवन चरित्र :** पूज्य महात्मा रामचन्द्र जी महाराज - परम् सन्त डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी ने अपने गुरु श्रेष्ठ के जीवन चरित्र को बहुत ही रोचक ढंग से लिखा है. संतमत के सिद्धान्त, अपनी आध्यात्म-वंश-परम्परा, पूर्व संतों का परिचय, गुरु-शिष्य आदर्श व्यवहार, पारिवारिक सम्बन्धों का दायित्व वहन आदि सर्व -सामाजिक विधाओं का परिपालन कर, इसे प्रबन्ध काव्य का सा रूप दे दिया गया है. साधकों को उनकी साधना में आने वाली समस्त समस्याओं का समाधान भी इसमें उपलब्ध है.

(3) **सवाने उमरी** : जीवनी पूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज - उर्दू भाषा के शब्द 'सवाने उमरी ' का अर्थ हिन्दी में 'जीवन-चरित्र' होता है. किसी समय परम् पूज्य डाक्टर साहब ने अपने परमप्रिय शिष्य डॉ. (स्व.) महेशचन्द्र जी से कहा कि हमारी सवाने उमरी तुम लिखना. डॉ. महेश चंद्र जी इस कार्य को अपने जीवन में करने के लिए बड़े चिन्चित थे. परमात्मा का शुक्र है कि उन्होंने इस कार्य को सफलतापूर्वक अपने जीवन के अन्तिम दशक में पुस्तक का रूप देकर सम्पन्न कर दिया था.

इसमें परमपूज्य डाक्टर साहब के जीवनवृत तथा उनकी आध्यात्मिक शिक्षा और आचार्य-पद प्राप्ति, उनकी छवि और प्रारम्भिक जीवन का बड़ा रोचक वर्णन है. उनके व्यक्तित्व के अतिरिक्त अन्य कई विषयों यथा - सन्त मत की व्याख्या, गुरु की अनिवार्यता, आध्यात्मिक शिक्षा का तरीक़ा, उनके सानिध्य के संस्मरण आदि समाहित हैं. परमपूज्य डाक्टर साहब के काल से आजतक सिलसिले (सत्संग) के ऐतिहासिक तथ्य और समकालीन वक्त्वयों का विवरण जैसे पूज्य भाई साहब डॉ. करतारसिंह जी का पूज्य गुरुदेव की शरण में आना, बनर्जी साहब, परमसन्त डॉ. श्याम लाल सक्सेना, परमपूज्य श्री सेवती प्रसाद, कासगंज से महात्मा श्रीकृष्ण लाल जो की भेंट सम्बन्ध और कुछ उपदेश आदि दिए गए हैं.

(4-5) **अमृत रस (भाग 1 व 2**)- सत्संगियों ने जो पत्र अपने दैनिक जीवन की व्यथा और समस्याओं के निवारण के लिए लिखे और उनके उत्तर में समाधान या व्यथा को दूर करने के साधन परमपूज्य महात्मा रामचन्द्र जी महाराज और परमपूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी ने दिए, वे ही इस पुस्तक में समाहित हैं. भाग-1 परम् पूज्य महात्मा जी के पत्रों का और भाग-2 डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी के पत्रों का संकलन है. इन पत्रों में दो विशेषताएं हैं. एक तो यह कि ब्रह्म-विद्या की गुत्थियों को सरल भाषा में खूब समझाया गया है. दूसरे, हर व्यक्ति के नित्य -प्रति के सांसारिक जीवन में जो सामान्य या विशिष्ट समस्यायें उठती हैं, उनका निवारण किस प्रकार किया जाये, यह बहुत ही व्यावहारिक रूप से दिया गया है. आप खुद सोचें कि यह पुस्तक हमारे लिए कितनी सहायक है ?

(6-8) Discourses on Hindu Spiritual Culture by Dr. A.K. Banerji (Part 1, 2 & 3)

परमपूज्य डॉ. अक्षय कुमार बनर्जी जी ने समस्त धर्म के अनुयायिओं के लिए, चाहे वे हिन्दू हों या अहिन्दू, इस पुस्तक में हिन्दू-धर्म के सही सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर समस्त भ्रांतियों का निवारण करने का प्रयत्न किया है. महान संत ने भाग १ में संस्कृति के उत्थान या यों कहें कि मनुष्य मात्र के उत्थान को स्पष्ट किया है. उनका दृढ मत है कि हिन्दू धर्म के अनुसार मनुष्य शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि सब का स्वामी है. आपने मात्र हिन्दू दर्शन का

विवेचन ही नहीं किया है बल्कि पाठक को कलात्मक ढंग से उस स्तर तक ले जाते हैं जो सुख-दुःख से परे है और वहाँ वह अविनाशी में विलीन हो जाता है और जीवन के सार (आत्मतत्व), ज्ञान, आनन्द और अभेद का आनन्द विभिन्नता में लेता है. दर्शन और धर्म में भेद करने पर पूजयपाद श्री बनर्जी साहब ने बहुत ज़ोर दिया है. उन सबको सन्तों के जीवन-चरित्र देकर प्रमाणित किया है.

(9**) गुरु शिष्य सम्वाद -** कबीर साहब और उनके शिष्य जनाब जहांगशत साहब, जो धर्म से मुसलमान थे और विदेश से आये थे, के बीच हुई ब्रह्मविद्या की चर्चा पर आधारित है. जनाब जहांगशत साहब के मन में जो शंकाएं थीं उन महापुरुष ने पूर्ण रूप से वर्णित करी हैं. वे शंकाएं और उनका समाधान ही 'गुरु-शिष्य-सम्वाद' में दिया है. गुरु भक्ति की समस्त विधाओं का इस पुस्तक में बहुत सुन्दर और सपाट विवेचन है. हिन्दू और मुसलमान दोनों ही में इसका बड़ा महत्व है. ब्रह्म-विद्या में जात-पाँत या हिन्दू और मुसलमान धर्म का कोई भेद नहीं होता. प्राणी मात्र उस परमात्मा का अंश है और पूर्णता प्राप्त करके उस अंशी में ही विलीन हो जाता है.

(10-16) **संत वचन** (भाग 1 से 7) (अब 9) - इस पुस्तक के विंभिन्न भागों में परमपूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लालजी के प्रवचन संकलित हैं जो वे सत्संग समागम, भण्डारों या साप्ताहिक सत्संग में देते थे, या तो उनके सेवकों द्वारा लिखे जाते थे या टेप कर लिए जाते थे. कुछ उनके स्वयं के हस्तलिखित थे. वे सभी इन भागों में छपे हैं. ब्रह्म-विद्या के क्षेत्र में लगभग हर विषय पर उनका प्रवचन उपलब्ध है. उनको पढ़ने और उन पर मनन करने से सत्संगियों को उनकी शिक्षा का लाभ उनके शरीर त्यागने के बाद आज भी मिलता है.

(17-18) **नवनीत** (भाग 1 और 2) - इस पुस्तक के दोनों भागों में परमपूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी के संत-वचन के सातों भागों में से तत्वपूर्ण अंशों का सुन्दर संचयन प्रस्तुत किया गया है. सार-अंशों को जो जिज्ञासु अथवा साधक ध्यान से पढ़कर, मनन करके, अपने जीवन में इन्हें व्यावहारिक रूप देंगे, उन्हें आशातीत लाभ होगा.

(19) **घट मार्ग -** चक्र भेदन विद्या को कबीर साहब ने एक वाणी में वर्णित किया है - " जो ब्रह्माण्डे सो पिण्डे" यानी ब्रह्माण्ड की रचना पिण्ड (शरीर) जैसी ही है. शरीर के अन्दर के मार्ग को घट-मार्ग कहा है. यही चक्र-भेदन है. शरीर में स्थित चक्रों के पार करने पर ईश्वरी ज्ञान प्राप्त होता है. परन्तु योग्य शिक्षक के बिना इस मार्ग को तय नहीं किया जा सकता है. फिर भी उन्हीं गूढ़ रहस्यों कि सरल व्याख्या इस पुस्तक में की गयी है.

(20) **अभ्यास में मन न लगने के कारण और उपाय** - महात्मा बुद्ध ने चार आर्ष सत्यों का प्रचार किया था - दुःख का अनुभव करना, उसका निवारण ढूंढना, दुःख-निवृति पश्चात् क्या स्थिति होगी - इसका विचार करना तथा दुःख निवृति का उपचार. परमसन्त डॉ. श्रीकृष्णलाल जी ने ज्ञान गुरु-कृपा, निज प्रयास और सतत खोज से पाया था. उन्हें हर स्थिति का मौलिक अनुभव था. मन न लगने के विभिन्न कारण जो उन्होंने इस छोटी सी पुस्तक में दिए हैं, उन्हें पढ़कर हर जिज्ञासु को ऐसा लगता है कि यही मेरी समस्या है. उसी का सरल उपाय पढ़कर उसे प्रसन्नता होती है और उन उपायों से निज समस्याओं से निजात पाकर तो वह कृतकृत्य हो जाता है.

(21) **साधन चतुष्टय** - समर्थ गुरु परमसन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज द्वारा रचित इस पुस्तक में साधना के चार चरणों का इतना रोचक वर्णन है कि नौसिखियों को भी इधर आध्यात्म की ओर रुजू होने की प्रेरणा मिलती है.

(22 से 29) **संत प्रसादी** (भाग 1 से 8) (अब 1-15) संत-प्रसादी वर्तमान आचार्य एवं अध्यक्ष के प्रवचनों का संकलन है. यह दीनता और गुरु का अदब ही है कि परमपूज्य सरदारजी महाराज संत-वचन से वाचन कराके उसकी विवेचना के रूप में अपना प्रवचन देते हैं. उनके प्रवचन सुनने-पढ़ने से ऐसा ही आभास और प्रभाव होता है जैसा समर्थ सद्गुरु महात्मा रामचद्र जी, परमसन्त डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी की उपरोक्त रचनाओं और किसी पूर्व आचार्यों की रचनाओं के पठन-पाठन से होता है. यह इस बात का प्रमाण है कि सिलसिले के हर बुज़ुर्ग से अब तक के आचार्य की कड़ी बड़ी मज़बूती से जुडी हुई रहती है.

(30) **आराधना -** यह हमारे सत्संग की प्रचलित प्रार्थनाओं, भजनों और ग़ज़लों का संकलन एक वरिष्ठ प्रेमी सत्संगी भाई का आत्म-तुष्टि का प्रयास है. उन्होंने इस पुस्तक का प्रकाशन, मुद्रण आदि कराके सत्संग को (दानस्वरूप) भेंट कर दिया है.

(31) **भजन मञ्जूषा** - पूर्व-प्रकाशित 'भजन संग्रह ' का ही संशोधित और परिवर्धित रूप है - 'भजन-मञ्जूषा'. ५१ महान भक्तों और संत सूफ़ियों द्वारा रचित भक्ति-रचनाएँ, जिनका पठन-श्रवण मात्र ही जिज्ञासु में आध्यात्मिकता स्फुरित कर देते हैं, इसमें संकलित किये गए हैं.

(32) **भावांजलि** - पूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी की जन्मशती पर प्रस्तुत इस उपयोगी स्मारिका में पूज्य गुरुदेव के विषय में सर्वांगीण सामग्री समाहित है.

(33-34) **प्रेम का सूर्य और प्रेम प्रसून** - इन दोनों पुस्तकों के लिए भाई साहब श्री कृष्ण मुरारी लाल जी और श्रीमती शांता बहन द्वारा पूज्य गुरुदेव व हमारे सत्संग की चिन्तनधारा और सिद्धांतों की तुलनात्मक विवेचना विविध धर्म-सम्प्रदायों के मूल तत्वों के साथ बड़ी सुन्दरता से की गयी है.

(**35) चक्रवेधी वंशावली (शजरा**)- यह छोटी पुस्तिका गागर में सागर जैसी अपने सिलसिले के बुज़ुर्गान को नमन-वन्दन करते हुए अपनी पूजा पद्धति हेतु आवश्यक मन्त्र-सूत्रों-प्रार्थनाओं का उपयोगी संकलन है.

(36)) **संत मत प्रवेशिका तथा (37) मार्फ़त की ग़ज़लें -** यह दोनों पुस्तकें इस वक्त छपी न होने से उपलब्ध नहीं हैं किन्तु **इनके डिजिटल संस्करण उपलब्ध हैं.**

इसके वावजूद संस्था हर समय नई-नई सदुपयोगी आध्यात्मिक सामग्री को, संतों की प्रेरक रचनाओं को मुद्रण-प्रकाशन हेतु सदैव तैयार रहती है.

उपरोक्त्त सभी पुस्तकों तथा सत्संग के अन्य प्रकाशनों के डिजिटल संस्करण इस वेबसाइट के "डिजिटल प्रकाशन " लिंक पर तथा फेसबुक ग्रुप पर उपलब्ध हैं ।

oooooooo